

ISBN : 978-93-88732-09-3



अण्णा भाऊ साठे : समताधिष्ठित समाज व्यवस्थेचे तत्त्वज्ञ

संपादक

विठ्ठल गुंडे

नवनाथ पवळे

दयाराम मस्के

लोकशाहीर अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील लोकभक्ती व राष्ट्रभक्ती

प्रा. नवनाथ जानोबा पवळे

कालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, शिरूर (का.)

प्रस्तावना :

अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील सामाजिक जाणिवांचा अभ्यास करताना त्यांच्या कालखंडात लेखन करणाऱ्यांच्या साहित्यापेक्षा अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्याचे विषय व आशय वेगळे असल्याचे आपणास दिसून येतात. अण्णाभाऊ हे १९४२ च्या 'चलंचाव' चळवळीच्या आगोमागे लिहू लागले होते. जग दुसऱ्या महायुद्धाच्या कचाट्यात सापडले होते. सामाजिक वातावरण भयग्रस्त होते. अण्णाभाऊ कामगार चळवळीशी व मार्क्सवादी विचारांशी जोडले गेले होते. त्यांनी वास्तवादी स्थितीचे चित्रण करणारा 'स्टॅलिनग्राड पोवाडा' लिहिला. अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्याच्या प्रेरणेचा विचार करतांना आपल्या असे लक्षात येते की, त्यांच्या साहित्याच्या प्रेरणा सुद्धा त्या काळातील रंजनवादी साहित्यिकांपेक्षा वेगळ्या आहेत. अण्णाभाऊंनी कामगार वर्ग समोर ठेऊन लेखन केले आहे. त्या कामगारांच्या जीवनातील संघर्ष त्यांनी आपल्या साहित्यात मांडला आहे. म्हणून त्यांच्या साहित्याचे विषय-आशय हे त्या कालखंडातील साहित्यिकांपेक्षा वेगळे आहेत.

अण्णाभाऊ साठे त्या काळातील कलावादी व जीवनवादी या वादात न राहता ते मात्र सरळ राष्ट्रीय लढ्याशी जोडले गेले. याबद्दल पद्मश्री नारायण सुर्वे म्हणतात "सर्व सामान्य माणसे मग तो कष्टकरी जनता असो किंवा ग्रामीण भागातील गरीब शेतकरी, त्यांनी आपल्या अवती-भोवतीचा वावरणारा समाज स्वतःच्या लेखनात परिपूर्णतेने उभा करण्याचा प्रयत्न केला. त्या समाजाच्या सुख-दुःखाशी, हितसंबंधाशी स्वतःची नाळ जोडून घेतली." आपल्या चिंतनाला वास्तव जीवनाची धार देणारे अण्णाभाऊ होते. नारायण सुर्वेच्या या विचारातून अण्णाभाऊंची लोकभक्ती प्रतीत होते. तसेच त्यांनी राष्ट्रीय लढ्याशी सुसंगत लेखन केल्यामुळे राष्ट्रभक्तीचेही प्रत्यांतर जे त्यांची पहिलीच कादंबरी 'वारणेच्या खोऱ्यात' ही १९४२ च्या ऑगस्ट क्रांतीच्या लढ्याला आधारित आहे. सातारा जिल्ह्यातील ऑगस्ट क्रांती उठावाशी स्वतः अण्णाभाऊ साठे सक्रीय सहभागी झाले होते. मंगला सारखी धरंदाज बाण्याच्या क्रांतिकारक स्त्रीला कोणत्या दाहक प्रसंगातून जावे लागले याचे भेदक चित्रण करणारी ही कादंबरी आहे. 'फकिरा' या कादंबरीतून फकिराने आपल्यावरील ऋण व्यवस्त करण्याबरोबरच इंग्रजांशी त्याने उभारलेल्या लढ्याचे दर्शन जगाला अण्णाभाऊंनी घडविले. यातून त्यांची जाणवत्या राष्ट्रभक्ती व मनोश लोकभक्तीचा संगम दिसून येतो. 'चित्रा' मधून वेश्या व्यवसाय, त्यातील ताण-तणाव, संघर्ष याचे चित्रण करून

WOMEN'S STATUS IN INDIAN SOCIETY



• EDITOR •

Dr. Vandana Bankar

• CO-EDITOR •

Pratibha Agharde

Women's Status in Indian Society

ISBN : 978-93-88158-03-9

© Bharat Jamdhade

Editor

Dr. Vandana Namdev Bankar

Co-Editor

Pratibha Agharde

Publisher

Bharat Jamdhade

Apoorv Publishing House,

B-2/15, Sunny Center, Pisadevi Road, Aurangabad (M.S.)

Mob. - 9049591747, 8177803216

Email - apoorvjamdhade@rediffmail.com

bharatjamdhade1976@gmail.com

Edition : 25 August 2018

DTP

Dr. Yajuwendra Wankar

Mob. 9763830016

Cover page

Shlok Design, Bharat Bazar, Aurangabad

Offset

Rudrayani Offset, MIDC, Cidco, Aurangabad.

Price : ₹ 475/-

Note : The views expressed by the authors in their research papers in this book are their own. The Editor/ publisher is not responsible for them. Author is responsible for all grammatical error Subject to Aurangabad (MS) Jurisdiction.

27.	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह साहित्य में अभिव्यक्ता स्त्री विमर्श.....	90
28.	प्रा.डॉ. पुरुषोत्तम म. मनगटे नारी शिक्षा का समाजपर प्रभाव.....	91
29.	वर्षा गुप्ता सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं की शिक्षा की भूमिका.....	92
30.	प्रा. डॉ. कुसुम राणा हिंदी साहित्य में 'कृष्णा-सौवर्ती' का स्थान.....	94
31.	प्रा.डॉ. उत्तम जाधव साठोत्तरी हिंदी मराठी महिला नाटको में चित्रित नारी की विशेषताएँ.....	96
32.	डॉ. बेवले ए. जे. "दलित स्त्री के जीवन का यथार्थ" (कौसल्या वैसंत्री को आत्मकथा दोहरा अभिराप के विशेष संदर्भ में).....	98
33.	प्रा. अनिल बाबुराव काळे हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श.....	102
34.	प्रा. वाघमारे के.एच. हिंदी साहित्य : महिला विमर्श के विशेष संदर्भ में.....	104
35.	शिंपले मारुती शिवाजी इक्कीसवीं सदी के हिन्दी कहानी साहित्य में स्त्री का स्थान.....	107
36.	डॉ. सरला दवडे मिडिया का आधुनिकीकरण और स्त्री विमर्श.....	109
37.	डॉ. रिना आर. सुरडकर महिलाओं की बदलती स्थितियाँ कल और आज.....	112
38.	वर्षा प्रल्हाद गायगोले हिंदी दलित आत्मकथाओं में स्त्री का यथार्थ रूप.....	114
39.	भाग्यश्री विलास कोष्टी महिला और समाज.....	116
40.	मंजुषा शरदकुमार माळवतकर स्त्रियाँच्या विकासातील राष्ट्रीय महिला आयोगाची भूमिका.....	118
41.	डॉ. मंदा माणिकराव नांदुरकर हिंदोळा गीतातून प्रतिबिंबित होणारे बंजारा स्त्रियांचे भावविश्व !.....	120
42.	रेखा लक्ष्मण काकडे, डॉ. आर.एच. म्हस्के आदिवासी समाजातील स्त्री शिक्षणातील अडचणी.....	122
43.	डॉ. उज्ज्वला प्र. भट्टगे भारतीय स्त्रियांचा दर्जा.....	123
44.	मुळशीराम चिमण खोटे, डॉ. यू. पी. भट्टगे आदिवासी समाजातील स्त्रियांचे शिक्षण.....	124
45.	प्रा. अ.बी. भावसार अव्वल इंग्रजी कालखंडातील निवडक वैचारिक गद्यांनून प्रकट होणारे स्त्री सबलीकरण.....	125
46.	प्रा.डॉ. अनिता परभतराव खंडागळे साहित्य चळवळीतील स्त्री भूमिका.....	126
47.	डॉ. कमलकिशोर बा. इंगोले व्यक्त गट संकल्पनेतील महिलांचे सक्षमीकरण: एक वास्तव्य.....	127
48.	डॉ. बाळासाहेब बाबुराव लिहीणार स्वातंत्र्योत्तर मराठी प्रामाण कथेतील स्त्रियांचे स्थान.....	128
49.	प्रा. कोल्हे टी.टी. कामगार स्त्रिया आणि आकाने.....	129



३४. हिंदी साहित्य : महिला विमर्श के विशेष संदर्भ में



प्रा. वाघमारे के.एच.

हिंदी विभाग, कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर (का.)

प्रस्तावना :-

भारतीय समाज में नारी की स्थिति विभिन्न कालों में और विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न प्रकार की रही है। मनुस्मृति में वर्णित है कि “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते तत्र देवता” अर्थात् जहाँ नारी को पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं, यह कह कर नारी को श्रद्धा की प्रति मूर्ति कहाँ तो गया, पर दूसरी ओर नारी नरकस्थ द्वारम् कहकर नारी को उपेक्षा भी हुई है। आरंभ से भारतीय नारी को कभी सम्मान मिला तो कभी पत्थर की भी सहना पड़ा। पुरातन काल से ही नारी अपनी प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करती रही है।

भारतीय समाज में अंधविश्वास और धर्मांधता फैली हुई थी। बाल विवाह, सती प्रथा, कुआछूत जैसी क्रूरतियाँ पनवती थी। स्त्री की हालत दयनीय थी। इसमें बदलाव लाने के लिए सामाजिक सौच में बदलाव लाना जरूरी था। उन्नीसवीं सदी का आरंभ आधुनिक भारतीय नवजागरण का प्रथम चरण है। उन्नीसवीं सदी से लेकर भारतीय महिलाओं की सामाजिक हैसियत में सुधार लाने का प्रयास होने लगा। स्त्री की स्थिति और प्रचलित मान्यताओं पर प्रश्न चिन्ह लगाती हुई सन १८८२ में मराठी में ताराबाई शिंदे ने “स्त्री पुरुष तुलना लिखी” थी। और दुनिया भर की स्त्री जाति की वास्तविक स्थिति पर विचार विमर्श करने का आव्हान किया था। ताराबाई शिंदे की यह रचना स्त्रियों की गुलाम मानसिकता से मुक्ति दिलाने की प्रेरणा प्रदान करती है। सामाजिक क्रांति का संदेश इसमें है। नवजागरण युग में समाज सुधार के क्षेत्र में अगुआ बनकर राजा राममोहनराय सामने आये। भारतीय समाज को जागरूक करने और उसमें सुधार लाने के लिए शिक्षा की अनिवार्यता पर उन्होंने जोर दिया। स्त्री शिक्षा की जरूरत उन्होंने महसूस की। उनमें महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, महादेव गोविंद रानडे, धोंडो केशव कर्वे, जैसे कई सुधारकों के प्रयत्न से भारतीय समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन संभव हुआ। महात्मा गांधीजी ने स्त्रियों को स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। गांधीजी ने राजनीतिक क्षेत्र से स्त्रियों को सक्रिय रूप में जोड़कर भारतीय सामाजिक जीवन में युगांतर

उपस्थित किया है। उन्होंने स्त्री समस्या को जन आन्दोलन का अंग बनाया जो उनका ऐतिहासिक प्रदेय माना जाएगा। आधुनिक भारतीय समाज के नवनिर्माण में डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का विशिष्ट योगदान रहा है। भारतीय संविधान के माध्यम से स्वातंत्र्य, समता और बन्धुभाव के सिद्धांतों को स्थापित किया। उन्होंने हिंदु कोड बिल पास कराकर भारतीय स्त्रियों को अपने सारे अधिकार दिलाये।

भारतीय समाज व्यवस्था ने स्त्री का दर्जा उँचा है या धर्मग्रंथों, पुराणों में बताया। एक समय था जब नारी चार दिक्कों में बंद थी। उसके पास अधिकार नहीं थे। पर अब यह सब परिवर्तीत हो गया है। नारी के भीतर एक ज्वलंत संघर्षशील शक्ति का उदय हुआ है। सदियों तक स्त्री-पुरुष प्रधान समाज के अत्याचारों की शिकार रही है। तमाम कठिनाईयों के बावजूद आज स्त्री का जीवन बदलता दिखाई देता है। आज नारी घर के बाहर निकल चुकी है। समाज में उसकी एक अलग प्रतिष्ठा है। पारिवारिक जीवन के साथ-साथ उसका सामाजिक जीवन भी विकसित हो रहा है। वैदिक युग में उसे शक्ति, ज्ञान एवं संस्कृति के प्रतीक के रूप में माना गया। किंतु मध्ययुग में स्त्री को ज्योति में अवनति दिखाई देती है। पर अंग्रेजों के आगमन के बाद ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, तथा विभिन्न धार्मिक सामाजिक आंदोलन के कारण आज आधुनिक युग में स्त्री की स्थिति में कुछ सुधार आ रहा है।

नारी पर व्यापक रूप से सभी भाषाओं में लिखा गया और मौलिक विचारों की अभिव्यक्ति होती रही। हिंदी के भी अनेक साहित्यकारों ने समय-समय पर लिखा है। १९३५ के पश्चात साहित्य के क्षेत्र में पाश्चिमात्य संकल्पना “फेमिनिज्म” का प्रभाव दिखाई देता है, जिसके परिणामस्वरूप आगे स्त्री के केंद्र में रखकर स्त्रीवादी साहित्य को निर्मित होने लगा। स्त्री विमर्श में पहली बार यह जाना गया कि स्त्रियों के भी अपने कुछ प्रश्न हैं, समस्याएँ हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इसमें कहीं परिवर्तन दिखाई देता है। हिंदी कथा साहित्य में साठ के दशक से महिला लेखिकाओं का अत्याधिक संख्या में एकता उभरकर आना इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि साहित्य



Scanned by CamScanner

ISBN : 978-93-83672-73-8



**Satyashodhak Anna Bhau Sathe :
A Humanist Philosopher**

Editor

Dr. Vishnu Patil
Dr. Mahesh Waghmare
Dr. Vasant Gaikwad

Satyashodhak Anna Bhau Sathe: A Study of Constitutional Subjects
Dr. Jadhav V S

Head, Dep. of Public Administration, Kalikadevi College, Shirur Ka. Dist. Beed

Introduction:

Annabhau Sathe is a renowned humanitarian writer from Maharashtra, India. Though, he was born in oppressed community. (The community has been identified by the Indian government as a scheduled caste.) He could not receive the formal education due to Poverty and other social system. His brother Shankarbhai recounts in his biography of Sathe, titled *Majhe Bhau Annabhau* that 'the family members worked as laborers at the site of Kalyan tunnel when it was being constructed.' (<http://www.rashtrivamulniwasisingh.com>) Despite lack of formal education, he contributed a lot to the literature. Anna Bhau Sathe has written 'directly from his experiences in life, and his novels celebrate the fighting spirit in their characters who work against all odds in life.' (Ibid) The aim of this paper is to focus on constitutional subjects in the writing of Anna Bhau.

Social Reformer:

Being as social reformer Anna Bhau Sathe worked for Poor oppressed and marginalized people. He was an important mobilizer in the *Samyukta Maharashtra movement*. He used the medium of *powade* to great effect in that movement. Annabhau Sathe decided to bring awareness among the masses against Brahminism which imposed untouchability and virtually compelled the deprived lot to take recourse to criminal and filthy occupations against the British Government which imposed the Criminal Tribes Act and subjected his community to harassment and against the forces of feudalism and capitalism which exploited his community and made life unbearable. He used his art and poetic genius in educating the masses. After spending 22 years in a Ghatkopar slum, he moved to a modest house in Goregaon which the state government provided him in 1968, one year before he died.

A Study of Constitutional Subjects:

Satyashodhak Annabhau Sathe, an eminent personality, imprinted his mark on socio political, cultural and world literature as a social reformer and writer. Despite of lack of formal education due to penury he penned 32 novels, 11 short stories, 15 ballads and 1 travelogue that reflects experiential world of depressed common people. Most of his work has been translated into Indian and foreign languages. Though born in marginalized community, his work appears as a

ISBN : 978-93-83672-77-6



सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे :
बहुजनांचे कैवारी

संपादक

डॉ. मनिषा पाटील
अमोल महापुरे
कृष्णा आगे

१५.	अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील अर्थिक विचार प्रा.डॉ. पंडीत एम. मुळे	८६
१६.	अण्णाभाऊ साठे : लोकशाहीर ते शिवशाहीर प्रा. विठ्ठल गुंडे	८८
१७.	अण्णाभाऊंच्या लेखणीतील आंबेडकरी विचार प्रा. अॅड. बाळासाहेब भिवराव जाधव	९०
१८.	अण्णाभाऊ साठे आणि दलित समस्या डॉ.राम प्र.ताटे, प्रा.अर्चना वाघमारे	९४
१९.	अण्णा भाऊ साठे : बांधिलकी जपणारा लेखक अरविंद आसाराम भराडे	९८
२०.	अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील आंबेडकरी विचार प्रा. डॉ. नरसिंग पिराजी कुडकेकर	१०१
२१.	अण्णाभाऊ साठे : मार्क्सवादी विचारवंत ज्योती शरद इंगळे	१०७
२२.	अण्णा भाऊ साठे के लोकनाट्य में सामाजिक चेतना दीपाली विश्वनाथ सूर्यवंशी	१११
२३.	पर्यटन आणि अण्णाभाऊ : एक विश्लेषण डॉ. सावते संजय रावसाहेब	११५
२४.	अण्णाभाऊ साठे यांचे कार्य, साहित्य आणि चळवळ प्रा. डॉ. विश्वास शामराव कंधारे	१२३
२५.	अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील समाज वास्तव प्रा. डॉ.नरवाडे भास्कर विठ्ठलराव	१२७
२६.	अण्णाभाऊ साठे यांचे शाहिरी वगनाट्य करुणा अच्युतराव गायकवाड	१३३
२७.	अण्णा भाऊ साठे यांच्या निवडक वगनाट्यातील समाजप्रबोधन सविता रावण सिरसट	१३८
२८.	'वारणेच्या खो-यात' मधील मानवमुक्तीची धडपड प्रा. मधुकर जाधव	१४३
२९.	'वारणेच्या खो-यात' मधील मानवमुक्तीची धडपड प्रा. मधुकर जाधव	१४६

अण्णाभाऊ साठे : लोकशाहीर ते शिवशाहीर

प्रा. विठ्ठल गुंडे

इतिहास विभाग प्रमुख, कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर (का.)

प्रस्तावना :

तुकाराम म्हणजेच अण्णाभाऊ साठे एक प्रतिभावंत लेखक, कवी, कथाकार तसेच मानवी मुल्याबद्दल आग्रही भुमिका घेणारे एक व्यक्तीमत्व केवळ मराठी वाडं.मय विश्वाचा भाग नाही तर संस्कृतीचा सांस्कृतिक संचिताचा अविभाज्य घटक बनले आहे. कोणत्याही प्रकारचे औपचारिक शिक्षण न घेता जगाच्या पाठीवर साहित्यिक म्हणून मोठ्या आदराने अण्णाभाऊंचे नाव घेतले जाते. समाजाच्या शाळेतील आलेल्या अनुभवाच्या जोरावर अण्णाभाऊंनी शिक्षणाचे धडे गिरवले व रस्त्यावरील परीसर पिक्यरचे पोस्टर पाहत पाहत अक्षर ओळख झाली. पुढे याच अक्षर ओळखीतून अण्णाभाऊंनी विपूल प्रमाणात लेखन केले आहे. यामध्ये ३५ कादंबऱ्या, त्यातील फकिरा कादंबरीला महाराष्ट्र शासनाचा १९६१ चा राज्य सरकारचा सन्मा प्राप्त झालेला आहे. अण्णाभाऊंचे एकूण १५ लघुकथा संग्रह प्रकाशित आहेत. तसेच मराठी साहित्यातील लोकवाड.मय, कथा, नाट्य, लोकनाट्य, चित्रपट, पोवाडे, लावण्या वग, गवळण, प्रवासवर्णन असे सर्वच प्रकार अण्णाभाऊंनी सशक्त व समृद्ध केले आहेत.

लोकशाहीर ते शिवशाहीर:

तमाशा या कलेला लोकनाटयाची प्रतिष्ठा मिळवून देणारा पहिला साहित्यिक म्हणून अण्णाभाऊंचे नाव घेतले जाते. संयुक्त महाराष्ट्र चळवळ, गोवामुक्ती संग्राम तसेच स्वातंत्र्याचा संग्राम या प्रश्ना विषयी अण्णाभाऊंनी स्वातंत्र्य पूर्व आणि स्वातंत्र्यानंतरच्या काळात मोठी जागृती करण्याचे काम अण्णाभाऊंनी केले आहे. या चळवळीला भक्कम पणे साथ देण्याचे काम अण्णाभाऊंच्या शाहीरीने केले आहे. या शाहीरी लेखनाला खऱ्या अर्थाने १९४० मध्ये सुरुवात झाली. जी कम्युनिस्ट चळवळीच्या प्रभावातून प्रवास करत होती ती पुढे जावून बाबासाहेब आणि छत्रपती शिवाजी महाराजांचे गोडवे गाऊ लागली. शाहीरीच्या संदर्भात डॉ. कृष्णा किरवले लिहतात, 'रंजनातून लोकजागृती करणे हा मराठी शाहीराचा उद्देश असला तरी अण्णाभाऊंनी सामाजिक आणि राजकीय जिवणातील परिवर्तनाचा नवा विचार मांडला आहे.' (किरवले, १९९६:९६) अण्णाभाऊंनी कामगार, कष्टकरी वर्ग, दिन-

दुबळा, गरीबाच्या बाजू मांडणाऱ्या, काम अविरतपणे केले. या संदर्भातील त्यांचे कामगार स्तवन खुप महत्वाचे वाटते.

शाहीर अण्णाभाऊ साठे रशियाचा प्रवास करून आल्यावर जागतिक पातळीवरील कामगार चळवळीचा विवेचनात्मक अभ्यास केला होता. याची साक्ष त्यांच्या स्टॅलिनग्रॅडचा पोवाडा, चिनीजनांची मुक्ती सेना, आणि बर्लिनचा पोवाडा या जागतिक घटनावर आधारित असलेल्या पोवाड्यातून मिळते. अण्णाभाऊंचा शहिदांना कम्युनिस्ट विचार सरणी किंवा कामगार चळवळी एवढ्यावर थांबते असे नाही तर भारतीय स्वातंत्र्याच्या चळवळीचा इतिहासही तिच्यात प्रभाविपणे प्रदर्शित झालेला दिसतो. या संदर्भातील अण्णाभाऊंचे लेखन न्हदयाला पिळ पाडणारे आहे ते असे,

पंजाब झाला बेभाण ! मृत्यूचे चाले थैमान ॥ शिख, हिंदू, मुसलामन ! सुडान
धुंद होऊन ॥ वेऱ्याला पार विसरुन ! आपसात पाडीली खुण ॥

(१९९६ : १०२)

१९४४ला अण्णाभाऊंनी लाल बावटा पथक स्थापना करून अवघा महाराष्ट्र पिंजून काढला.

समारोप :

मार्क्स, फुले, शाहू आबंडकरांना अभिप्रेत असणारा समाज निर्माण करण्याच्या उद्देशाने प्रेरित होऊन अण्णाभाऊंनी महाराष्ट्र नाही तर जगाच्या पाठीवर शाहिराच्या माध्यमातून जातिव्यवथा वर्णव्यवस्था व वर्णव्यवस्थेत पिळला गेल्याल्या वर्गांना जाग करण्याचे काम आयुष्य भर अण्णाभाऊ भाऊ करतांना दिसतात. यामध्ये सर्वात महत्वाचे अण्णाभाऊंचे काम अण्णाभाऊंनी रशियात केले आहे ते म्हणजे कुळवाडी भुषन, समतेचा राजा छत्रपणी शिवाजी महाराजांचे गौरव गीत पोवाडाच्या माध्यमातून शिवरायांच्या चरित्र गायले. जे पुढे रशियन भाषेत भाषांतरात होऊन सर्व रशियामध्ये प्रसारित करण्यात आले. यामध्ये अण्णाभाऊंचे गण तेवढेच महत्वाचे वाटते.

प्रथम मायभूच्या चरणा,
छत्रपती शिवबा चरणा ॥
स्मरति गातो । कवणा ।

संदर्भ :

- १) किरवले, कृष्णा डॉ. दलित चळवळ आणि साहित्य, मॅजिक प्रकाशन
:१९९६:९७
- २) किता, पृ.क्रं.१०२

ISBN : 978-83-83672-77-8



सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे :
बहुजनांचे कैवारी

संपादक

डॉ. मनिषा पाटील
अमोल महापुरे
कृष्णा आगे

पर्यटन आणि अण्णाभाऊ : एक विश्लेषण

डॉ. सादने संजय रावसाहेब

पुणेचे विभाग प्रमुख, कानिबदली कला, कानिबदली व विज्ञान शास्त्रविद्यालय, शिरूर (क) नि. कोड.

सारांश :-

प्रवास व पर्यटन या दोन गोष्टी एकमेकांपासून वेगळ्या करता येत नाहीत. तेव्हा पर्यटन प्रवासाची प्रवास आत्म्या याची सुरुवात आणि संपूर्णता उपनिवेशवादी व विविध स्थाळांचा सोबत येण्याची विज्ञान, कुतूहल यातून होते. सुरुवातीला प्रांतिक परिस्थितीकडून अनुसृत परीक्षणीकडे प्रवास होतो. भारतातील एक रतिभानव अतिशयिक भ्रमण लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे या या प्रकारातून व भारताच्याहीरही परिघात आहेत. अण्णा भाऊंनी विविध वादग्रस्त प्रकाशनां नीतिवत्त स्वतःच लेखन केले आहे. कथा, कादंब-या लिहिण्या याच्या निमित्ताने त्यांनी लिहिले. त्यांच्या पोवाडे लिहिले. ही पुष्पी शोभाच्या मस्तकद्वार तरलेली वसुन ती दलिततांच्या कथा-यांच्या लक्ष्मणावर तरलेली आहे. हे त्यांच्या सभ्य लेखनार्थ अंतर्गत होते.

विजयंता :-

प्रवास, पर्यटन, प्राकृतिक घटक, पर्यटक. तसेच भारतातील प्रवास आणि रतिभानवीन प्रवास.

प्रस्तावना :-

पर्यटक कोणास म्हणजे Who is Tourist सर्व साधारणपणे प्रवास करणा-या व्यक्ती किंवा व्यक्तीसमूहाला आपण पर्यटक या नावाने संबोधतो. १९२७ साली राष्ट्रसंघाच्या समितीने व १९६२ साली इटलीची राजधानी रोम येथील युनोच्या संघार व पर्यटन समितीत पर्यटकाच्या व्याख्या निश्चित करण्यात आल्या. कारण पर्यटकाला विहालीची प्रत्येक व्यक्ती ही प्रवासी असते. परंतु प्रत्येक प्रवासी हा पर्यटक असेलच असे नाही. अण्णा भाऊंनी आपल्या पूर्ण आयुष्यात सांगली जिल्ह्यातील काटेगाव शहराच्या छोट्या छोट्या घासुन त्याचा भुमई ते रतिभानवीन प्रवास केलेला आपल्याला पहावयास मिळतो. भ्रमण व एक वेगळा विषय या सोबत निबंधाच्या माध्यमातून आपल्या समोर पाहण्याचा प्रयास करत आहे.

पर्यटनाच्या व्याख्या :-

१. हर्मन - एखाद्या अग्रिधीत देशात किंवा शहरात निदेशी व्यक्तीचे आगमन, मुक्ताग, आनुवागुच्या स्थाळांचा भेटी देऊन पुन्हा स्वतःही परत जाणे म्हणजे पर्यटन होय.

ISBN : 978-93-83872-77-8



सत्यशोधक अण्णा भाऊ साठे :
बहुजनांचे कैवारी

संपादक

डॉ. मनिषा पाटील
अमोल महापुरे
कृष्णा आगे

अण्णाभाऊ साठे यांच्या साहित्यातील अर्थिक विचार

प्रा.डॉ. पंडीत एम. मुळे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर (का.)

प्रस्तावना :

अण्णाभाऊ साठे हे निळ्या आकाशातील तळपणारा लाल तारा आहे. अशा लाल तार्याचा जन्म सांगली जिल्ह्यातील वाटेगावात १९२० रोजी झाला. आणि एका क्रांती सुर्याचा उदय झाला. १९२० चा काळा म्हणजे ब्रिटीश राजवटीचा काळ होता. १ ऑगस्ट १९२० च्या सकाळी फकिरा खाजिना लुटून आला होता या खजिन्यातील सोन्याच्या तुरीच्या माध्यमातून अण्णाभाऊंनी संघर्षाची पहिली गुट्टी घेतली होती. परीणामी अण्णाभाऊ एक क्रांतीकारी, आणि विद्रोही व्यक्तीमत्व म्हणून उदयास आले. घरी एका वेळेच्या भाकरीची सोय नसतांना अण्णा भाऊ समाज आणि समाजाची कैफीयत मांडत अवघा महाराष्ट्र शाहीराला घेऊन समाजाचे प्रबोधन करत होते. १९४१ मध्ये लाल बावटा कला पथकाची स्थापना करून अण्णाभाऊ, द.ना. गव्हाणकर व शेख अमरशेख संपूर्ण महाराष्ट्र पिंजून काढताना दिसतात. मुंबईच्या संदर्भात लिहितांना अण्णाभाऊ म्हणतात,

मुंबई नगरी, बडीबाका

जशी रावणाची लंका, वाजतोय डंका चौहुमुलकी ।

अण्णाभाऊ वयाच्या चौदाव्या वर्षी मुंबईला आले आणि मार्क्सवादाकडे वळलेले आपल्याला दिसतात. मुंबईला आल्यावर गरीबी, दुःख, दारिद्र्य, शोषण, पिळवणुक, या सर्व बाबी अण्णाभाऊंनी जवळून अनुभवल्या होत्या. त्यामुळे त्यांचे संवेदनशील मन त्यांना शांत बसू देत नव्हते. अण्णाभाऊ नव्या विचाराने प्रेरित झाले होते. जुन्या रुढी-परंपराची त्यांना किळस येत होती. त्यातच जात, धर्म, वर्ग भेद अधिक बळकट होतांना दिसत होता. गरीब, शेतकरी, दलित श्रीमंत होत होता. या सर्वांचे मुळ अर्थिक व्यवहार हा आहे हे अण्णाभाऊंनी जाणून घेऊन आपल्या साहित्याला अर्थिक व्यवहार व समाज केंद्रबिंदु मानून दिन-दलित, गरीब यांच्या जिवणाचे चित्रण केले. रुढी-परंपरा आणि काला यांच्या मार्फत ज्या समाजाचे अर्थिक व्यवहार चालू होते तो समाज अण्णा भाऊंच्या साहित्याचा विषय ठरला होता. ही अर्थिकता आणि सामाजिकता एका तत्वज्ञानाचा भाग बनते.

18-19,

Childhood

Issues and Challenges



— Editor —

Dr. Aparna Ashtaputre-Sisode

ISBN NO. 978-9387377-08-0

CHILDHOOD ISSUES AND CHALLENGES |

Editor - Dr. Aparna Ashtaputre – Sisode

(c) All Rights Reserved

Publication :

**Mahatma Gandhi Education & Welfare Society, Parbhani &
Shodhni Publication, Aurangabad.**

Contact No. : 9850322334.

Printer :

Cover Page : Ravi Printers, Aurangabad.

Page Setup : Sankalp Digital Graphics, Aurangabad.

First Edition : Oct. 2019

Price : Rs. 350/-

50	लैंगिकशिक्षण: मुलांची गरज आणि महत्त्व	श्रीमती. संध्यामित्रा मच्छिंद्र बनकर	306
51	पालकत्व आणि बालकांच्या वर्तन विषयक समस्या	सहा.प्रा.सौ.सय्यद अफरोज अहेमद	310
52	उच्चारामक शिक्षणाचे उपयोग	अनुराधा देवळाणकर	313
53	मुलांच्या शिकण्याविषयी समस्यांमध्ये समुपदेशकाची भूमिका	विजयेंद्र वासुदेव पालवे. शबाना बाबुलाल तडवी	329

पालकत्व आणि बालकांच्या वर्तन विषयक समस्या

सहा. प्रा. सौ. सय्यद अफरोज अहेमद

प्रस्तावना :-

“संवाद आणि वाद यात फार धोडा फरक असतो, वाद कोण योग्य आहे हे शोधण्यासाठी असतो तर संवाद काय योग्य आहे ते शोधण्यासाठी असतो” मुल ज्या वातावरणात वाढत त्या नुसारच त्यांचे व्यक्तिमत्व घडत असत. मुलांचे व्यक्तिमत्व फुलविण्यासाठी त्यांच्या सर्वांगीण विकास करण्यासाठी जाणीवपूर्वक प्रयत्न करणे गरजेचे आहे. मुलांच्या समस्या कौशल्याने सोडवून त्यांना प्रोत्साहित करणे कौशल्याचे काम आहे. मुलांकडून चुका झाल्या की, त्या पुन्हा होवू नये हे त्यांना समजावून सांगणे त्यांचा आत्मविश्वास वाढवणे याची बागरक पालक काळजी घेतात. मुलांचे मित्रमैत्रीणी बनाव आणि मुलांना घडवा त्यासाठीच पालकांनी काही खास काळजी घ्यायला हवी.

बालपण - मुलांच्या विकासाचा पाया :-

लहान मुलं फुलासारखी असतात, त्यांच्या चेहऱ्यावर निरागसपणा पाहिला की या व्यवहारी जगात वावरणाऱ्या तुम्हा-आम्हा वाळवंटात कुठे तरी मनाला दिलासा देणारी हिरवळ असल्यासारखे वाटते. म्हणतात ना ‘लहानपणा देगा देवा’ हे काही खोट नाही बालपण रम्य असते; पण भावी आयुष्याच्या जडण घडणीसाठी ते मैलाचा दगड ठरते. याच बालपणातील सुखातीची काही वर्षे त्या चिमुकल्यांना बागणुकीच्या व व्यक्तिमत्त्वाच्या विकासासाठी महत्वाची असतात. अगदी जन्मल्यापासूनच मुले शिकायला लागतात, वयाच्या दोन वर्षां पर्यंत मानवी मेंदुची बहुतांश वाढ पुर्ण झालेली असते, आणि नेमक्या याच पायरीवर जर शिक्षणाची अन सुसंस्काराची पेरणी झाली तर मुलांच्या आनंदी वृत्तीचा सद्गर्तनाचा व समतोलपणाचा विकास साधण्यास उपयुक्त ठरेल.

बालपणापासून उत्तम शिक्षणाची सुरवात :-

घरातच व शक्य तितक्या लहान वयापासून पालकांनी मुलांच्या उत्तम शालेय शिक्षणाचा पाया घातला पाहिजे. मुलांच्या आयुष्याच्या सुरवातीच्या वर्षांमध्येच पालक व त्यांच्या बराचशी शालेय शिक्षणाचा पाया पक्का करण्यास मदत करू शकतात. जन्मापासून ज्या मुलाला प्रेम, सुरक्षा व कौतुक मिळते त्याला शिकण्याची इच्छा व विश्वास प्राप्त होतो. शक्य असेल आणि धोक्याचे नसेल तेव्हा मुलांना त्यांचे निर्णय स्वतःच घेऊ द्यावेत स्वतःच्या यश अपयशातून मुले सर्वात छान शिकतात.

मुलांसोबत खेळणे गरजेचे :-

मुलांच्या विकासात खेळाचे स्थान महत्वाचे असते खेळण्याने मुलांच्या आनंदी वृत्तीला सद्गर्तनाचा व समतोलपणाचा विकास होतो. खेळाव्दारे मुलांना मानसिक व शारीरिक व्यायाम होतो आणि ते जगाविषयी मुलभूत धडे जाणून घेतात. यासाठी पालकाकडून मुलांना प्रोत्साहनाची गरज असते. साध्या-साध्या वस्तूंनी खेळत आणि मोठ्याचे अनुकरण करत मुले आपल्या भोवतालच्या जगासंबंधीचे ज्ञान अवगत करत असतात. चेंडू हा खेळण्यासाठीच असतो, पण हा असतोच कशामुळे, गोलच का असतो? अरमा अनेक प्रश्नांचा भडोमार ही चिमुकली करताना आपण अनुभवले आहे. त्रासिक मुद्देनो त्रोटक उत्तरे देउन आपण त्यांच्या प्रश्नांचा ससेमिरा टाकलाही असेल पण या प्रश्नांच्या उत्तरामुळे त्यांची भाषा, विचार व योजकता यांचा विकास होतो. या शोधात्मक खेळातून मुलांची चिकित्सा, जिज्ञासा, आणि संशोधनाकडे असलेला कल लक्षात येतो. पालकांनी मुलांच्या खेळाचा ताबा घेऊ नये, त्यांच्या खेळावर बारीक लक्ष्य ठेवावे आणि मुलांच्या कल्पकता व ईच्छेनुसार खेळावे.

मुलांना पंतगात्रमागे भरती घेऊ द्या :-

निसर्गात जसे वैविध्य आहे तसेच माणसातही आहे. प्रत्येक मुलांत कोणता ना कोणता चांगला गुण असतो गरज असते ती फक्त तो गुण ओळखण्याची मुले सुसंस्कारीत सद्गुणी यशस्वी, रोग्यदायी करण्याच्या दृष्टीकोनातून पालकांनी प्रयत्न करावेत. तुमच्या मुलांमधील कल्पना शोधून त्याचा

विकास करा. मुलांच्या न संपण्याचा प्रश्नमालिकेला जर उत्तर देत रहा. त्यांच्यातल्या मुलांचा शोध घेण्याच्या मुलीला उत्सुकतेने प्रश्नचक्रं घा. त्यांना खेळणी, मातीकाम, रंगकाम घोडे साहस धाडस करू या, त्यामुळे तो स्वावलंबी नवेल पातककटून मुलांना कौतुक प्रोत्साहन व प्रेक्षणी गाव जवळी त्याला प्रयोगासाठी स्वातंत्र्य घा त्यांच्यावर विश्वास ठाका, मुलांचे अतिसाहसाळ, अति सुचिंतता, नैपथ्य अतिप्रेम अशी उत्तरे बघत ठाका.

मुलांना व्यायाम, योगासने शिकवा :

ताण राग दुःकरणेचे प्रभावी माध्यम म्हणजे योग. मुलांना श्मनात्मक आसने, नियमितपणे करण्यात त्रेलित करावे. त्यामुळे, मानसिक व शारीरिक ताण दुःकरणेचे सामर्थ्य प्राप्त होते. नियमित योगाभ्यास केल्यास बुध्दी अत्यंत कुन्याप होते. शारीरिक मानसिक घड्या जावून घनवी एकताता वाढते. शरीराचे वजन समतोल राहते तसेच लहपणा, मलाबरोपासारखे रोग दुः होतात, पचनशक्ती वाढते भुक लागते शोध वेते व स्मरणशक्ती वाढते.

मुलांना छंद जोपासण्याची सवय लावा :

छंद हा आपल्या व्यक्तिमत्त्वाच्या जडणपडणीतील एक महत्वाचा भाग आहे. काही छंद सर्जनशील असतात तर काही छंदामुळे ज्ञानस भर पडते. छंद हे स्वतःला आनंदी करतात तसेच आपल्या भावी जीवनात आपल्यालाच उपयुक्त ठरतात. छंदाच्या अभ्यासतून बरान्नी जीवनाची गाथा तयार होते. लहानपणीच्या संस्कारांम वयात चांगले छंद जोपासण्याचा अवतंत चांगला परिणाम मुलांच्या भावी आयुष्यावर होत असतो.

मार्क्स वाढवण्या करिता दबाव नको :-

पालकांना आपल्या मुलांच्या तडीस नेण्याच्या कृतीविषयी म्हणजेच त्यांच्या असणारी धिंता ही नकळतपणे त्यांच्या वर्तवणुकीतून दिसुने ये. मुलांना साखर अभ्यासाला बसवण त्यांच्या अभ्यासा विषयी त्यांच्या मिवाकडे विचारपुस करण, सरांच्या गाडीभेटी घेण यासारख्या खटाटोपीतून पालक मुलांना चांगले मार्क्स मिळवलेत असा दबाव आणत असतात. खर तर किती वेळ अभ्यास केला किंवा अभ्यासाची पध्दत कशी आहे यापेक्षा अधिक महत्वाची असते ती अभ्यासाची गुणवत्ता. मुलांना त्यांच्या अभ्यासा बाबतचे निर्णय स्वतः घेण्यास प्रवृत्त करावला शिकवायला हवे.

मुलांना फास्टफुडचा अतिरेक नको :-

मुलांना फास्टफुड मुळे भूक मंदावणे व त्याचा आरोग्यावर परिणाम होणे हे बहुतांश प्रमाणात दिसते. चॉकलेट, मैदा व त्यापासून बनवलेले पदार्थ, तसेच मॅगी, वेफर्स, कुरकुरे, आदी बहुतांश अनेक उत्पादने त्याची पॅकिंग व त्यातील निषणारी खेळणी यामुळे लहान मुलांच्या आकर्षणाचा केंद्र बनला आहे. चॉकलेटच्या अतिसेवनाने दातांचे अनेक आजार होतात. यातूनच अती प्रमाणात साखर, तसेच खारब तेलात तळलेले पदार्थ या मुळे मुलांना पोटाच्या अनेक रोगांना सामोरे जावे लागत आहे. त्यामुळे त्यांची नैसर्गिक व शारीरिक वाढ व विकास व्यवस्थित होत नाही, त्यामुळे मुल कुपोषणाकडे वाटचाल करू लागते. टी.व्ही., मोबाईल, प्रसारमाध्यमाचा अतिरेक नको :-

कुटूंबाच्या संवादाची जागा आता टी.व्ही, मोबाईल व प्रसारमाध्यमानी घेतली आहे. टी.व्ही, मोबाईल बंद करून मुलांनामैदानी खेळात व पुस्तकाची गोडी निर्माण करणे अवतंत महत्वाचे आहे. टीव्ही पाहताना एकच जागी बसल्यामुळे शरीराची हालचाल होत नाही त्यामुळे डोक्याचे आजार व लहपणा वाढून झोपेतर परिणाम होतो. व्यवस्थित खाणे, पिणे तसेच विश्रांती चा शारीरिक आणि मानसिक स्वास्थाशी फार जवळचा संबंध आहे. प्रसारमाध्यमावर दाखविल्या जाणाऱ्या हाणामारी, खून, बलात्कार, हिंसक दृश्य बघून मुलांची कोवळी मन संवेदनहीन होतात सतत च्या टीव्ही पाहण्याने बुध्दिचातुर्ष्य नष्ट होते व निर्णय क्षमता नष्ट होते.

सारांश :-

पालकत्वही सर्वात महत्वाची जबाबदारी आहे. पालकत्व म्हणजे आपल्या मुलांचे हित जोपासण्यासाठी केलेला खटाटोप ही जबाबदारी आपण जर कर्तव्यभावनेने पार पाडली तर आपली, मुल निरोगी होतील आणि आरोग्य संपन्न भारत घडवतील सुखी समाधानी कौटुंबिक वातावरण बालकाच्या काडीस पुक उठते. त्यामुळे पालक बालक संबंध सुधारण्यास मदत होते. बालकांचे संगोपन करताना पालकांनी आपली जबाबदारी समजावून घेतल्यास



Dr. Babasaheb Ambedkar
Marathwada University
Aurangabad

DEPARTMENT OF
PSYCHOLOGY



ONE DAY NATIONAL LEVEL
CONFERENCE ON

Childhood
Issues and Challenges



5th Oct
19

Organized by

Department of Psychology in collaboration with Vihang Special School

Certificate

This is to certify that Dr. / Mr / Ms. Sayyed Afroz Ahmed
of Dept of Home Science, Kalika Devi Mahavidyalay, Shivur, Kasar, Beed.
has attended / participated as resource person / chaired a session / presented a paper पालकत्व आणि बालकांच्या
वर्तनविषयक समस्या in the National Level Conference on "CHILDHOOD - ISSUES AND
CHALLENGES" held on 5 th October 2019.

Chairperson of
Technical Session

Dr. Aparna Ashtaputre-Sisode
Convenor

बालकाला भावनिक सुस्थितता वाटते. प्रेम सहकार्य, सहानुभूती, यामुळे बालकाचे व्यक्तिमत्व चांगले बनण्यास मदत मिळते. त्या दृष्टीने बालक-बालक संबंध अतिशय महत्त्वपूर्ण ठरतात. अन्यथा बालका मध्ये अनेक वर्तन, समस्या निर्माण होतात. बालकांचा सर्वांगीण विकास साधायचा असेल तर बालका बाहेर अगदी शेवटच्या क्षासापर्यंत प्रयत्नाची पराकाष्ठा करावी लागेल, ही गोष्ट ध्यानात ठेवून निकोप विद्दी उमलवण्यासाठी कलात्मक लागणत्या प्रयत्नांचा आरंभ करूयात.

संदर्भ ग्रंथसूची :-

१. मानव विकास : सौ. सीमा कांडलकर
२. बाल विकास : डॉ. नलिनी बराडपांडे
३. बालसंगोपन आणि बाल विकास : परावतलव संस्था म.मु.बिद्यापीठ, नाशिक
४. आई मला अस वाढव : डॉ. संजय ज्ञानवळे
५. प्रिय आई-बाबा : डॉ. सुशील सुर्वे

- सहा.प्रा.सौ.सय्यद अफरोज अहेमद
गृहशास्त्र विभाग, कालिकादेवी महाविद्यालय
शिरूर(कासार)ता.शिरूर(का.) जि.बीड.

018/19
25/08/18



HOME SCIENCE & WOMEN EMPOWERMENT



◦ EDITOR ◦
Dr. Vandana Bankar

◦ CO-EDITOR ◦
Pratibha Agharde

Home Science and Empowerment

ISBN : 978-93-88158-01-5

© Bharat Jamdhade

Editor
Dr. Vandana Namdev Bankar

Co-Editor
Pratibha Agharde

Publisher
Bharat Jamdhade
Apoorv Publishing House,
B-2/15, Sunny Center, Pisadevi Road, Aurangabad (M.S.)
Mob. - 9049591747, 8177803216
Email - apoorvjamdhade@rediffmail.com
bharatjamdhade1976@gmail.com

Edition : 25 August 2018

DTP
Dr. Yajuwendra Wankar
Mob. 9763830016

Cover page
Shlok Design, Bharat Bazar, Aurangabad

Offset
Rudrayani Offset, MIDC, Cidco, Aurangabad.

Price : ₹ 480/-

Note : The views expressed by the authors in their research papers in this book are their own. The Editor/ publisher is not responsible for them. Author is responsible for all grammatical error Subject to Aurangabad (MS) Jurisdiction.

84	४४. डॉ.सौ. गीता रा. आंबटकरस्त्री सक्षमीकरणातून देश सुदृढीकरण.....	१५६
91	४५. सुनंदा शरद पगार भारतीय संविधान : महिलांचे अधिकार व कायदे.....	१५९
95	४६. डॉ. वंदना बनकर बालसंगोपन : नोकरदार महिलांसमोरील एक आव्हान.....	१६१
39	४७. अश्विनी संतोष बळसाणे, प्रा.डॉ. माया खंडाट महिलांचे आरोग्य व पोषण दजा.....	१६५
102	४८. डॉ. प्रमिला भगत महिला सक्षमीकरण आणि शासकीय योजना.....	१६८
105	४९. प्रा. सौ. मिनीक्षी पी. बोरीवाले समताले आहाराचे महत्त्व.....	१७२
107	५०. डॉ.सुवर्णा प्रशांत तालखेडकर स्त्री अबला नाही तिचे कार्यक्षेत्र ओळखा.....	१७४
109	५१. प्रा.डॉ. जोत्सना संभाजी पुसाटे सामाजिक, शैक्षणिक परिवर्तने आणि 'स्त्रि' गुलाम.....	१७८
115	५२. प्रा. डॉ. कल्पना पंडीतराव कोरडे महिला आणि मानवी हक्क.....	१८१
19	५३. प्रा. डॉ. सरिता देशमुख महिलांसाठी स्वयंरोजगाराच्या संधी.....	१८४
24	५४. प्रा.सव्यद अफरोज अहेमद महिलांच्या आरोग्यासाठी संतुलित आहार.....	१८८
26	५५. प्रा. रोहिणी निवृत्ती अंकुश-लोखंडे असंघटीत महिला कमागारांमधील समान वेतन कायद्या बदलची जाणिव - जागृती एक अभ्यास.....	१९०
29	५६. प्रा. डॉ. वैशाली मेश्राम २१ व्या शताकातील नवविवाहित महिलांना येणाऱ्या विविध समस्यांचा अभ्यास एक समिक्षा.....	१९२
31	५७. प्रा. डॉ. निता आर. गिरी महिला सक्षमीकरणात स्वयंसहाय्य गटाचे योगदान.....	१९४
33	५८. प्रा.कु.पल्लवी र. देशमुख महिला आरोग्याकरीता समतोल आहार.....	१९६
38	५९. प्रा. प्रतिभा विष्णु आघाडे ग्रामीण भागातील स्त्री जीवनामध्ये महिला अधिकारांचे.....	१९८
42	६०. प्रा. सौ. वैशाली रा. मोरे ताणतणावातून निर्माण होणाऱ्या हृदयरोगाचे आहाराद्वारे नियंत्रण.....	२०२
44	६१. सलमा खमरोद्दीन शेख, प्रा. जे. व्ही. निकाळजे आहार आणि ताणाचा संबंध.....	२०४
47	६२. प्रा.डॉ.साधना डी.वाघाडे भारतीय महिला : संधी आणि आव्हाने.....	२०६
४९	६३. प्रा. आशा मोहन किटके महिला सक्षमीकरण आणि कायदा.....	२१०
१४		



५४. महिलांच्या आरोग्यासाठी संतुलित आहार



प्रा.सय्यद अफरोज अहेमद

७८

कालिकादेवी महाविद्यालय शिरूर (का.) ता.शिरूर(का.) जि.बीड

प्रस्तावणा :-

महाराष्ट्रीय मराठमोळ्या महिलांचा आभ्यास करता घरातील गृहिणी असो किंवा नोकरी करणारी स्त्री असो सर्व नात्यांना न्याय देताना स्वतःच्या आरोग्यावर मात्र निश्चित अन्याय करत असते. याचे उत्तम उदारण म्हणजे नुकतेच झालेल्या एका तपासणीत ९०% महिलांनी बाळांतपणात हिमोग्लोबीन तपासणी केल्यानंतर उर्वरित आयुष्यात एकदाही हिमोग्लोबीनची तपासणी केल्याची दिसून आली नाही, घर,नवरा,मुल यांच्या सवंग गरजा पूर्ण करता करता मात्र आमच्या घराची केंद्रबिंदु असणारी महिला ही सर्व उपलब्धता असताना देखील उत्तम आरोग्यापासून वंचित राहते.

उत्साह व चैतन्य निर्माण होण्यासाठी रोगांना प्रतिकार करण्याची शक्ती मिळण्यासाठी आहारात जीवनसत्वे, खनिजे,पदार्थ, प्रथिने यांची गरज असते निकस आहारामुळे शरीराची रोगप्रतिकार शक्ती कमी होते आणि शरीराची रोग प्रतिकारकशक्ती कमी झाली की कुठलेही आजार होण्याची शक्यता नाकारता येत नाही. आहारातील जीवनसत्वे आणि खनिज यांच्या योग्य प्रमाणामुळे प्रतिकार शक्ती वाढते यासाठी प्रत्येकाने व्यक्तीनिहाय रोजच्या जेवणात २८० ग्रॅम भाज्या खाणे आवश्यक आहे. माणसाचे आजार मुख्यतः दुषित पाणी व अन्न हयामुळे होतात हे जरी खरे असले तरी अयोग्य आहार तितकाच जबाबदार घटक असु शकतो हयाची जाणीव आलीकडच्या संशोधनावरुन दिसून येते . विशेष करुन रोगप्रतिबंधक शक्तीसाठी लागणारी जीवनसत्वे व क्षार हयांची आहारातील कमतरता हे एक निरनिराळ्या आरोग्य समस्यांचे कारण असु शकते.

साक्षरता संतुलित आहाराची :-

संपूर्ण भारत देशात साक्षरता अभियान राबवण्यात आले असुन निरक्षरांना साक्षर करण्यासाठी अक्षर ओळख झाली लिहिता वाचता आल,स्वतःची जाणीव निर्माण झाली, आणी प्रगतिचा जणु मार्गच मिळाला, पण आरोग्याच्या बाबतीत मात्र आजारी पडल तरच उपचार घेणे ते ही डॉक्टरी इलाज न करण , पण आजार होऊच नयेत म्हणुन काळजी घेणे गरजेचे आसते. या बाबतीत महिला व गृहिणी वर्ग अजुन ही उदासीन आहेत त्यात नवाक्षरच नाही वर शहरी सुशिक्षितांचाही समावेश आहे. आरोग्याचा पाया म्हणजे संतुलित आहार आहे. जागतिक आरोग्य संघटनेचं घोषवाक्य आहे कि आरोग्याचा आहार योग्य व्यायाम संतुलित आहार आहे. जागतिक स्तरावर सर्वांच्याच

आरोग्याचा विचार होत असताना आपण मात्र त्या बाबत फारच उदासीन दिसत आहोत.

गृहिणी ही घरची अन्नपूर्णा :-

गृहिणी ही प्रत्येक घर नावाच्या संस्थानाची अन्नपूर्णा असते प्रत्येकाच्या आरोग्याचा आणि विकासाचा मार्ग हा तिच्या हातात असतो, बसं म्हणण वावग ठरणार नाही. म्हणुन गृहिणीला पोषणासंबंधी साक्षर करणं सर्वात महत्वाच तसेच कुटुंब, समाज आणि देश यांच्या दृष्टिण फायदेशिर आहे. पोषण विषयक जाणीवजागृती समाजातील सर्व स्तरांमध्ये सर्व वयाच्या सर्व जाती धर्माच्या, भिन्न आर्थिक स्तर असलेल्या लोकांमध्ये निर्माण करायला हवी. आपल्याजवळ जे काय उपलब्ध आहे त्यातुन सकस आणि पौष्टिक अन्न कसे मिळवता येईल ? यातुन सर्व वयोगटाच्या लोकांच्या जीवन विषयक गरजा भागतील असा संतुलित आहार कसा देता येईल ,याचे शिक्षण देणे म्हणजे पोषणाची साक्षरता आणणे होय. यात समाजातील सर्वात महत्वाचा घटक कोणता असेल तर तो गृहिणी महिलांच्या आरोग्यासाठी संतुलित आहार अत्यंत महत्वाचा आहे, त्यासाठी त्या महिलांना पोषण विषयक शिक्षण देणे अत्यंत गरजेचे आहे. योग्य पोषणाच्या आवश्यकतेची जाणीव त्या विषयीच्या शिक्षणातुन करता येते. त्यासाठी सर्वात प्रथम आहारविषयक चुकीच्या समजुती बदलविणे गरजेचे आहे. या चुकीच्या सवयी इतक्या अंगवळणी पडलेल्या असतात की त्या सोडवण्यासाठी प्रयत्नांची पराकाष्ठा करावी लागते.

पोषणाचा दर्जा उंचावणारे घटक :-

काही साध्या अन्न सोप्या गोष्टीमधुनही आपण पोषणाचा दर्जा सुधारु शकतो. पोळ्या करण्यापुर्वी कणीक न चाळणं, भाज्या धुवून मग चिरण, फळांची साल काढु नये काढलीच तर त्याचा उपयोग चटणीत किंवा भाजीच्या रश्यामध्ये करणे, अन्न उघडयावर न शिजवणे, भजी जास्त वेळ चिरुन न ठेवणे, शिळे उन्न न खाणे, अन्न भसळ ओळखायला शिकण वेगवेगळ्या पध्दतीन उन्न शिजवण, अन्तः साठविण्याच्या पध्दती शिकण, वेगवेगळ्या पध्दतीने अन्नपदार्थ टिकवण, आपल्या भोवती उपलब्ध वस्तुतुनच अधिकाधिक पौष्टिकता मिळवण, वेगवेगळ्या वयानुसार स्थितीनुसार, आजारानुसार आहार घ्यायला शिकवण, महागड अन्न हे पौष्टिकच आसत हा विचार आधी सोडून देणे. ह्या गोष्टी जीवनात सर्वात महत्वाच्या आहेत.

समतोल आहार म्हणजे काय ? :-

समतोल आहार म्हणजे दुसरे तिसरे काहीही नसुन तृणधान्य, कडधान्य, केळी, दुध व दुधाचे पदार्थ सर्व प्रकारच्या भाज्या व फळे तेल, तुप, साखर, गुळ, मांसाहार पदार्थ (खाणान्यासाठी) यांचा रोजच्या आहारात समावेश करणे हे हेतु परस्पर करायला हवे. आहारा सोबत योग्य तो व्यायाम आणि आवश्यक विजांचा यांचाही समावेश हवा. भोजन कसे घ्यावे, केव्हा घ्यावे, किती घ्यावे या सगळ्या गोष्टी ठरलेल्या असतात त्यांना आहार व पोषणाचे संस्कार म्हणता येईल हे संस्कार सुखी व समाधानी आयुष्याची शिंदोरी ठरतात. आहाराविषयक अज्ञान सुशिक्षितांमध्ये ही दिसते तेव्हा खाण हा समस्त जनतेचा जिव्हाळ्याचा प्रश्न आसतो खाण जीवणचं गाणं हे मनापासून करायला हवे.

आहाराचे आयोजन :- उर्जा पुरवणारा अन्नगट :- तृणधान्ये, तेलबिया, तेलतुप, कंद मुळे, डाळी इ.समावेश होतो.

शरीर निर्मिती करणारा अन्नगट :- डाळी, दुध आणि दुग्धजन्य पदार्थ, कडधान्ये, तेलबिया काही भाज्या मांस, मांसे, अंडी, कठीण कवचाची फळे आणि सुककामेवा इ. समावेश होतो.

संरक्षक आणि दुष्यम संरक्षक गट :- पिवळी, लालसर रसाळ फळे, आंबट फळे, हिरवी पालेभाजी, फळभाज्या इ.समावेश होतो.

रजोनिवृत्ती व अनेक आजार :-

महिला वर्गांमध्ये आरोग्याच्या अनेक समस्या वयाच्या वेगवेगळ्या कालखंडात जाणवतात त्यालाच जर आहार व सदृढ आरोग्याची जोड नसेल तर मोठ्या पासून वारिक वारिक दुखने व आजार मान वर काढताना जाणवतात. त्यामुळे आपल्या शरीराची व आहार विहाराची माहिती प्रत्येक महिला वर्गाला असणे अत्यंत गरजेचे आहे.

महिलांच्या वावतीत चाळीशीच्या जवळ पास व नंतर पाळीच्या अनेक तक्रारी जाणवतात कारण नेमका हा कालखंड रजोनिवृत्ती म्हणजेच मासिक पाळी थांबणे याचा असतो. वयाच्या १२ वर्षांपासून सुरु झालेल्या मासिक पाळीच्या बंद होण्याचा हा कालखंड म्हणजे रजोनिवृत्ती होय. या काळात मासिक पाळी अनियमितता येणे, हाडांची दुखणी अचानक उद्भवतात, लठ्ठपणा जाणवतो, चरबी वाढते, नैराश्य, मानसिक तणाव, चिडचिडेपण वारंवार जाणवतो. बऱ्याच महिलांना खुप रडावेसे वाटते, त्वचा कोरडी कायला सुरवात होते, त्वचेवरील चमक कमी होते, दर्शनीय त्वचेवर कंद येतात, आत्मविश्वासाची कमतरता जाणवते, पचनाच्या तक्रारी सुरु होतात, भरपूर महिलांना बद्धकोष्ठतेचा त्रास जाणवतो, योनिना खाज सुटणे, समागमाची इच्छा कमी होणे, झोप कमी होते, स्तनाचा आकार लहान होतो, वारंवार लघवीला जावे वाटते

इ.महत्वाचे बदल या काळात जाणवतात हे सर्व बदल हार्मोन्सच्या बदलाशी निगडीत असतात. इस्ट्रोजन आणि प्रोजेस्टेरॉन हे स्त्रीच्या शरीरातील अतिशय महत्वाचे हार्मोन्स आहेत या मुळे महिलांच्या शरीरात अनेक बदल घडतात याची माहिती असणे देखील महत्वाचे आहे.

उपाय योजना :-

आरोग्यम धनसंपदा खाण्यासाठी जगणे नको, जगण्यासाठी खाऊ चौरस आहाराचा मंत्र घेऊन दीर्घायुची मन होऊ दे. आरोग्य चांगले असेल वर एक महिला कुटुंबाच उत्तम नेतृत्व करू शकते आणि स्वस्थ कुटुंब हे स्वस्थ समाजाची निर्मिती करत असते. जीवनाच्या कोणत्याही क्षेत्रात प्रगती करता येणे उत्तम स्वास्थावर अवलंबून आहे. चांगल्या आरोग्यासाठी आहार व्यायाम आणि विश्रांती ही त्रिसुत्री आवश्यक आहे. आरोग्याच्या वावतीत म्हटल जात की आपण जसे खातो तसे दिसतो अलिकडील काळात धावपळीने व्यापलेली व्यस्त जीवन शैली आहारविहाराच्या पाश्यात संकल्पना आणी तांत्रिक प्रगती साधण्याकडे असलेला सर्वांचा कल आसतो यामुळे संतुलित आणि पोषक आहाराकडे दुर्लक्ष होत आहे.

कॅल्शियम युक्त आहार :-

रजोनिवृत्तीत हाडांवरील परीणाम टाळण्यासाठी कॅल्शियम युक्त आहार घेणे उत्तम कारण या काळात हाडे ठिसुळ होतात. त्यासाठी २ या ३ खजूर पाण्यात भिजवून घेणे, दुध व दुधाचे पदार्थ, नाचणीचे पिठ, कडीपत्ता, तीळ, माठची भाजी, शेवगा व सलगमची पाने रोज एकचमचा आवळा पावडर, नाश्यामध्ये कडधान्ये चवळी, मटकी श्रावण घेवडा, सोयाबीन हरभरे, व भरपूर पाणी घ्यावे.

चाळीशीत न्हदय सांभाळा :- महिलांमध्ये मासिक पाळी सुरु असे पर्यंत न्हदय विकाराचे प्रमाण हे पुरपा पेक्षा कमी असते. परंतु मासिक पाळी गेल्या नंतर मात्र स्त्रियांना देखील न्हदय विकाराचा धोका संभवतो.

लठ्ठपणा :- मासिकपाळी बंद झाल्यानंतर किंवा त्या आधीपण प्रमाणापेक्षा जास्त लठ्ठपणा हे अनारोग्याचे लक्षण आहे. लठ्ठपणामुळे अनेक विकार उद्भवू शकतात आहार व व्यायाम हे लठ्ठपणाशी संबंधित असलेले महत्वाचे घटक आहेत. म्हणुन आहाराद्वारे लठ्ठपणावर मात करून येणारे आजार आपण रोकू शकतोत. तीव्र भुक् लागल्यावरच जेवावे, भुकेपेक्षा थोडे कमी खावे जेवणात सात्विक शुध्द पदार्थ वापरावेत. जास्त तिखट, आंबट मसालेदार तेलकट जेवण आरोग्याचा शत्रु आहे वरील प्रमाणे आहार विहाराकडे साक्षर होऊन पाहिल असता महिलांच्या अनेक आरोग्याच्या समस्या दूर होऊन एक सदृष्ट कुटुंब व समाजाची निर्मिती होईल.

संदर्भ

- १) आहाराचे आरोग्यमंत्र - प्रा.सौ.रसिका विठ्ठल देशमुख
- २) लठ्ठपणा व्यायाम आणि आहार - डॉ.वा.वा.भागवत
- ३) आरोग्यदीप - डॉ.अलका राजेंद्र कर्णिक
- ४) आरोग्य जागृती - सौ. शंकुतला देसारडा
- ५) सौर आरोग्य - दिलिप कुलकर्णी, पौर्णिमा कुलकर्णी

Impact Factor-6.261

ISSN-2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

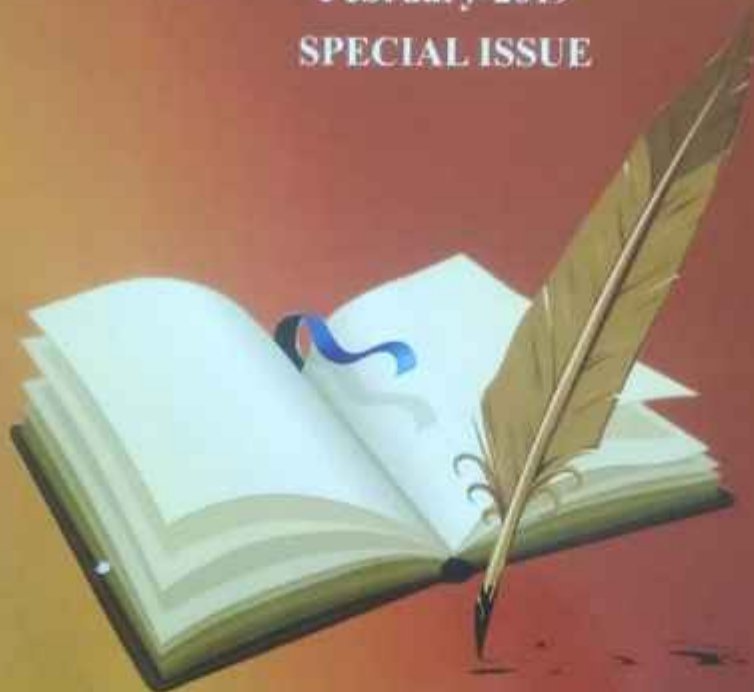
RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019

SPECIAL ISSUE



इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य :
संवेदना के स्वर

Guest Editor

Dr.P.K.Koparde

Dr.V.V.Arya

Chief Editor

Dr.Dhanraj T.Dhangar

Assist.Prof.(Marathi)

MGV'S Arts & Commerce College, Yeola,
Dist.Nashik (M.S.)

20	21 वीं सदी का गूज़ल साहित्य	- प्रा. डॉ. बंम नरसिंगदास ओमप्रकाश	78
21	गंजुल भगत की कहानियों में नारी विमर्श	प्रा. डॉ. लहाड़े मुरलीधर अंचुतराव	82
22	बाल साहित्य एक विमर्श	- डॉ. अर्चना परदेशी	85
23	21 वीं सदी का हिन्दी आत्मकथाओं में नारी विमर्श -	डॉ. के. श्याम सुन्दर	88
24	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता (नारी विमर्श के विशेष संदर्भ में)	प्रा. डॉ. बकीराम राख	91
25	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में व्यक्त स्त्री...	- प्रा. डॉ. देशपांडे वी.की.	93
26	'दोहरा अभिशाप' : दलित स्त्री के संघर्ष की...	- डॉ. सहदेव वर्षाशणी निवृत्तीराव	96
27	इक्कीसवीं सदी की कविता में नारी संवेदना	- प्रा. डॉ. संतोष विजय येसवार	100
28	इक्कीसवीं सदी का व्यंग्य साहित्य	- प्रा. डॉ. पुष्पलता अग्रवाल, प्रा. व्यंकट खंडकुरे	104
29	कबूतरीयों की व्यथा : अल्मा कबूतरी	- डॉ. रोडे एस.सी.	107
30	'संजोत कृत उपन्यास 'जंगल जहाँ	- डॉ. मुनेवर एस. एल. पाटील सुखदेव रामा	109
31	हिजडों के अस्तित्व का प्रश्न	- डॉ. निम्मी ए.ए.	111
32	पोस्ट बॉक्स नं 203 नाला सांपारा में किलरों	- प्रा. डॉ. पांडुरंग दुकळे	115
33	इक्कीसवीं सदी की हिन्दी गूज़ल में नारी चेतना के स्वर	- डॉ. अविनाश कासांडे	117
34	समु कौकरिया कृत 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास -	प्रा. नटवर संपत तखवी	122
35	श्री नरेण मेहता कृत 'षबरी' में चित्रित समस्या	- प्रा. साधुमारे के.एच.	125
36	इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री संवेदना	- प्रा. कुलकर्णी जनिता बाबुराव	128
37	इक्कीसवीं सदी का नाटक साहित्य और भूमता कालिया	- प्रा. धर्मे प्रमोद किशनराव	131
38	21 वीं शती के कहानी साहित्य में स्त्री	- प्रा. बालिका रामराव कांबळे	133
39	'गुलाम सैदी' उपन्यास में चित्रित यथार्थवादी परिवेश	- अबू गोरेरा	136
40	'ग्लोबल गाँव के देवता' (उपन्यास) में चित्रित यथार्थ	- इबराह खान	139
41	'आदिवासी' जनजाति की व्यथा :- 'ग्लोबल गाँव के देवता'	- गुंड सचिन मधुकर	143

श्री नरेश मेहता कृत 'शबरी' में चित्रित समस्या और आधुनिक बोध

सहा प्राध्यापक, वाघमारे जे.एच.
 हिंदी विभाग, काठिणदेवी महाविद्यालय शिकर(संसार)
 ता.शिकर(फरसगढ़) जिला-413249

भूमिका :-

श्री नरेश मेहता ने शबरी में शबरी की कथा निम्नवर्ग की एक साधारण स्त्री की आत्मिक एवं आध्यात्मिक संघर्ष की ऐसी कथा है जो समाज के शीर्षस्थ पात्रों एवं चरित्रों में भी अपनी पहचान बनाये रखती है। कवि ने प्राचीन काल से चले आ रहे वर्ण व्यवस्था के ज्वलन्त प्रश्न का साधारण नवीन सन्दर्भ में किया है। कवि कहते हैं कि अन्त्यज जाति से सम्बन्धित व्यक्ति भी अपने कर्मा से उच्चता प्राप्त कर सकता है। इस वर्णव्यवस्था प्रधान समाज में वर्ण मुक्त होना अत्यधिक बिकट हो गया है फलतः हमारा समाज श्रम और कर्म दोनों ही क्षेत्रों में भटक गया है जो कि तपले मरुस्थल में कोई खो जाता है। शबरी का पुरा चरित्र राम की एकनिष्ठ भक्ति करनेवाली तपस्विनी के रूप में प्रसिद्ध है। वाल्मीकि ने शबरी को अत्यन्त उच्च मानभूमि पर प्रस्थापित किया है। शबरी राम के उज्ज्वल चरित्र की शुभ आभा से संपूर्ण होने के कारण रमणीय और स्मरणीय बन गई है। उसने समाज के शीर्षस्थ, पात्रों एवं चरित्रों के दीदीप्यमान, दिव्यालोक में भी अपना सर्वोपरि उच्च स्थान एवं पहचान बनाये रखी है। जो एक ओर भक्तों के लिए प्रेरणा भूमि है तो दूसरी ओर साधकों के लिए साधना भूमि है। नरेश मेहता ने शबरी को श्रमशीलता, धर्मानुष्ठान में तत्पर रहनेवाली तपस्विनी के रूप में चित्रित किया है।

नरेश मेहता की मानवीय दृष्टि ने ही शबरी को असाधारणत्व रूप में प्रस्तुत किया है कवि के शब्दों में "शबरी अपनी जन्मगत निम्नवर्गीयता को कर्म दृष्टि के द्वारा वैचारिक उच्चता में परिणत करती है। यह आत्मिक या आध्यात्मिक संघर्ष, व्यक्ति के सन्दर्भ में मुझे आज भी प्रासंगिक लगता है।" अधूतोंद्वारा और नारी जागरण दोनों भावों की अनिवार्य शबरी के माध्यम से व्यक्त हुई है। कवि ने शबरी के माध्यम से वर्ण भेद एवं संप्रदाय को नकार दिया है। कवि का संदेश यही है कि जन्म गतिनिम्नता को वैचारिक उच्चता तथा आत्मिक संघर्ष द्वारा उच्चता दी जा सकती है। कवि के मौलिक चिन्तन जल से स्पर्श पाकर ही शबरी की साधारणता असाधारण में बदल गई है और वह आत्मिक संघर्ष करती हुई पावन और मंत्रपूज्य चरित्र बन गई है। आधुनिक युग में समानता और मानवता के सिद्धान्त को शबरी के माध्यम से व्यक्त किया है। "सामाजिक वर्ग, वर्ण तथा परिपेश की जड़ता से मुक्ति की प्रक्रिया जिस श्रमविधान के द्वारा चरितार्थ हो सकती है, शबरी के चरित्र में वही सामाजिक प्रयोजन भूत हुआ है।"

शबरी काव्य में आज के युग के इस महत्वपूर्ण प्रश्न को उठाया है। निम्नतम घरातल पर फँका हुआ व्यक्ति भी अपनी अस्मिता जानकर अपने गौतम के प्रकाश को आलोकित कर सकता है। यदि लक्ष्यप्राप्ति उसका ध्येय है, तो वह महान से महान लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। मानव का ध्येय तक रुक जाना नहीं है, देह रुकी अर्थात् वह पशुतूल्य कर्म है-

"सब बन्धन से कहीं श्रेष्ठ / उस प्रभु का ही बन्धन
 कुल-कुटुम्ब की चिंता से / अक्षय है प्रभु का आराधन।"

शबरी एकनिष्ठ भक्ति के द्वारा महान बन जाती है कि प्रभु राम तक उसे शिवभक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। नरेश मेहता की शबरी को भी मार्तण्ड ऋषि के सामने अपने आने का उद्देश्य बतलाने के लिए हिचकिचाहट होती है-

"अन्तर्ज्य अछुत, फिर शबरी जाति / उस पर स्त्री, क्या हेतु कहूँ ?
 अध्यात्म-पिपासा लेकर मैं / आयी हूँ, कैसे बात कहूँ।"

इस कथन पर मार्तण्ड ऋषि की दुविधा देखिए-

"स्थान यहाँ देना तुमको / इस का निर्णय सब पर निर्भर
 यदि उच्च वर्ण की होती, तुम / तो प्रश्न, नहीं था कुछ दूसरा।"

वर्तमान समाज में भी अस्पृश्यों के लिए जलाशय की अलग व्यवस्था है। नरेश मेहता ने इसी बात को शबरी में भी दर्शाया है। सार्वजनिक जलाशयों में जानवर पानी पी सकते हैं किन्तु शूद्रों को पानी भरने



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwari Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

Mahatma Gandhi's *Satya and Ahimsa*

Vithal B Gunde

Head & Assistant Professor

Dept. Of History, Kalikadevi Arts, Commerce and Science College
Shirur Kasar, Dist. Beed 413249

INTRODUCTION: This research paper makes an attempt to study the truth and non-violence philosophy of Mahatma Gandhi was an Indian revolutionary and religious leader who used his religious power for political and social reform. Although he held no governmental office, he was the main force behind the second-largest nation in the world's struggle for independence. Mohandas Karamchand Gandhi was born on October 2, 1869, in Porbandar, India, a seacoast town in the Kathiawar Peninsula north of Bombay, India. His wealthy family was from one of the higher castes. In September 1888 Gandhi went to England to study. Before leaving India, he promised his mother he would try not to eat meat. He was an even stricter vegetarian while away than he had been at home. In England he studied law but never completely adjusted to the English way of life.

He became a lawyer in 1891 and sailed for Bombay. He attempted unsuccessfully to practice law in Rajkot and Bombay, then for a brief period served as lawyer for the prince of Porbandar. In 1896 Gandhi returned to India to take his wife and sons to Africa and to inform his countrymen of the poor treatment of Indians there.

His vision also presents a more complex and realistic understanding, than some other contemporary pluralists, of political philosophy and of political life itself. In an increasingly multicultural world, political theory is presented with perhaps most vigorous challenge yet. The main problem of violence has also become coterminous with issues of pluralism, many have advocated the banishing of truth claims from politics altogether. Political theorists have struggled to confront this problem through a variety of conceptual lenses. Debates pertaining to the politics of multiculturalism, tolerance, or recognition have all been concerned with the question of pluralism as one of the most urgent facts of political life, in need of both theoretical and practical illumination.

TRUTH (*Satya*): The word *Satya* (Truth) is derived from Sat, which means 'being'. Nothing is or exists in reality except Truth. That is why Sat or Truth is perhaps the most important name of God. In fact it is more correct to say that Truth is God, than to say that *God is Truth*. But

as we cannot do without a ruler or a general, such names of God as 'King of kings' or 'The Almighty' are and will remain generally current. On deeper thinking, however, it will be realized, that Sat or Satya is the only correct and fully significant name for God. And where there is Truth, there also is knowledge which is true. Where there is no Truth, there can be no true Knowledge. That is why the word Chit or Knowledge is associated with the name of God. And where there is true Knowledge, there is always Bliss (*Ananda*). Their sorrow has no place. And even as Truth is eternal, so is the Bliss derived from it. Hence we know God as *Sat-Chit Ananda*, One who combines in Himself Truth, Knowledge and Bliss.

Devotion to this Truth is the sole justification for our existence. All our activities should be centered in Truth. Truth should be the very breath of our life. When once this stage in the pilgrim's progress is reached, all other rules of correct living will come without effort, and obedience to them will be instinctive. But without Truth it is impossible to observe any principles or rules in life. Generally speaking, observation of the law of Truth is understood merely to mean that we must speak the truth. But we in the Ashram should understand the word Satya or Truth in a much wider sense. There should be Truth in thought, Truth in speech, and Truth in action. To the man who has realized this Truth in its fullness, nothing else remains to be known, because all knowledge is necessarily included in it. What is not included in it is not Truth, and so not true knowledge; and there can be no inward peace without true knowledge.

If we once learn how to apply this never-failing test of Truth, we will at once be able to find out what is worth doing, what is worth seeing, what is worth reading. But how is one to realize this Truth, which may be likened to the philosopher's stone or the cow of plenty? By single-minded devotion (*abhyasa*) and indifference to all other interests in life (*vairagya*)—replies the *Bhagavad-gita*. In spite, however, of such devotion, what may appear as truth to one person will often appear as untruth to another person. But that need not worry the seeker. Where there is honest effort, it will be realized that what appear to be different truths are like the countless and apparently different leaves of the same tree. Does not God Himself appear to different individuals in different aspects? Still we know that He is one. But Truth is the right designation of God. Hence there is nothing wrong in every man following Truth according to his lights. Indeed it is his duty to do so.

Then if there is a mistake on the part of anyone so following Truth, it will be automatically set right. For the quest of Truth involves *tapas*—self-suffering, sometimes even unto death. There can be no

place in it for even a trace of self-interest. In such selfless search for Truth nobody can lose his bearings for long. Directly he takes to the wrong path he stumbles, and is thus redirected to the right path. Therefore the pursuit of Truth is true *bhakti* (devotion). It is the path that leads to God. There is no place in it for cowardice, no place for defeat. It is the talisman by which death itself becomes the portal to life eternal. Gandhi was not an academic philosopher, nor did he exhibit any interest in logical and epistemological problems. However, his Autobiography, the Story of My Experiment with Truth shows that he considers himself as a seeker of truth and is ready to share his experiences with others but claiming no finality for his own conclusions.

NON-VOILANCE (AHIMSA): With regard to the etymological origin of the word, the term *ahimsa* is formed by adding the negative prefix *a* to the word *himsa* which is derived from the Sanskrit root '*han*', i.e. 'to kill', 'to harm', or 'to injure', and means not killing, not harming, not injuring. The commonly used English equivalent 'non-violence' is inadequate as it seems to give a false impression that *ahimsa* is just a negative virtue. *Ahimsa* is not mere abstention from the use of force, not just abstention from killing and injuring. It also implies the positive virtues of compassion and benevolence because not killing and not injuring a living being implicitly amounts to protecting and preserving it and treating it with mercy.

The *ahimsa* is an important spiritual doctrine shared by **Buddhism**, **Jainism** and **Hinduism**. In the said religions, this doctrine has a much wider spiritual connotation and forms an integral aspect of their principles, philosophies and practices. For over three thousand years, nonviolence was considered the highest virtue or the virtue of virtues in the ascetic traditions of ancient India. It is noteworthy to mention that the practice of nonviolence was not a mere theory, most especially for the people in ancient India who made freedom their primary aim and for those enlightened minds that focused upon spiritual practices, according to Jayaram.

The Buddha practiced it and actively applied it to resolve differences among rulers of his times and to prevent wars. He advised people to practice right living on the Eightfold Path and to avoid hurting or harming others. He preached against cruelty. The Jains practiced extreme forms of nonviolence as they did not want to injure even the minutest organisms. They made it part of their vows. The Hindus practiced nonviolence toward all by refraining from hurtful thoughts, words and actions.

Gandhi discovered a new law- the law of love, a new philosophy- the philosophy of non-violence. Non-violence is the law of human

spirit. Since the practice of ahimsa requires an inner strength, which can only be generated by living faith in God. In his own words, "Non-violence is the first article of my faith. It is also the last article of my creed. "Here one can say that, faith in God is the basis of *ahimsa*. Where there is love there is peace, and where there is peace there is God (Truth). Thus, a sincere faith in God will make man see that all human beings are fellow-beings and essentially one. There is no question of doubt that the love of God would turn into a love of humanity, which alone make possible the exercise of non-violence. As a matter of fact, non-violence is the outcome of the realization of the unity of mankind that one will be able to love his fellow-beings. One who utilizes the law of love creates wonders as the force of ahimsa is higher and subtler than the forces of Nature. You could not see it, but only imagine it. Gandhi considers non-violence is the greatest and most powerful device in the world.

Gandhi believes that it's manifestation in humanity is strengthened by ahimsa: thus ahimsa - also called truth, love or God - is the core of human life and the divine supreme law that guide humanity at all cost. God or the Supreme Being, who is the Creator of all and called by different names, is the power behind the above unity; for Gandhi, He is also the 'Truth' and it is His voice within everyone that inspires to follow the vision of Truth, and that is possible only by complete realization of ahimsa-the nonviolence. Gandhi has deep faith with non-violence. He understands non-violence as the most active force in the world as well as supreme law. This particular type of belief of Gandhi is expressed in his oft-quoted statement that Ahimsa is natural to man. Gandhi explains this in different ways. If we survey the history of human evolution we shall find that although in opening stage brute force appeared to be dominant, the progress of evolution towards non-violence. Gandhi said, "If we turn our eyes to the time of which history has any record down to our time, we shall find that man has been steadily progressing towards ahimsa."

Satya and Ahimsa in Present Scenario : Mahatma Gandhi holds an eminent position in the history of ethics and their application to contemporary concerns. Mahatma Gandhi is considered to be one of the greatest sons of India. As a man of action, he practiced what is moral, truthful and non-violence after thorough examination of those values. The entire gamut of his philosophical thought is based on two moral cardinal values, namely, truth, non-violence which are more relevant today than before. Gandhian philosophy has always been a topic of discussion especially in this contemporary world where his ideas appear redundant amidst the pragmatism and materialism which prevails....still to discard the relevance of his thought is akin to

removing the element of humanity from man as his philosophies like "satya" and "ahimsa" emanate basic human principles of love, compassion and tolerance.

In this fast globalizing world where capitalism is gradually becoming the word of the day, Gandhi's concept of decentralization of means and resources and his model of economic development which talked of developing villages as an independent production and administrative unit has become more relevant in order to save us from various economic, social, ethical and emotional hazards which are the consequence of this large scale industrialization and have become silent killers of the human race. In Gandhi's words "*truth and untruth often co-exist, good and evil are often found together*" however when two lies wage a war against each other it's the bigger lie that wins the greater violence that takes away the booty the more intense hatred that becomes the victor but ultimately its untruth that prevails, violence that persists and hatred that is glorified the vedantic philosophy of "*asto ma sadgamay*" subjugates to the engulfing darkness. It's here when Gandhi's Weapon of "*satyagraha*", and "*ahimsa*" come into play and helps in restoring the light to the darkening world.

Reference Book:-

1. Prof. J. S. Mathur, Contemporary Society: A Gandhian Appraisal, Gyan Publishing House, New Delhi, 2010.
2. Mahadev Desai, the Story of My Experiment with Truth, Navajivan Publishing House, Ahmadabad.
3. Joy Kachappilly, Gandhi and Truth: An Approach to the Theology of Religions, Akansha Publishing House, New Delhi, 2000.
4. Gaur, V.P. Mahatma Gandhi: A study of his message of non-violence. New Delhi: Starling Publisher's pvt. Ltd, 1977.
5. Bose. N.K, "Studies in Gandhism", Navajivan publishing house, Ahmadabad. 1972.
6. M. K. Gandhi, Non-violence in Peace and War, Vol. I, Navajivan Publishing House, Ahmedabad, 1949.
7. K. T. Char Narasimha, ed., a Day Book of Thoughts from Mahatma Gandhi, Macmillan and Co. Limited, Calcutta, 1951.
8. Gandhi. M.K. (1991), *An Autobiography or the Story of My Experiments with Truth*, Ahmedabad: Navjivan Mudranaly.

Website

<http://www.wikipedia.co.in>.



Analytical Study of Settlements With Respect to Physical Factor in Beed District

Dr. Sanjay R. Sawate

Head Dept. of Geography, Kalikadevi
Arts Commerce & Science, College, Shirur Kasar
Tq. Shirur Kasar, Dist. Beed.

Abstract:

Settlement is a generic term and is derived from the word "Settle". According to the pocket oxford dictionary (1966) the meaning of the word "Settle" is to establish or become established in more or less permanent abode or way of life. To understand spatial distribution of settlements with respect to Relief, Slope, Drainage, Rainfall, soil type, Roadways and Railways in the study region.

Keywords: Settlement, Relief, Slope, Drainage Soil, Roadways etc.

Introduction:

Settlement Geography holds an exceptional place in the geographical hierarchy of human phenomena. It is a relatively recent sprout from the venerable trunk of human geography. Its consideration runs like a thread through almost the whole fabric of geographic thought. The settlement is central to human geography, modifying as it does the natural environment by introducing cultural element.

Settlement is a generic term and is derived from the word "Settle". According to the pocket oxford dictionary (1966) the meaning of the word "Settle" is to establish or become established in more or less permanent abode or way of life. It also includes temporary stay at a place. Settlement geography is the study of the cultural landscape. It is a science of systematic inquiry of occupancy features distributed over space with differentiation in relation to man. The minutest detail of the distribution of population manifests itself in the form of grouping of houses scattered at places and agglomerated at others.

Houses and streets being the chief elements of occupancy unit that results according to function become the focal point of the study in settlement geography and determine the external and internal form of the habitation. Thus, the functions determine the form. The external forms of these occupancy units reflect architectural styles of the time, culture and region from which they spring. The gradual modification in the external form of the occupancy last indicates the qualitative and quantitative changes in the settlement. Settlement as an occupancy unit represents, thus, an organized colony of human beings, including the buildings in which they live or work or store or use them otherwise and the tracks or streets over which their movements take place. In the initial stages these habitations totally depend upon the surrounding conditions. Then gradually they change with the advancement of knowledge and civilization. "Settlement geography is not only related with buildings grouped around the permanent farm dwelling, but also with the temporary camp of the hunter or herder, or with Settlement clusters or agglomerations, running the scale from hamlet to village, town and city.

Study Area:

Beed district is established with the Maharashtra state in 1960. Beed district is located central in Maharashtra state. Beed district is a part of Marathwada region. Beed district is selected as the region for present study. Beed district lies between $18^{\circ}28'$ and $19^{\circ}27'$ north latitudes and $74^{\circ}54'$ east

to 76°57' east longitudes. It is surrounded by Aurangabad and Jalna district to the north, Parbahani district to the north-east, Latur district to the south-east and Osmanabad district to the west. It has an area of 10693 sq.km. The total population of the study region is 2585962 in 2011. The district is divided into two revenue divisions i.e. Beed and Ambajogai. The district ranks 10th in Maharashtra and 2nd in Marathwada in respect of area. According to 2011 census there were 1369 village in the Beed district. Out of the total villages 13 villages are inhabited. The district ranks 29th in the state in terms of population.

Objectives:

The main objective of the present study is to understand spatial distribution of settlements with respect to Relief, Slope, Drainage, Rainfall, soil type, Roadways and Railways in the study region. In it I used 2011 census data of settlements, toposheets for Relief and Slope analysis I used contour and settlements from toposheet. In case of Drainage, Roadways and Railways I put buffer with respect to distance with the help of toposheet. To know the soil influence researcher used district planning map of soil and toposheet for settlements.

Database

I used in this study secondary data. The data regarding population area and number of rural settlements have been obtained from district census book of Beed.

Discussion

The study of spatial distribution of settlements has long occupied geographers. The where? And why where? Constitute disarmingly simple, yet extremely complicated questions which can be asked about all manner of phenomena. The purpose here is to apply such questions to a single phenomenon- settlement. It involves the description and analysis of human habitat over area.

It is observed that most of civilization (settlements) mainly influenced by Paleo-geographic or environmental factors in old and new era but these days social and economic factors play an important role in the spatial distribution of settlements.

Table No. 1.1 - Settlement Distribution According to Relief in Beed District

Sr. No.	Elevation in Meter	No. Of Villages	Percentage To Villages
1	Less Than 50	227	16.59
2	500-600	528	38.59
3	600-700	328	23.97
4	700-800	165	12.06
5	800-900	83	6.06
6	900-1000	30	2.19
7	Above 1000	08	0.51
	Total	1369	100

Source: Compiled By the Researcher

Graph No. 1.1 Settlement Distribution According To Relief



The relief is a function of the Geo-technique constructive and destructive process provides clue towards estimating the intensity of forces at work (Singh 1980). Here it can be analyzed in terms of discrepancies between distributional zones. One can briefly understand the physiography of study region. It found that this region divided into three parts they are.

- i) The Plains or Basins: - In it Ashti, Kaij and Ambajogai tahsils south part are merged.
- ii) The Plateau: - Tahsils like Shirur, Patoda, Georai, Majalgaon, upper Beed, Dharur and Wadwani north part, north part of Kaij and Ambajogai lies in it.
- iii) Hilly region: - Ashti, Patoda, south part of Beed, Kaij and Ambajogai hold this situation which is a part of Balaghat. In the study region lower height is 305 meter and the highest peak height is 2200 meter. Generally it is observed that 55.15% settlements are distributed less than 600 meters. In between 600 to 900 meters there are 42.09 % settlements found and above 900 meters 2.7% settlements are located in study region.

Table No. 1.2 - Settlement Distribution According to Slope in Beed District

Sr. No.	Slope (Degree)	No Of. Settlement	Percentage To Village
1	Less Than 03	992	72.51
2	03-06	204	14.91
3	06-09	68	04.97
4	09-12	101	07.38
5	More Than 12	04	02.19
6	Total	1369	100

Source: Compiled By the Researcher

Graph No. 1.2. Settlement Distribution According to Slope



A slope may be formed by a covering of weathered rock resting on bedrock. Another type of slope consists of bed rock forming the basal slope, covered by a weathered rock, often including a surface layer of the soil. (P. C.Panda 1990) the slope loss or gain in altitude per horizontal distance in a direction of any segmental elements of the earth surface with the datum, expresses in degree is a function of multiple processes. Slope of an area is the most important controlling factor for settlements.

The slope table of the study region is divided into five group. Each group contain uniform class interval of 3 except the highest group. The lower slope group i.e. 00 – 3 covers 72.51% settlements, second group 3 – 6 covers 14.91% settlements, third group 6 – 9 covers 4.97% settlements, fourth group which lies between 9 – 12 hold 7.38% settlements and last group which is above 12 acquire 2.19 % settlements. The correlation value for slope of whole district is -0.79 it shows strong negative correlation i.e. increases the slope decrease the settlements. In Ashti (-0.81), Ambajogai (-0.78), Patoda (-0.77), Beed and Kaij (-0.76) and Dharur (-0.75) tahsils show strong negative correlation. On the other hand Parali (-0.73), Majalgaon (-0.72), Georai and Wadwani (-0.71) and Shirur (K) (-0.69) tahsils are very closer to strong negative correlation value (-0.75). If one can sum up all the above explanation, it is found that most of settlements are distributed in the lower slope angle in the entire study region.

Conclusion

In the study region lower height is 305 meter and the highest pick height is 2200 meter. Generally it is observed that 55.15 percent settlements are distributed less than 600 meters. Most of settlements are distributed in the lower slope angle in the entire study region. 47.22 percent settlements found in region.

References

1. Jog S. R. and Saptashi P. G. (1980), "SankhikeeBhoogol", NarendraPrakashan, Pune
2. KarlekarShrikant and Kale Mohan (2006), "Statistic al Analysis of Geographical Data", Diamond Publications, Pune
3. JadhavJaiprakash A (2010), "Impact on Tarrian on The pattern and Growth of Settlements in Walki River Catchment", Unpublished Ph.D.Thesis, Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune
4. KumbharArjun (1997) "Rural Habitat", Published Ph.D Thesis Shivaji University, Kolhapur SumerooPrakashan, Thane
5. KulkarniSuyogPrakash (2004), "Distribution of settlements in North Ahmadnagar District: A Geographical Analysis", Unpublished M. A. Dissertation, Pune University.
6. Pawar N.V. (2006), "Geographical Analysis of Rural Settlements in Beed District", Unpublished Ph.D. Thesis Dr. B. A. M. University, Aurangabad.



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of
UGC Sponsored Interdisciplinary National Conference on

Gandhian Thought: Past, Present and Future

1 October, 2019

Organized by

Shri. Yogeshwar Education Society's

Swami Ramanand Teerth Mahavidyalaya

Ambajogai, Dist. Beed - 431517



Chief Organizer

Mr. Ramesh Sonwalkar

I/C Principal, S.R.T.M. Ambajogai

Chief Editor

Dr. Shailaja Barure

Director, Gandhian Studies Center

Associate Editor

Mr. Dhanaji Arya

Director, IQAC

महात्मा गांधीचे ऐच्छिक साधेपणा याविषयीचे विचार

डॉ. सुधीर आ. येवले

संशोधन मार्गदर्शक व समाजशास्त्र विभाग प्रमुख,
कालिकादेवी महाविद्यालय, शिरूर (का) जि. बीड

महात्मा गांधी यांचे योगदान केवळ स्वतंत्र्य लढण्यापुरतेच मर्यादित नाही. त्यांनी समाजाचा सर्वांगीण विचार केल्याचे त्यांच्या विविध विचारावरून लक्षात येते. महात्मा गांधींचे ऐच्छिक साधेपणा, सभ्यता, जगण्याचा हेतु, अर्थव्यवस्था, यांत्रिकीकरण, औद्योगिकीकरण, ग्रामउदयोग, विकेंद्रीकरण, स्वदेशी, पर्यावरण, आरोग्य, इत्यादीविषयीचे विचार त्यांनी आपल्या समाजाविषयीच्या विचारात मांडले. त्यांना केवळ स्वातंत्र्यता, स्वराज्यातच रस नव्हता तर, समाजाच्या संपूर्ण विकासात त्यांना रस होता. त्यांच्या वरील विचारावरून हे दिसून येते. भारताचा इतिहास, तत्त्वज्ञान, परंपरा, या अन्य देशापेक्षा वेगळ्या असल्याने भारताचा प्रवास जगाच्या वाटेवरून होऊ शकत नाही. असे त्यांना वाटते.

महात्मा गांधी हे आधुनिक सभ्यतेला विरोध करतात. तो तिच्या अनैतिकेमुळे. सभ्यतेची व्याख्या करताना म. गांधी म्हणतात, "सभ्यता म्हणजे मनुष्याला कर्तव्याचा मार्ग दाखविणारी वागणूकीची पद्धत. कर्तव्य बजावणे म्हणजे नितीचे पालन करणे, नितीचे पालन करणे म्हणजे आपल्या मन, इंद्रियांना ताब्यात ठेवणे असे केल्याने आपण स्वतः ला ओळखतो." पाश्चात्य सभ्यता ही म. गांधींच्या निकषानुसार कुधारणाच ठरते. हिंदी संस्कृतीचा रोख निती दृढ करण्याकडे आहे. तर पाश्चिमात्य संस्कृतीचा रोख अनिती दृढ करण्याकडे आहे. म्हणून महात्मा गांधी तिला कुधारणा म्हणतात. महात्मा गांधींच्या मते, अनिती दृढ करणे म्हणजे मन, इंद्रियांना ताब्यात न ठेवता मोक्यात सोडणे असा होतो. यालाच उपभोगवाद किंवा चंगळवाद म्हटले जाते. सभ्यता ही जगाची जीवनशैली ती उपभोगवादी किंवा चंगळवादी आहे. मानव सतत नवनवीन वस्तूंच्या उपभोगाकरीता शोध लावत असतो. संपूर्ण बुद्धीमत्ता नाविष्य करिता वापरू लागला आहे. तसेच संशोधनाकरिता वापरू लागला. यातून सभ्यतेत वाढ होऊ लागली आहे. सभ्यता म्हणजेच सिव्हिलायजेशन होय. सभ्यतेत राहणीमान, भौतिक वस्तू या बाबी येतात. या बाबी वरवरच्या म्हणजे भौतिक संस्कृति होय तर आपण सत्यप्रिय, सदाचारी, न्यायप्रिय असाल तर आपण सुसंस्कृत आहोत. म्हणजे सभ्य माणूस किंवा समाज हा सुसंस्कृत असेलच असे नाही. पाश्चात्य संस्कृती ही त्याच्या सुसंस्कृतीत वाढ करेलच असे नाही. हिंद स्वराज्यमध्ये म. गांधी लिहीतात की, "या सभ्यतेची खरी ओळख अशी की, लोक बाह्य वस्तूंच्या शोधात आणि शरीर

Impact Factor 6.261

ISSN- 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOW ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

UGC Approved Multidiciplinary international E-research journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

Vol (I)

12 January 2019 Special Issue – 68

महिला सबलीकरणाच्या समस्या : आव्हाने आणि उपाय



Chief Editor

Dr. Dhanraj T. Dhangar
Assist. Prof. (Marathi)

MGV'S Arts & Commerce college,
Yeola, Dist. Nashik (M.s.) India

Executive Editor of This Issue

Prof. A.R. Bhosle
Assist. Prof. Head of Dept. Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

Dr. S.K. Gaikar

Assist. Prof. Dept. of Sociology
Vasant Mahavidalaya , Kaij, Dist. Beed

SWATIDHAN PUBLICATION

Visit to - www.researchjourney.net



महिला सबलीकरण संकल्पनात्मक चौकट

डॉ. सुधीर आ. येवले

सहा.प्राध्यापक व विभाग प्रमुख, कालिका देवी महाविद्यालय, शिरूर (का.)

प्रास्ताविक :

पारंपरिक पुरुषप्रधान भारतीय समाजात महिलांना अवला समजण्यात येई. त्यांना कौटुंबिक, सामाजिक तसेच राजकीय क्षेत्रातील सत्तेपासून वंचित ठेवले जाई. राजकीय सत्ता ही दुसऱ्या ठिकाणच्या सत्तेचा स्त्रोत असते. म्हणूनच 73 व्या घटना दुरुस्तीने महिलांना सबल बनविण्याकरिता पंचायतराज व्यवस्थेत जाणीवपूर्वक 33% आरक्षण देऊन त्यांना सत्तेत सामील करून घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. पण, 33% आरक्षण दिल्यामुळे खरेच महिलांचे सबलीकरण होऊ शकते का ? हे तपासून पाहणे अगत्याचे वाटले. म्हणून तसा प्रयत्न प्रस्तुत प्रकरणात केला आहे. त्याकरिता सबलीकरण ही संकल्पना सविस्तर स्पष्ट करून, सबलीकरणाचे मापदंड किंवा निकष लक्षात घेऊन पंचायतराज व्यवस्थेतील ग्रामपंचायतीचे नेतृत्व करणाऱ्या महिला सरपंचांचे कितपत सबलीकरण झाले आहे? तसेच समाजातील अन्य महिलांच्या सबलीकरणासाठी महिला सरपंच कितपत प्रयत्नशील आहेत? याचा शोध घेण्याचा प्रयत्न केला आहे. एखाद्या बदल जाणून घेताना त्याची पूर्वपीठीका जाणून घेणे अगत्याचे असते म्हणून भारतीय महिलांच्या सामाजिक दर्जा विषयक पार्श्वभूमीचाही वेध घेण्यात आला आहे. सध्या महिलांना पंचायतराज व्यवस्थेत 50 टक्के आरक्षण आहे.

सबलीकरण संकल्पना :

मनुष्य जेव्हा शक्तिहीन असतो तेव्हा तो दुर्बल बनतो. दुर्बल व्यक्ती सत्ता आणि अधिकार या पासून वंचित असते किंवा वंचित राहते, किंवा तिला तसे ठेवले जाते. अशा व्यक्तीला म्हणजेच शक्तिहीनाला ताकद देणारी, सत्ताहीनाला सत्ता आणि अधिकार प्रदान करणारी म्हणजेच दुर्बलांना ताकद, सत्ता आणि अधिकार मिळवून देऊन त्यांना बलवान बनण्यास, सबल होण्यास मदत करणारी प्रक्रिया म्हणजे सबलीकरणाची प्रक्रिया होय. थोडक्यात, व्यक्तीला ताकद, सत्ता आणि अधिकार प्रदान करून देणारी प्रक्रिया म्हणजे सबलीकरणाची प्रक्रिया होय.

सबलीकरणामुळे सत्ताहीन आणि अधिकारशून्य व्यक्तींना त्यांच्या स्वतःच्या जीवनावर ताबा मिळविता येतो. त्यांना स्वामीत्व प्राप्त होऊ शकतं. त्यामुळे भौतिक मालमत्ता आणि संपत्ती, बौद्धिक साधने आणि विचारसरणी (Ideology) यावर अधिकार मिळविता येतो. यातूनच व्यक्तीची सामर्थ्याच्या दिशेने, सामर्थ्यासह, सामर्थ्याजवळ (Power to, Power with, Power within) अशी वाटचाल सुरू होते. अमर्त्य सेन यांनी ध्यानवी सामर्थ्यड (Human Capabilities) या बद्दल अत्यंत स्पष्ट विचार मांडले आहेत. माथा नुसताम यांनी या विचारांच्या आधारे मानवाला सबल बनवू शकणाऱ्या, त्याला सामर्थ्यवान बनवू शकणाऱ्या अशा निवडक क्षमतांची यादी सादर केली आहे --

- * सामान्य आयुष्य जगण्याची क्षमता ;
- * शारीरिक अबाधिततेची क्षमता ;
- * कल्पना-शक्ती आणि विचार-शक्तीचे सामर्थ्य ;
- * भावनांवर ताबा मिळविण्याची, भावनांचा विकास साधण्याची क्षमता ;
- * व्यवहारिक विचारसरणीचे सामर्थ्य ;
- * इतरांबरोबर आणि इतरांप्रीत्यर्थ संबंध प्रस्थापित करण्याची क्षमता ;
- * निसर्ग आणि अन्य प्राणिमात्रांबद्दल आपुलकी असण्याची क्षमता ;
- * आयुष्य खेळकरपणे आणि मजेत जगण्याची क्षमता ;
- * भौतिक आणि राजकीय पर्यावरणावर, या दोहोंवर ताबा मिळविण्याची क्षमता.

अन्य काहींच्या मते सबलीकरण ही एक अशी प्रक्रिया आहे की, ज्यामध्ये सावधानता, माहितीपूर्णता, क्षमताधिष्ठितता यांचा समावेश होतो. परिणामस्वरूप ग्रहणशक्ती, वाढीव सहभाग, प्रभावी निर्णयक्षमता, परिवर्तनीय कृतिशीलता यांचाही समावेश होतो. यामध्ये हवे ते प्राप्त करण्याची आणि आपल्या हितसंबंधांच्या संदर्भात इतरांवर प्रभाव पाडण्याची क्षमता, या गोष्टीही अंतर्भूत होत असतात.

सबलीकरणाची व्याख्या करताना बीना आगरवाल म्हणतात की, सत्ताहीनांना किंवा वंचित घटकांना आर्थिक, सामाजिक आणि

सबलीकरण ही प्रक्रिया विविध संघांवर आणि घटकांवर आधारित असते. हे घटक म्हणजे *ज्ञानात सुधारणा ; * विविध कौशल्यांचा विकास करणे आणि * एखाद्याचा समाजातील दर्जा सुधारणे हे होत. त्यामुळे सबलीकरण ही प्रक्रिया दीर्घकालीन आणि वेळखाऊ समजली जाते. सबलीकरण या संकल्पनेत सत्ताप्राप्ती सुलभ करणे आणि अशी सत्ता निर्माण करणे की, जी इतरांना प्रेरणा देऊन त्यांच्यातील पात्रतांचा आणि सामर्थ्यांचा व्यक्तीकडून किंवा समुहाकडून उपयोग करून घेऊन विकास करू शकेल हे अभिप्रेत आहे.

महिला सबलीकरण :

महिला सबलीकरण : महिलांच्या सबलीकरणाचा विचार करताना असे आढळून येते की, त्यांच्या जवळही पुरुषांप्रमाणेच इच्छाशक्ती, इच्छा आकांक्षावर ताबा ठेवण्याची क्षमता आणि निर्णय क्षमताही असते. परंतु त्यांच्या बाबतीत सामाजिक पाठिंब्याची उणोव आणि न्यूनता आढळून येते. संधी दिली तर त्याही पुरुषा इतक्याच कार्यक्षम आणि बलशाली बनू शकतात. त्यासाठी * पुरेसा सकस आहार ; * शैक्षणिक आणि सामाजिक

69

स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकासाच्या सह संबंधाचा अभ्यास

प्रा. बी.टी. पवार

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

कालिकादेवी कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,

शिरूर कासार जि.बीड

डॉ. काकासाहेब पोकळे

राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख

सौ. के. एस. के. महाविद्यालय, बीड.

प्रस्तावना :

प्राचीन काळापासून ते आज पर्यंत भारतीय जनते संबंधी कल्याणकारी विचार करणारी व्यवस्था म्हणून स्थानिक स्वशासनाकडे पाहिले जाते. स्थानिक स्वशासन संस्था जनतेच्या कल्याणाचे घोरण ठरवितात. त्या घोरणानुसार कार्यक्रम तयार करतात. ते कार्यक्रम जनतेच्या कल्याणासाठी अमलात आणतात.

सुशासन व्यवस्था निर्मितीचे बीज अंगुरण्याचे कार्य स्थानिक स्वशासन संस्था करता. या संस्था लोकशाही राष्ट्राची निर्मिती करतात. त्या खऱ्या लोकशाही शासन व्यवस्थेची पायाभरणी करण्याचे कार्य अत्यंत कुशलतेने करतात. कोणत्याही देशात कोणतीही शासन व्यवस्था अथवा राजवट भागविता येत नाहीत. स्थानिक जनतेच्या नागरी गरजा भागविण्यासाठी स्थानिक स्वशासन संस्थांची मदत घ्यावीच लागते. स्थानिक स्वशासनाचा कारभार, फाहिरा गुंतागुंतीचा असतो. कोणत्याही देशामध्ये अशा संस्थांची फारच मोठी अशी यंत्रणा असते. अशा संस्थांचे जाळे देशभर पसरलेले असते.

लोकशाही प्रधान देशात अनेक महत्त्वाची कार्ये या संस्थांकडून पार पाडली जातात. स्थानिक जनतेत स्वातंत्र्याचे नव चैतन्य निर्माण करण्याचे महान कार्य या संस्था करतात. नव नेतृत्वाची निर्मिती या संस्थांच्या माध्यमाद्वारे होत असते. स्थानिक नेतृत्वातूनच राष्ट्रीय नेतृत्व निर्माण होत असते.

स्थानिक कारभार सुरळीत चालविण्यासाठी एक अपरिहार्य यंत्रणा म्हणून स्थानिक स्वशासन संस्थांकडे वधिले जाते. केंद्रशासन अथवा राज्य शासनाचा एक अविभाज्य घटक म्हणून या संस्था अस्तित्वात आलेल्या आहेत.

कोणत्याही देशात काही विषय हे नागरीकांच्या जीवनाशी अत्यंत निगडीत असतात. त्या विषयांचा कारभार भौगोलिक व ऐतिहासिक दृष्टिकोनातून स्थानिक स्वशासन संस्थांचा पाहतात असे निरनिराळ्या देशातील अनुभवावरून सांगता येते. स्थानिक स्वरूपाची कार्ये करण्यासाठी त्या विशिष्ट स्थानिक क्षेत्रापुरती मर्यादित सत्ता किंवा अधिकार अशा संस्थाना मिळतात सर्व देशभर केंद्र सरकारची सत्ता असते. राज्यात राज्य सरकारची सत्ता असते. स्थानिक क्षेत्रापुरती स्थानिक शासनाची सत्ता असते. लोकसत्ता करण्यात लोकांच्या कल्याणकारी लोकांना सहभागी होण्यासाठी स्वशासनाची ही यंत्रणा उभारली जाते अशी यंत्रणा उभारण्यासाठी लोकप्रिय अशा निवडणुकीचे तत्व अंगीकारले जाते. सत्तेच्या विकेंद्रीकरणे अशा संस्थाना बळकटी आणली जाते.

जनतेचे सामाजिक, आर्थिक, राजकीय, विकास घडवून आणण्यासाठी या संस्था ग्रामीण समुदायाचा विकासाच्या कार्यात हातभार लावतात. स्थानिक जनतेला सेवा पुरवणे इत्यादी कार्ये स्थानिक स्वराज्य संस्था करतात. आर.एम. जॅक्सनने म्हटल्याप्रमाणे "नेहमीसाठीच स्थानिक शासन हे राष्ट्रीय शासनाचा आधार असते." स्थानिक स्वशासनाने अनेक राष्ट्रातून नवनवीन विचार प्रवाह जन्म दिला. अनेक देशातील जनतेच्या पारंपरिक जीवनावरील घट्ट पकड सैल करण्याचे कार्य या संस्थानी केले आहे.

स्थानिक स्वशासन संस्थांचे ग्रामीण जीवनावर फार मोठे परिणाम होतात. ग्रामीण जनतेचे जीवन सुखी करण्यासाठी व समृद्ध बनविण्यासाठी आधुनिक भारतातील प्रयोग महत्त्वपूर्ण आहेत. यालाच आपण पंचायत राज असे नाव देतो यालाच लोकशाही विकेंद्रीकरण असे म्हणतो यालाच सत्तेचे विकेंद्रीकरण असेही संबोधतात ग्रामीण क्षेत्रातील सामान्या जनतेच्या विकासासाठी एक नाविन्यपूर्ण यंत्रणा उभारणी गेली आहे. या यंत्रणेद्वारे कार्ये आणि जबाबदाऱ्या वाढविण्यात आल्या आहेत. या यंत्रणांच्या अधिकार कशाही रुंदावल्या गेल्या आहेत. जनतेच्या अपेक्षाही वाढल्या आहेत. त्यासाठी प्रशासकीय यंत्रणा ही विस्तारली आहे. जनतेप्रती असलेल्या उत्तरदायित्वालाही महत्त्व आले आहे. सामान्य जनतेच्या आशाकांक्षांची पूर्तता करण्यामध्ये व त्यांचा उत्कर्ष करण्यामध्ये संस्थाना महत्त्वाचे योगदान द्यावे लागणार आहे. पंचायत राज संस्थाद्वारे जोमाने विकास साधण्याचे कार्य देशाने हाती घेतले आहे.

स्थानिक स्वशासन संस्थांचा एकूण कार्यभाग पाहता त्यांच्या अभ्यासाला तेवढे महत्त्व दिले जात नाही. काळाची गरज म्हणून तरी या विषयांच्या अभ्यासाला शासन दरबारी सर्वच योग्य असे स्थान दिले पाहिजे. थोड्या बहुत संस्था या विषयांना अभ्यासाकडे अनेक वर्षांपासून लक्ष देत असल्यातरी त्याचे प्रयत्न तुज पुजे पडतात.

गृहितके :

1. ग्रामीण भारतातील राजकीय स्थिती सुधारण्यासाठी उपयोगी आहे.
2. आर्थिक स्थिती सुधारण्यासाठी यांची आवश्यकता आहे.
3. आरोग्यासाठी पुरक आहे.
4. सामाजिक बांधणी निर्माण होईल.
5. शैक्षणिक सुधारणा होतील.

उद्दिष्टे :

१. ग्रामीण भारताच्या राजकीय स्थितीचा अभ्यास करणे.
२. ग्रामीण जनतेची आर्थिक स्थिती अभ्यासणे.
३. ग्रामीण जीवन शैलीचा अभ्यास करणे.
४. आरोग्यासाठी दिलेल्या सुविधांचा अभ्यास करणे.
५. शैक्षणिक कार्याचा समाजाच्या प्रगतीसाठी उपयोग होतो काय? हे अभ्यासणे.
६. मागासवर्गीय समाजाचा विकास होईल काय याचा अभ्यास करणे.

संशोधन पद्धती :

स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकासाच्या सह संबंधाचा अभ्यास या संशोधनासाठी मी वर्णनात्मक संशोधन पद्धतीचा उपयोग केला आहे.

भारतातील स्थानिक स्वशासनाचा इतिहास :

भारतातील स्थानिक स्वशासन संस्थांचा इतिहास अत्यंत प्राचीन व वैभव संपन्न असा आहे. या संस्थांचे अस्तित्व वैदिक अस्तित्व वैदिक काळापासून आहे. वेद, पुराण, उपनिषद, धर्मग्रंथ, स्मृती, श्रुती, कथा, शासन व काही प्रवास वर्णनात्मक ग्रंथ इत्यादीमधून भारताच्या प्राचीन काळातील स्थानिक स्वशासनाचे पुरावे मिळतात. ग्रामीण स्थानिक स्वशासन आणि नागरी स्थानिक स्वशासन अशा दोन्ही प्रकारच्या शासन व्यवस्था स्थानिक कारभारासाठी भारतीयांचे जीवन व्यापून टाकले. भारतातील या संस्थांचा इतिहास म्हणजे शतकानुशतके संधपणे वाहणारा प्रवाह आहे. कालमानानुसार त्या प्रवाहास कधी अधिक वेग मिळाला तर काही वेळा त्या संस्थांचा इतिहास असा काही वेगाने उफाळून वाहू लागतो की, त्यामुळे व्यक्तीचे समाजाचे आणि राष्ट्राचे जीवन अमुंलाग्र बदलेले आढळते. भारतीयांच्या जीवनात पिलक्षण स्थान ग्रहण केले आहे.

रामायणाच्या अभ्यासातून हे स्पष्ट होते की, त्या काळात प्रशासन व्यवस्था, 'पुर' व 'जनपद' अशा दोन प्रकारात विभाजीत होती. ग्रामांचा उल्लेख वेगळा केला जात असे. परंतु ग्राम कोणत्याही 'जनपद' मध्ये सामावलेले असे. 'ग्राम', 'महाग्राम' व घोष यांचा उल्लेख रामायणात मिळतो. ग्रामाच्या जवळचे नगर, 'पट्टण' म्हणून ओळखले जाते. यांचा उपयोग जनपदाना बाजार हाट करण्यासाठी होत असे रामायणात श्रेणी आणि नियम अशा निवासी संघटनांचा उल्लेख येतो.

महाभारतातील 'शांतीपर्व' मधील वर्णनानुसार शासनाचा सर्वात छोटा घटक ग्राम हाच होता. ग्राम यांचा प्रमुखास 'ग्रामीक' असे म्हणून ओळखले जात. तो शासनाचा घटकाचा प्रमुख होता. मनुस्मृतीमध्ये यांचा उल्लेख आहे. तसेच कौटिल्याच्या अर्थशास्त्रात यांचा उल्लेख आढळतो. मध्ययुगीन काळ व ब्रिटीश काळात स्थानिक स्वशासनाचा विकास झालेला दिसून ब्रिटीश काळात लॉर्ड रिपन यांना त्याचे श्रेय दिले जाते.

स्थानिक स्वशासनाचा अर्थ :

१. ब्रिटीनिका विश्वकोष : स्थानिक स्वशासन म्हणजे पूर्ण राज्याऐवजी अंतर्गत दृष्ट्या छोट्या भूभागात व्यवस्थापन करून निर्णय घेऊन त्यांचे कार्यवाही करणारी सत्ता होय.
२. राज्यशास्त्र शब्द कोश : स्थानिक स्वशासन शासनाचा असा भाग असतो की, ज्याचा मुख्य संबंध कोणत्या तरी शहर अथवा क्षेत्रीय समितीच्या स्थानिक व्यवहारी असतो. साधारणपणे स्थानिक स्वशासन राज्य सरकार किंवा राष्ट्रीय सरकार कडून अधिकार प्राप्त सत्तेचा उपयोग करते त्यांना राज्य घटने अंतर्गत स्वतंत्र अधिकार प्राप्त झालेले असतात.
३. जॉन जे क्लार्क : स्थानिक शासन केंद्र शासन किंवा राज्य शासन यांचा एक भाग असतो. जे त्या विशेष भागातील अथवा जिल्ह्यातील रहिवाशांच्या गरजा लक्षात घेऊन आवश्यक वाटल्यास अशा कामाची जबाबदारी स्थानिक ठिकाणाच्या लोकांकडे सोपवून त्यावर केंद्राचे नियंत्रण स्थापित केले जाते.

आवश्यकता :

लोकशाही प्रणाली स्विकारलेल्या देशात स्थानिक स्वशासन संस्था असते. ही मुलभूत आवश्यकता समजली जाते. लोकशाही गणराज्यात लोकाभिमुख स्थानिक स्वशासन संस्था असणे हे त्या शासन व्यवस्थेच्या पूर्णपणे विकासाचे व समृद्धीचे लक्षण समजले जाते. लोकशाही संवर्धनासाठी व सामाजिक समस्या सोडवणे त्याच बरोबर सत्तेचे विकेंद्रीकरणासाठी लोकांची रुची निर्माण करणे. लोकशाहीतील दोष कमी करणे यासाठी स्थानिक स्वशासनाची आवश्यकता आहे.

महत्त्व :

एखाद्या गोष्टीचे महत्त्व त्या गोष्टीच्या उपयुक्ततेवरून ठरत असते. स्थानिक स्वशासन संस्थांची उपयुक्तता आज सर्व सामान्य ठरली आहे. ज्या देशातील स्थानिक स्वशासन संस्था चांगले कार्य करतात. त्या देशात सुराज्य प्रस्थापित होत असते. ज्या देशात मजबूत स्थानिक स्वशासन संस्था असतात. त्या देशात स्थिर व बळकट लोकशाही प्रधान शासन निर्माण होत असते. नागरीकांच्या गरजा भागविण्याचे काम करते. 'जेम्स ब्रुस' म्हणतात. स्थानिक स्वशासन संस्थामुळे देशात उत्तम नागरिक बनविण्यात मदत होते. सामान्य नागरिकांना कृतिशिल बनवण्यास व प्रमाणिकपणे कार्य करण्यास या संस्था स्फूर्ती आळस आणि स्वार्थ यांचा त्याग केल्यास या संस्था पृथ्वीवर स्वर्ग साकारू शकतात.

भारतीय स्वशासनाला राज्यघटनेचा आधार :

आज स्थानिक स्वशासनाचा दर्जा घटनात्मक बनला आहे. १९९३ त्या वेधानिक आधारावर होत्या. आज त्यांना घटनेत स्थान दिल्यामुळे त्या आज घटनात्मक बनल्या आहेत. यापूर्वी घटनेच्या कलम ४० मध्ये राज्याने या संस्था निर्माण करण्याची निती स्विकारावी ऐवढा उल्लेख होता. केंद्र आणि राज्य यांच्या अधिकारांच्या विभागणीत स्थानिक स्वशासन हा विषय राज्य सुचित समाविष्ट केल्याने ते सातव्या परिशिष्टात आढळते.

ग्रामीण स्थानिक स्वशासनासाठी ७३ वी घटनादुरुस्ती झाली आहे. 'पंचायत राज' संबंधीची ही घटना दुरुस्ती असून डिसेंबर १९९२ ला दोन्ही सभागृहांनी मान्यता दिली असून घटक राज्यांनी मान्यता दिली आहे. २० एप्रिल १९९३ पासून त्यांची अंमलबजावणी सुरु झाली या घटनादुरुस्तीने राज्यघटनेत भाग १ समाविष्ट करून कलम २४२ ते २४३ ओ एकाच १५ कलमे या कलमाचा समावेश केला आहे. त्यासाठी ११ वे परिशिष्ट जोडले आहेत.

स्थानिक स्वशासनातील नेतृत्व :

स्थानिक स्वशासन संस्था सामान्य जनतेलाच केवळ राजकीय प्रशिक्षणाचे पाठ देतात असे नव्हे तर या जनतेचे नेतृत्व करणाऱ्या वर्गाला देखील प्रशिक्षण देतात उभरत्या नेतृत्वाचे भरण पोषण करण्यात या संस्थांचे योगदान महत्त्वपूर्ण मानले जाते. एवढेच नव्हे तर अगदी सामान्य माणसातही नेतृत्वाचे गुण संवर्धित करण्यात या संस्था अग्रेसर ठरल्या आहेत. या संस्थातून कार्य करणाऱ्याला राजकारणाचे आणि प्रशासनाचे अनुभव येतात. अनेक गोष्टींचे ज्ञान मिळते हा अनुभव व ज्ञान हे नेत्यांना राज्य व राष्ट्रीय पातळीवर नेतृत्व करताना उपयोगी पडते. भारतातील नव्हे तर जगातील अनेक थोर व्यक्ती ज्यांनी राजकारणात लौकिक प्राप्त केला आहे. अशा विमुक्तीचे कार्य स्थानिक स्वशासन संस्थातूनच सुरु झाले. विन्स्टन चर्चिल, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचंद्र बोस, लाला लजपतराय, सरदार वल्लभभाई पटेल, फिरोजशाह मेहता, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, वसंतराव नाईक, शिवराज पाटील चाकुरकर, विलासराव देशमुख अशा अनेक मान्यवरांनी नामावली देता येईल. त्याचे सार्वजनिक जीवन स्थानिक स्वशासनाच्या माध्यमातून सुरु झाले. प्रो लॉस्की तर म्हणतात की, अशा व्यक्तीनाच केंद्रीय अथवा राज्य सरकारात प्रतिनिधीच्या रुपात काम करण्याचा अधिकार मिळाला पाहिजे की, ज्यांनी कमीत कमी तत्पूर्वी तीन वर्षे स्थानिक स्वशासन संस्थातून प्रतिनिधीच्या रुपात कार्य केलेले असले पाहिजे. सामाजिक जीवनाशी सुसंगत विचार प्रवाह निर्माण झाल्यास या वादवीत नवीन नेतृत्व निर्माण होऊ शकते. हे नेतृत्व रुढी, परंपरामध्ये न दबता, जुनी जळमटे बाजूला सारून जीवनाकडे निकोप वृत्तीने पाहणाऱ्या उदयोन्मुख युवा पिढीतून निर्माण होऊ शकेल. राजकीय जीवना बरोबरच सामाजिक जीवनही गतिमान बनवून विधायक दृष्टी ठेवणारे नेतृत्व निर्माण होईल अशा बाळगली पाहिजे.

ग्रामीण समुदायाचा विकास :

ग्राम सभा : पंचायतराज रचनेमध्ये सर्वात छोटा घटक म्हणून ग्रामसभा ओळखली जाते. संपूर्ण शासनाच्या ग्रामीण क्षेत्रातील योजना व विकासाची स्वप्ने साकारण्याचा हा मूलभूत घटक आहे. ७३ व्या घटनादुरुस्तीने ग्रामसभेला घटनात्मक दर्जा दिला आहे. गावातील प्रत्येक प्रौढ स्त्री पुरुषांचा समावेश ग्राम सभेत होतो. ग्रामपंचायत हा स्वायत्त घटक निर्माण करणारी ग्राम सभाच असते. व्याख्या ग्रामसभा म्हणजे गाव पातळीवरील पंचायत क्षेत्रामध्ये अंतर्भूत असलेल्या एखाद्या गावाशी संबंधित असलेल्या मतदार यादीत ज्यांची नावे नोंदविण्यात आलेली असतील अशा व्यक्तींची मिळून बनलेली संस्था होय.

पुढील कलम २४३ क या स्वतंत्र कलमात म्हटले आहे की, ग्रामसभा, गावपातळीवर राज्याच्या कायदेमंडळाने कायदा करून ठरवून दिलेली कार्ये पूर्ण करील आणि अधिकारांचा वापर करील, म्हणजे या कलमाद्वारे ग्रामसभेला भारतीय राज्यघटनेनुसार अधिकार प्राप्त झाले आहेत. त्याचप्रमाणे कर्तव्य ही पार पाडावी लागतात.

राज्यघटनेचे २४३(ख) व २४३(क) या कलमाआधारे असे स्पष्ट नमुद करता येते की, ग्रामसभेला घटनात्मक दर्जा तर प्राप्त झाला आहेच शिवाय या दर्जाचे स्वरूप देशपातळीवर लोकसभा किंवा राज्यपातळीवर विधानसभा यांच्यासारखे आहे. त्या प्रकारचा दर्जा गाव पातळीवर ग्राम सभेला प्राप्त झाला आहे. यामुळे ७३ वी घटना दुरुस्ती ही एक ऐतिहासिक बदल घडवून आणणारी घटना दुरुस्ती ठरते.

ग्रामसभा ही लोकसभा व विधानसभा यापेक्षाही श्रेष्ठ आहे. गावातील प्रत्येक मतदार हा कोणतेही निवडणूक न लढवता संसद सदस्याप्रमाणे अथवा आमदाराप्रमाणे ग्रामसभेच्या कार्यात भाग घेऊ शकतो. 'मतदार हा आमदार' आहे. ही जाणीव या ग्रामसभेच्या सदस्यांना होणे किती आवश्यक आहे. हे यावरून स्पष्ट होते.

२. त्रिस्तरीय पद्धती : या कायद्याप्रमाणे प्रत्येक राज्यात ग्रामस्तर आणि मध्यम स्तर, जिल्हा स्तर अशा त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्थेची तरतुद केली गेली आहे. अशा प्रकारे हा कायदा देशभरातील पंचायतीराज व्यवस्थेत एक समानता आणतो.

३. अध्यक्ष आणि सदस्य यांची निवड : ग्रामस्तर, मध्यम स्तर आणि जिल्हा स्तरावरील पंचायतीमधील सर्व सदस्य आणि अध्यक्ष यांची लोकाकडून प्रत्यक्ष पद्धतीने निवड केली जाईल अशी तरतुद आहे. मध्यम आणि जिल्हा स्तरावरील पंचायतीचे निर्वाचीत सदस्य त्यांच्यापैकी एकाचा अप्रत्यक्ष पद्धतीने अध्यक्षपदी निवड करतील. अशीही तरतुद आहे. परंतु ग्रामस्तरावरील पंचायतीच्या अध्यक्षाची निवड राज्य विधीमंडळ ठरवेल त्या पद्धतीने होईल.

४. जागामध्ये आरक्षण : तिन्ही स्तरावरील प्रत्येक पंचायतीत पंचायत क्षेत्रातील एकूण लोकसंख्येपैकी अनुसूधित जाती व जमातीच्या लोकसंख्येच्या प्रमाणात त्यासाठी जागा आरक्षित असतील. अशी कायदयात तरतुद आहे. या व्यक्तिरिक्त राज्य विधीमंडळ ग्राम किंवा इतर स्तरावरील पंचायतीचे अध्यक्षपद अनुसूधित जाती व अनुसूधित जमातीसाठी आरक्षित ठेवू शकतो. अशी कायदयात तरतुद आहे. शिवाय प्रत्येक स्तरावरील एकूण अध्यक्षपदांपैकी किमान एक- तृतीयांश पदे महिलासाठी आरक्षित असतील या कायदयाने कोणत्याही स्तरावर पंचायती जागा किंवा अध्यक्षपदे मागासवर्गीयांसाठी आरक्षित ठेवण्यांची तरतुद करण्याचा अधिकार राज्य विधीमंडळाला देण्यात आला आहे.

५. पंचायतीचा कार्यकाल : प्रत्येक स्तरावरील पंचायतीचा कार्यकाल पाच वर्ष असेल परंतु कार्यकाल संपण्यापूर्वी पंचायत विसर्जित करता येते.

६. अपात्रता : जर ती संबंधित राज्याच्या विधीमंडळाच्या निवडणुकीसाठी अमलात असलेल्या कोणत्याही कायदयानुसार अपात्र असेल.

जिल्हा परिषद - पंचायतराज ही स्थानिक स्वशासनाची त्रिस्तरीय शासन व्यवस्था आहे. या तीन स्तरांपैकी सर्वात वरिष्ठस्तर जिल्हा पातळीवर आहे. यालाच 'जिल्हा परिषद' असे संबोधले जाते. जिल्ह्याच्या विकासाची ही सर्वोच्च संस्था आहे. विकासाचा केंद्रबिंदू समजल्या जाणाऱ्या या संस्थेला पंचायतराज व्यवस्थेत अनन्य साधारण असे महत्व आहे. भारताच्या ग्रामीण भारताचा विकास करण्यासाठी ही व्यवस्था बलवतरॉय मेहता समितीने सुघविली आहे. विकासाची सर्व कार्ये संपन्न करून घेण्याची जबाबदारी जिल्हा परिषदेवर टाकण्यात आली आहे. त्यामुळे असे म्हणावे लागते की, जितक्या कार्ये क्षमतेने जिल्हा परिषद विकासाची कार्ये पार पाडील. तितक्या जलद गतीने ग्रामीण भागाचा विकास होईल. यासाठी महाराष्ट्र शासनाने महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समिती अधिनियम १९६१ हा कायदा केला आहे. त्याआधारे महाराष्ट्रातील जिल्हा परिषद व पंचायत समितीचा कारभार चालविला जातो.

जिल्हा परिषदेचे कार्य :

१. कृषी : कृषीविषयक कार्य करणे हे जिल्हा परिषदेची मूलभूत जबाबदारी आहे.
२. पशुसंवर्धन आणि दुग्धविकास : पशुसंवर्धासाठी पशुवैद्यकिय दवाखाने निर्माण करणे.
३. समाजकल्याण : मागासवर्गीयांचा विकास, शैक्षणिक, शिष्यवृत्ती देणे फी माफ करणे, वस्तीगृहाची स्थापना, शाळाची स्थापना त्यासाठी कर्ज उपलब्ध करून देणे त्यांना अर्थ साहय करणे.
४. मागासवर्गीयांचा आर्थिक विकास : शेतीची सामुग्री देणे त्यासाठी कर्ज उपलब्ध करून देणे. त्यांना अर्थसाहय करणे.
५. अस्पृश्यता निवारण : हरिजन सप्ताह साजरे करणे, झुनका भाकर कार्यक्रम, संवर्ग हरिजन यांच्यातील आंतरजातीय विवाहांना प्रोत्साहन देणे.
६. मागासवर्गीयांच्या कल्याणाचे कार्यक्रम : महिला, बालकांच्या कल्याणाचे कार्यक्रम व प्रकल्प बालवाड्या स्थापना समाज प्रबोधानांचे कार्यक्रम राबविणे. संस्कार केंद्र चालविणे सभागृह निर्माण करणे, घरे देणे, पिण्याच्या पाण्याची तरतुद करणे.
७. मागासवर्गीयांना प्रशिक्षण देणे : प्रशिक्षण शिबीर आयोजित करणे, तांत्रिक प्रशिक्षणाची सोय करणे. कुटीर रुग्णालये निर्माण करणे, प्राथमिक आरोग्य केंद्र निर्माण करणे, फिरती आरोग्य केंद्र, लस टोचने, शालेय आरोग्य सेवा इत्यादी.
८. वैद्यकिय - आयुर्वेदिक व सार्वजनिक आरोग्य : तालुका दवाखाने त्यांच्या दर्जात वाढ करणे, कुटीर रुग्णालये निर्माण करणे, प्राथमिक आरोग्य केंद्र निर्माण करणे, फिरती आरोग्य केंद्र, लस टोचने, शालेय आरोग्य सेवा इ.
९. इमारती व दळवळण : ग्रामीण रस्ते निर्माण करणे, पुलांचे बांधकाम ते सुस्थितीत ठेवणे त्याची दुरुस्ती करणे प्रशासकीय इमारती निर्माण करणे.
१०. सार्वजनिक आरोग्य अभियांत्रिकी : ग्रामीण पाणी पुरवठा करणे, समाजासाठी पाणी पुरवठा करणे.
११. प्रसिध्दी : फिरती प्रसिध्दी याने जिल्हा प्रदर्शन करमणुकीच्या कार्यक्रमाद्वारे प्रसिध्दी.
१२. सामुहिक विकास : समाज शिक्षण
१३. इतर महत्वाचे : आदर्श गांव लोकांचे आरोग्य सुविधा सोयी बाजार, धर्मशाळा, गावठाणा बसविणे, स्मशानभूमी, दफनभूमी, सहकार संस्था, पतसंस्था, जाहीर स्वागत समारंभ, तीर्थयात्राचा विकास.

पंचायतसमिती : पंचायतराज व्यवस्थेतील त्रिस्तरीय आकृती बंधात मधल्या स्तरावर 'पंचायत समिती' कार्यरत आहे. समुह विकासासाठी गटनिर्माण करण्यात आले होते. हा गट साधारणपणे तालुका स्तरावर निर्माण करण्यात आला होता. परंतु काही ठिकाणी असे ही होते की, एका विकास गटाचा विस्तार दुसऱ्या तालुक्यात अथवा तहसिलच्या कार्यक्षेत्रात पोहचत असे विकासासाठी फार लहान अथवा फार मोठे क्षेत्र घटक म्हणून नसावे या विचारामुळे पंचायत समिती हा विकासाचा एक घटक म्हणून स्वीकारण्यात आला.

पंचायत समितीचे कार्ये :

महाराष्ट्र जिल्हा परिषद व पंचायत समित्या अधिनियम १९६१ कायद्याच्या कलम १०८ अन्वये पंचायत समितीचे कार्ये सांगितली आहेत.

१. विकास योजनाचा एक संपूर्ण आराखडा तयार करणे.
२. गट अनुदानातून कोणत्याही कामास किंवा विकास योजनांस मंजूरी देणे.
३. पंचायत समितीच्या सभापती व गटातील इतर कोणत्याही पदाधिकाऱ्याकडे न सोपविलेल्या कार्ये अथवा अधिकार यांचा वापर करणे.
४. पंचायत समितीच्या क्षेत्रातील साधन संपत्तीचा जास्तीत जास्त उपयोग करून घेण्यासाठी आपल्या क्षेत्रात प्राप्त अनुदानातून घ्यावयाचा कामाचे नियोजन करणे.
५. जिल्हा परिषदेच्या विकास योजना व त्याची कार्ये जी त्या पंचायत समितीच्या क्षेत्रात संपन्न होणार असतील. त्या सर्व कामावर देखरेख ठेवणे.
६. जिल्हा परिषदेने मुद्यामहून सोपविलेली त्या गट क्षेत्रातील सर्व कार्येपार पाडणे.
७. पंचायत समितीला आपली कार्येपार पाडण्यासाठी आणि अधिकारांचा वापर करतांना जिल्हा परिषदेकडून प्राप्त झालेल्या सूचनांचा अंमलकरणे.

ग्रामपंचायत :

पंचायतराज व्यवस्थेमध्ये सर्वात खालच्या स्तरावर ग्रामपंचायत ही स्थानिक स्वशासन संस्था स्थापन करण्यात आली आहे. पंचायतराज व्यवस्थेचा आधारभूत घटक म्हणून ग्रामपंचायतीला फार मोठे महत्व प्राप्त झाले आहे. ग्रामीण विकासाचा प्रमुख घटक म्हणून ग्रामपंचायतीला अनन्य साधारण असे महत्व आहे. पंचायत राज व्यवस्थेतील हे दुहेरी महत्व लक्षात घेऊन केंद्रशासन ग्रामपंचायतीला अधिक अधिकार दिले महाराष्ट्रात ग्रामपंचायतीचा कारभार चालविण्यासाठी मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ हा अस्तित्वात आहे. मुंबई ग्रामपंचायत अधिनियम १९५८ कायद्यातील प्रशासकीय अधिकार आणि कर्तव्य या प्रकरणातील कलम ४५ तरतुदीनुसार गावातील ज्या कामा संबंधाने वाजवी तजवीज करणे हे पंचायतीचे कर्तव्य आहे असे कामे ग्राम सुचीत नमुद केलेली आहे. सदर विषय ७९ असून १२ प्रमुख भागाखाली येतात. कलम २४३ छ अधिकार दिले आहेत.

ग्रामपंचायतीचे कार्य :

१. कृषी २. पशुसंवर्धन ३. यने ४. समाजकल्याण ५. शिक्षण ६. वैद्यकीय सेवा आणि आरोग्य ७. इमारती व दळणवळण ८. पाटबंधारे ९. उद्योगधंदे व कुटीर उद्योग १०. सहकार ११. स्वसंरक्षण व ग्रामसंरक्षण १२. सामान्य प्रशासन

वरील प्रमाणे ग्रामीण समुदाया व स्थानिक स्वशासनाचा सह संबंध येतो. तो ग्रामीण समुदायाच्या विकासाची संलग्नीत आहेत त्यामुळे ते एकमेकांशी संबंधीत तर आहेतच शिवाय ते परस्परावर परावलंबीत आहेत त्यामुळे ते वेगळे कार्य करू शकत नाही. त्यासाठी स्थानिक स्वराज्य संस्था आणि ग्राम विकास याचा सह संबंधावरच ग्रामीण समुदायाचा विकास अवलंबून आहे.

निष्कर्ष :

भारतीय लोकशाहीमध्ये सत्ता विभाजनाच्या सिध्दातानुसार सत्तेचे विकेंद्रीकरण करण्यात आले. कार्यकारी मंडळ, कायदेमंडळ, न्याय मंडळ हे कार्यानुसार वेगळे करण्यात आले. केंद्र सरकार भारतामध्ये सर्वोच्च स्थानी त्यानंतर राज्यांना स्थान देण्यात आले. ग्रामीण भागात स्थानिक स्वशासन यांना महत्व देण्यात आले. त्यानुसार भारतीय लोकशाहीचा शेवटचा टोक म्हणजे ग्रामपंचायत ग्रामपंचायतीच्या यतीने ज्या सुविधा लोकांना पुरविल्या जातात. त्यावरून आपणास असे म्हणता येईल की ग्रामीण भागाचे प्रगतीचे चित्र या स्थानिक संस्थेमुळे निर्माण झाले भारतातील ग्रामीण जनतेचा सामाजिक, आर्थिक व राजकीय विकास हे या संस्थेमुळे झालेले आहे. या ग्रामीण जनता ही आज शिक्षणामुळे जागृत होत आहे. व प्रत्येक भारतीय नागरीक आपल्या अधिकारांच्या बाबत जागृत असल्यामुळे प्रगती होत आहे. हे भारतीय लोकशाहीसाठी शुभ संकेत आहेत.

संदर्भग्रंथ सूची :

१. Panchyatiraj in India- Rajeshwar Dayal
२. Panchyatiraj in India- R.L. Khanna
३. Local Government in India- M.P. Sharma.
४. Leadership in Panchyatiraj- Dr. Arjunrao Darshankar
५. डॉ. रमेश एखेडीकर- भारतातील स्थानिक स्वराज्य संस्था, विद्याबुक्स पब्लिशर्स, औरंगाबाद, जून १९९९.
६. प्रा. के. आर. वंग- भारतातील स्थानिक स्वशासन विशेष संदर्भ- महाराष्ट्र राज्य, श्री मंगेश प्रकाशन, २३, नवी रामदास पेठ नागपूर, २००५.
७. डॉ. जी. एस. वडे, भारतीय स्थानिक स्वराज्य संस्था, उद्गम आणि विकास.
८. डॉ. शांताराम भोगले- भारतातील स्थानिक शासन
९. डॉ. अर्जुन दर्शनकर- पंचायतराज व नागरी प्रशासन.



MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Special Issue August 2019

vidyawarta®

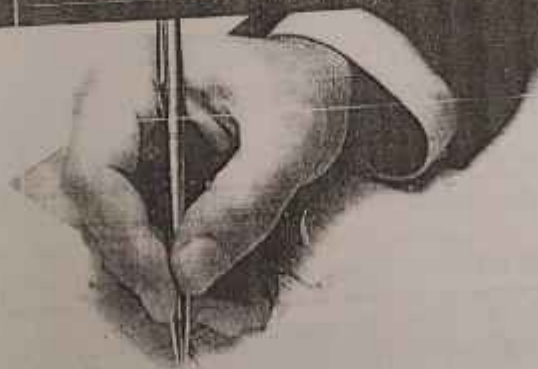
Peer Reviewed International Refereed Research Journal

**Bharatiya Shikshan Prasarak Sanstha's
Kholeshwar Mahavidyalaya, Ambajogai**

Is Organized One day National Conference in Association with
Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

On

**Recent Trends and Issues
in Economics, Commerce
& Management in India**



Editor's

Assit. Prof. Subhash S. Patekar

Dr. Arvind P. Rayalwar

Index

- 01) Recent Trends in E-Banking
Dr. H. G. Vidhate, Beed ||18
- 02) An Analysis of Sustainability of Digital Economy in Select Member Countries ...
Dr. Devendra Jarwal, University of Delhi ||22
- 03) Changing Face n Indian Banking
Dr. Madrewar S. G., Paithan ||26
- 04) Changing Scenario and Challenges of Commerce Education in India
Dr. Jitendra Ahirrao, Jalna ||29
- 05) Recent Trends in Indian Banking Sector
Dr. Vikas M. Choudhari, Aurangabad ||33
- 06) A Review : Preventive Measures in Mobile Banking
Mr. Bhargavram Y. Choudhari, Beed ||39
- 07) Recent Trends & Development of e-banking : Challenges & Opportunities
Dr. Rajesh B. Lahane, Aurangabad ||43
- 08) To Study Deposit Mobilization of District Central Co-operative Banks in ...
Mr. Binniwale R. K., Dist. Nasik ||48
- 09) Impact of Significance of Corporate Social Responsibility in Current Scenario
Dr. Anand V. Chaudhary, Aurangabad, Maharashtra ||50
- 10) Recent Trends in Agriculture sector and Banking
Prof. Santosh Bansirao Gaikwad, Maregaon ||54
- 11) A study on India Economic policy Through Special Economic Zone and ...
Dr. Bharat Pagare, Dist Aurangabad ||56
- 12) DIGITAL MARKETING IN INDIA
Dr. Anurath Chandre, Dist. Beed (Maharashtra) ||61
- 13) GST in India: Impact and emerging challenges
Dr. Rupa D. Jaju (Gilda) & Dr. Prof. Vani N. Laturkar, Nanded ||64

The emerging trends in Digital Marketing in India

Dr. Adgaonkar Ganesh Sudhakar

Dept. of Commerce,

Kalikadevi Arts, Commerce and Science

College Shirur kasar Dist. Beed

Abstract

Digital Marketing is a piece of a Digital Economy. India is a quick moving country towards the digital economy and this development has been quickened with the demonetization of the Indian Currency in the last quarter of the year 2016. With it, different government digital payment promotion schemes have been propelled. The digital market requires digital promotion and marketing strategies. The telecom segment likewise assuming an imperative part of the digital marketing development. Late dispatch of dependence telecom Jio with the free and boundless web offices has played a progressive role. The other noticeable organizations like Airtel, Idea, Vodafone, and BSNL are additionally offering appealing web designs. Indian banks are additionally giving more client amicable and secure money transaction services. The Presently Indian shopper is investing more energy in online networking and web surfing. In this manner, the permeability of any item is more through the digital medium than conventional marketing strategies. Digital marketing systems incorporate Content Marketing, AdWords, SEO, Social Media, Email Marketing and Website Design. The key player's part players and framework suppliers in Digitization of an Economy are government, managing an accounting framework, Shopping

used. Individual companies define CSR in their own limited set of practices and references. As a result, all the activities undertaken in the name of CSR are largely altruistic or altruistic extensions. It seems that CSR is developing in the area of profit distribution in India. There is a need to understand the business and increase the social development of the business as an integral part of the good social business with active participation.

References:

- <http://timesfoundation.indiatimes.com/articleshow/4662536.cms>, accessed on 01.11.2011
- Anghel, L., Grigore, G. and Rosca, M. (2011). Cause-Related Marketing, Part of Corporate Social Responsibility and its Influence on Consumers' Attitude, *Amfiteatru Economic*, 13(29), Pp. 72-85.
- Bhattacharya, C., Sen, S., and Korschun, J. (2007). Corporate Social Responsibility as an Integral Marketing Strategy, *Sloan Management Review*, Fall 2007, Pp. 1-29.
- D'Amato, A., Henderson, S. and Florence, J. (2009). Corporate Social Responsibility and Sustainable Business. A guide to leadership tasks and functions, Greensboro: Centre for Creative Leadership.
- EUCAM. (2009). Corporate Social Responsibility: A New Marketing Tool, Trends in Alcohol marketing. Netherlands: European Center for Monitoring Alcohol Marketing.
- Verrghese, A. (n.d.). Partnerships and Cause-related Marketing. Building Brands for the Future, [online]. Available at: http://brandchannel.com/papers_review.asp?sp_id=583 [Accessed September 27 2013].
- Grant Thornton. (2008). Corporate Social Responsibility: A Necessity Not a Choice. Bangkok: Author
- Redington, Ian. (2005). Making CSR happen: The contribution of people management. Chartered Institute of Personnel and Development (CIPD). London, UK

Portal in India, Internet Service Providers and in India

Software Service Providers.

Introduction

The world is changing, and technology is taking the lead. Today, everything is going digital — entertainment, health, real estate, banking and even currencies. This is, however, understandable. India 627 million, of the population is online.

With everything turning to digital, it means companies are also jumping online to market their businesses. And to survive the challenges of digital marketing, brands need to keep up with the latest trends. Successfully reaching one's target audience is no longer just putting out TV and print ads. These days, social media is the new arena of digital marketers, as 3.3 billion people are active social media users.

Notably, according to January 2018 data (subscription required), 24% of the 5,700 global marketers who were surveyed revealed that social media has been an important part of their marketing for the past five years.

To keep up with the ever-changing scene, digital marketing experts need to stay in step with the evolving tech trends. Social media marketing companies like ours work tirelessly to research consumers and what makes them engage with brands. We try to find the best online solutions that will cater to our clients' end-users' queries in the easiest and most cost-efficient way possible — be it by developing new technology or adapting to trends. After much research, here are the leading digital marketing trends that are paving the way in 2018.

Defining digital marketing

The use of the Internet and other digital media and technology to support 'modern marketing' has given rise to a bewildering range of labels and jargon created by both academics and professionals. It has been called digital marketing, Internet marketing, e-marketing and web marketing and these alternative terms have varied through time...

Objectives :

To study the scope of digital marketing

To Study Top Digital Marketing Trends Research Methodology

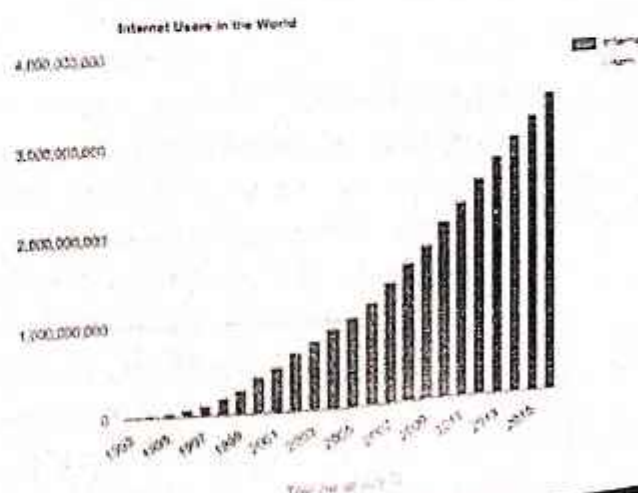
Data is going to be collected through Annual Report of Companies, Books, Journals, Magazines and other related literature.

Scope of Digital Marketing in India

Digital marketing is a marketing method to promote products online. So in simple terms, we can say that we are promoting our products to customers who are using the internet. Many concepts of traditional marketing are applicable to digital marketing. In every era, marketing has evolved based on what the customer is using. If you go back in history, you can see that at times when customers used Radio, it gave birth to radio advertising and marketing. Next, we got the boom of televisions; it is one of the widely used device globally, which allowed the companies to reach a mass audience with TV ads. Even today TV advertising is one of the most used advertising strategies for companies. Since the boom of the Internet, more customers started using the Internet, which gave birth to a new era of marketing originally called Internet marketing, which is now called Digital Marketing.

Why companies use digital marketing Internet Users:

As per the internet usage stats, as of July 2017, 50% of the world population is using the internet. (i.e) 3.42 Billion Users. The total number of users in 1995 was less than 1% of the world population.



change in India towards the digitalization. The consumer are looking and searching more on internet to find the best deal from the sellers around India. Digital marketing such as search engine optimization (SEO), search engine marketing (SEM), content marketing, influencer marketing, content automation, e-commerce marketing, campaign marketing, and social media marketing, social media optimization, e-mail direct marketing, display advertising, e-books, optical disks and games, are becoming more and more common in our advancing technology. Today we all are connected through whatsapp and facebook and the increasing use of social media is creating new opportunities for digital marketers to attract the customers through digital platform. Digital marketing is cost effective and having a great commercial impact on the business..

References

1. Pratik Dholakiya (14 April 2015). "3 Digital Marketing Channels That Work for Every Advertiser"
2. Mohammed R., "Internet Marketing , McGraw Hill, New York, Vol. 4, 2001
3. Devi .C.S and Anita.M (2013) : "E marketing challenges and opportunities pg. 96 – 105 retrieved from www.ijssrm.in
4. Shanker, Ravi (1998), Marketing on the Net, (Dissertation), Banaras Hindu University, Varanasi, India.
5. Karakaya F., T.E. Charlton., "Electronic Commerce: Current and Future Practices , Managerial Finance, Vol. 27 (7), pp. 42-53, 2006
6. Krishnamurthy, S. & Singh, N. (2005), The International E-Marketing Framework (IEMF):
7. Reed y, J., Schullo, S., And Zimmerman, K. (2000), Electronic Marketing (Integrating Electronic Resources Into The Marketing Process), Harcourt College Publishers
8. Boudreau, M.-C. & Watson, R. T. (2006), Internet Advertising Strategy Alignment Internet Research, 16, 23
9. www.google.co.in

Mode of digital payments in retails: progress and challenges

Dr. G.M. Morey

Assistant Professor, Dept . Of commerce,
Arts, commerce & Science College Taloda,
Dist- Nandurbar

Abstract: In India retail sectors is very wide. It is one of the pillars of Indian economy. The shares of retail sector in GDP are up to 10 percent and employment generated around 8 percent. the retail sector of India is divided into two types. Unorganized retail and organized retail. Where unorganized trade forms around 93 per cent of the overall trade and remaining shares of organized retail trade.

The online retail trade is growing very fast in India. One of the major cause to growing online retailing is the e-commerce. E-commerce change the face of Indian retail sector. In the e-commerce apply the online business function and payment methods therefor day by day the new digital payment is arising in the e-commerce and that payment method adopted in retail trade also. Therefor in the present paper analysis the digital payment in retail sector.

Keyword- Digital Payment, Methods, Digital Retail.

Introduction –

E-commerce growing in the India from past two decades. Now all sectors acquires form e-commerce so retail sector are not except. E-commerce creates new revolution in retail sector. The online retail business is growing very fast. Foreign investment and organized retailer change the look of traditional retail sector and

VOL. 5
SPECIAL ISSUE 1
SEPTEMBER 2019



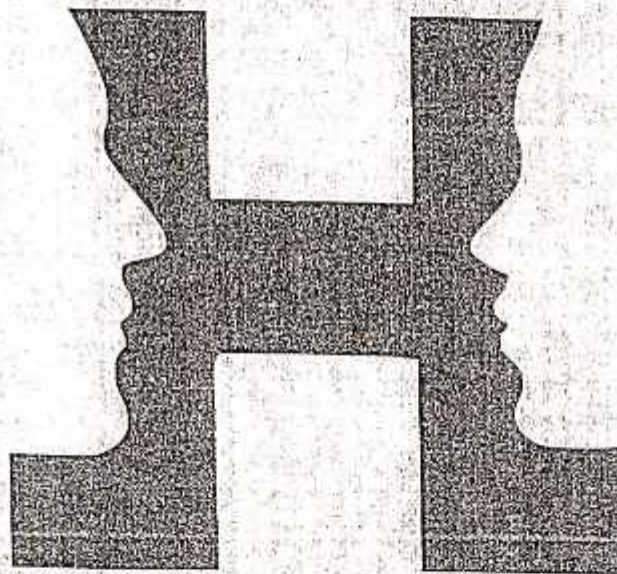
ISSN:2454-5503
IMPACT FACTOR: 4.197 (IIJIF)

CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES

A Peer Reviewed Bimonthly International Journal

Special Issue on the Occasion of NAAC sponsored seminar on
Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning

23rd September, 2019



Issue Editors

Dr Vishnu Patil

Dr Avinash Dhotre

Organized by

Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
DEOGIRI COLLEGE, AURANGABAD



CHRONICLE OF HUMANITIES AND CULTURAL STUDIES (CHCS)

A BIMONTHLY REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL

*Special Issue on the Occasion of
NAAC sponsored seminar on
Use of Technology and E-Content in Teaching and Learning*

23rd September, 2019



Organized by
Internal Quality Assurance Cell (IQAC)
Deogiri College, Aurangabad



Issue Editors

Dr. Vishnu Patil
Dr. Avinash Dhotre

Mahatma Gandhi Education and Welfare Society's
**CENTRE FOR HUMANITIES AND
CULTURAL STUDIES, KALYAN (W)**
www.mgsociety.in +91 8329000732 Email: chcskalyan@gmail.com

27. Role of ICT in the Enhancement of English Language Teaching	Dr R A Landage	96
28. Electronic Media as an Alternative Media for Minorities Dalits in India: Prospects and challenges	Dr P B Pagare R A Garkwad	98
29. Teaching of English Prose and Poetry: A Technical Way	Dr D M More	102
30. Mobile Technologies and Applications: Facilitator of Teaching and Learning in Science	V S Suryawanshi A W Suryawanshi	105
31. An Impact of Effective Use of ICT for Improving the Quality of Teaching & Learning Process	V B Bhise, S B Garkwad, S M Luyale, S M Shende, V B Bhise & S A Chandrahekhar	110
32. Role of E-PG Pathshala In Teaching And Learning Sanskrit	Dr. Pradiya Komarte	112
33. Role of ICT in the Process of Teaching and Learning	Dr H S Adgaonkar	116
34. Training through Blended Mode in ICT for Effective Teaching Learning Process	H C Tokshi, T P Kulkarni, S V Lunte, P M Ambad, G S Nable & B Kulkarni, S P Bhise	119
35. Uses of Mobile Apps in Teaching and Learning	D A Yewale	122
36. Significance of ICT in Twenty First Century in Education: An overview	Dr S R Sawade	128
37. Innovations in Education Technology: Getting the Classroom Interactive	Dr M Y Suryawanshi	131
38. E-learning: Scope and Challenges in India	P M Bhople	133
39. Importance of Technology in Teaching and Learning Process	Dr Mohan Gurav	137
40. Rethinking the Optimization of Technology in Teaching Learning and Evaluation	Bhurat Sonar	140
41. NPTEL-A Source of E-Content	Dr S C Chawhanwale Dr S H Dhage	142
42. E-learning the Need of Today's Education	Dr V P Pagare Dr P N Bajaj	145
43. The Innovative Concept of Google Classroom	A K Paul	146
44. Evaluation of Utility of Technology Assisted Teaching Learning In Legal Education	Dr A N Kottapalle	149
45. Use of Interactive Whiteboard in Teaching-Learning	A N Ambad	152
46. Using Technology for Effective Teaching and Learning	Dr R Shesham, Dr K Thombay, Dr Phumme	154
47. Difficulties to implement the Massive Open Online Course at Rural Level	Dr V D Mahajan	157
48. MOOC आणि मराठी	श्री सीमा गावडे	159
49. प्रसारमाध्यमे व नविक कौशल्ये यांचे अभ्यासक्रमात स्थान	श्री प्रमोद म. कुंभार	161

Role of ICT in the Process of Teaching and Learning

Dr. Adgaonkar Ganesh Sudhakar

Dept. of Commerce
Kalikadevi Arts, Commerce and Science College Shirur (Kasar)
Tq. Shirur (Kasar), Dist. Beed

Abstract:

The use of ICT in teaching-learning method could be a comparatively new development and it's been the tutorial researchers' focus. The effective integration of this technology into room practices poses a challenge to lecturers and directors. This empirical study aimed toward searching for the factors influencing use of ICT to create teaching learning effective in higher establishments of learning in Asian country and characteristic the innovations that ICT has brought into teaching-learning process, particularly in higher institutions of learning in India. A survey was utilized and so as to by trial and error investigate the study. The findings of this study unconcealed that teaching employees and directors had a robust need to integrate ICT into teaching-learning processes. The innovations that ICT has brought in teaching learning process include: E-learning, e-communication, quick access to information, online student registration, online advertisement, reduced burden of keeping hardcopy, networking with resourceful persons, etc. However, the presence of these factors inflated the possibility of fantastic integration of ICT in teaching-learning method. Therefore, the coaching of teaching employees within the pedagogic problems and directors in administration ought to be inflated if lecturers and directors are to be convinced of the worth of using ICT in their teaching-learning process and administration.

Keywords :- Process, Teaching, Learning Application

Introduction : Technology is developed to solve problems associated with human need in more productive ways. If there is no problem to solve, the technology may not be developed and/or not adopted. Applying this principle to educational technology would mean that educational institution should create and adopt technologies that address educational problems, of which there are many. Furthermore, a technology will not be adopted by educators where there is no perceived need or productivity gain. This is what Lankshear, Snyder and Green (2000) refer to as the „workability“ principle. Therefore, when discussing applications of computer technology to education the question must always be asked, „what educational problem needs to be addressed? This question needs to be asked at all levels of decision making from the teacher planning a programme, to a school administrator purchasing hardware and software, to an educational system officer developing policy and strategic plans. At the teacher level the question becomes: am I satisfied with the educational opportunities I am able to offer children in school

classrooms? While teachers should never be completely satisfied, and they will always strive to do better, the question really is whether what they provide adequately develops the potential of the students and adequately prepares them for a productive life in the society. Many educators (for example National Centre for Vocational Education Research, 2002) and educational commentator (Muroch, 2001) believe that what is during the late 1970s and early 1980s, computers became more affordable to schools. The use of information and communication technology in schools is taken very seriously by governments and educational systems around the world. As educational systems move towards the mainstream use of ICT in teaching and learning there appear to be more critical steps and vital ingredients needed for the successful infusion of ICT into educational environments. Although stand alone computers have been in most schools for more than two decades now, networked ICT is relatively new for many schools as they continue to grapple with how to use ICT to enhance teaching and learning

environments. Since the development of the first computers many have argued that computers should be used to support learning. These arguments have amplified as computers have evolved into powerful relatively low cost technology available today. However, there is considerable debate over how computers should be used in schools (Riel, 1998). This paper focuses on the use of ICT in schools by students to support the processes of learning and teaching. It will aim to describe the ways in which teachers could and/or should facilitate student use of computer systems and how they can progress. This paper begins with a background to the use of computers in schools, touching on the rationale for computers in schools. This leads into a discussion of the professional development needs of teachers for the progression of using ICT in learning and teaching.

Objectives

To Find Role of ICT in the Process of Teaching and Learning

To Study importance of ICT in Education

Methodology:

This present study is based on secondary sources like books, Articles, Journals, Thesis, University News, Expert opinion and websites etc. The method used is Descriptive Analytic method

Significance of ICT in Teaching-Learning

Assessment

ICT has changed the education scenario in the last few decades by emerging as one of the most efficient tools used in the learning process, both by tutors and learners.

ICT has changed the face of education over the last few decades. "It has proved to be a boon to both the teachers and the learners. Looking for matter beyond the textbooks is no longer a challenge with respect to time and resources anymore."

Assisting in the growth of ICT learning in the country, several brands are ensuring to create options for educational institutions.

Recognizing the importance of digital literacy in rural India, in 2013 Samsung India launched a Smart Class initiative in collaboration with Navodaya Vidyalaya Samiti. The initiative is available across 500 Jawahar Navodaya Vidyalaya Schools, benefitting over 2.5 lakh students. The brand has imparted training to over 1,000 teachers on interacting technology.

Jawahar Navodaya Vidyalaya, feels "60 per cent of the students in our school are the first time users of technology or Smart Class".

Stating that students are now confident and the use of technology is helping our teaching also to a great

extent, he said: "Our results have improvement post-ICT."

"Smart Classes have helped one of our students in developing a mobile application. This app helps the user in calling his/her dear and near ones in case of any emergency just by using the app and that too by a single touch."

Lately, technology is playing a vital role to ensure effective and efficient assessment of learning. Modern technology is offering educators with a wide range of tools that can be used in the classroom.

ICT overpowering Traditional methods

Technology has brought in major changes in the way education is imparted. Teaching and learning process has evolved from being a one-sided activity to an active process involving exchange of ideas. Indulgence of various creative tools and techniques has made the process a collaborative initiative.

Students in today's classrooms are encouraged to participate actively in the learning process and become active producers of ideas and thoughts. "The students are equipped with the correct knowledge, skill and attitude to take full advantage of all the new opportunities that will be available for them in future."

Need and Importance of ICT in Education

"Smart technology" is the familiar terminology that is widely being used in every being's life. Smartphone, tablets, gadgets, smart televisions, etc., are the products of smart technology that have made human life smarter, easier and accessible. Smart technology has not only enhanced the way of living but also became an integrated part of everyone's life. The Information and Communication technology to be precise has become a driving force behind economic growth and a developmental tool as well.

ICT is an extended term for Information technology which is a technological source to make information available at the right time, right place in the right form to the right user. Earlier, one had to wait for the newspapers to get the information across the world. Now with the smarter technology, information can be accessed from anywhere using smart phones and gadgets. All this is made possible with the help of Information and Communication Technology. Information technology has been influencing our lives in the recent years in the fields of education, healthcare, and business. Going an extra mile, Information and communication technology in schools has had a major impact.

Information and communication technology in schools can be used as a school communication tool to improve student learning and better teaching techniques. With the advancement of technology in

education, schools adopt school communication software to transmit, store, share or exchange information. In this technological era, ICT in education has compelled many schools to get accustomed to smart technology. This school communication software uses computers, the internet, and multimedia as the medium of communication.

Computer-based learning: Computer-based learning is one of the modules of school communication tool that helps students to enhance their learning skills through computer aided education. It imparts computer knowledge in students and enables them to obtain large amounts of information from various websites. After two decades of introducing computers to schools, education has been revolutionized ever since then. It reduces time spent on mechanical tasks such as rewriting, producing graphs and increases the scope of searching. It not only helps in finding information but also in organizing information making it easier to share with others.

Internet: Internet tools like Email, social networks, newsgroups and video transmission have connected the world like never before. Students can now communicate using emails and social networking groups that provide knowledge based information. Distance learning online learning is also enabled through the internet. Students can learn online and also talk to experts online. Notes, readings, tutorials, assignments can be received by students from anywhere. The Internet provides major information in texts, audios, videos and graphics which can be accessed by the individual. Online learning allows students to interact with each other and faculty to interact with students.

Classroom Learning: With the introduction of ICT in education, classroom learning is one attribute that makes learning experiential and experimental to students. Students can listen to the instructor or teacher, receive visual cues through PowerPoint images, handouts or whiteboard lists and participate actively. This helps in immediate interaction and students have opportunities to ask questions and participate in live discussions. This school communication software module further benefits in building and maintaining personal and professional relationships as classrooms offer greater personal contact with other students and teachers.

Video conferencing: This is yet another medium of communication wherein students can communicate

with other students or instructors online. It enables students to become active participants in their own learning. Video Conferencing is a powerful communication tool that has the potential to change the way we deliver information to students. It is just one of the today's integrative technologies that empower students to prepare for a better future.

Here are few characteristics that make ICT in education a prominent school communication tool.

- It offers the wide variety of services.
- It is reliable and provides interactive learning experiences.
- It is flexible and provides comfortable learning.
- It motivates students to learn.
- It facilitates communication and promotes creativity.
- It also provides access to the digital library where information can be retrieved and stored beyond textbooks.

The use of ICT in education adds value to teaching and learning, by enhancing the effectiveness of learning. It added a dimension to learning that was not previously available. After the inception of ICT in schools, students found learning in a technology-enhanced environment more stimulating and engaging than in a traditional classroom environment.

My Classboard is yet another school communication tool that bridges the gap between teachers, parents, and students by using its school messenger module. Parents and teachers can interact with each other using this module emphasizing on transparency between the duo. Become a partner with us and build the communication between your teachers and parents with effectiveness and ease.

References :

1. Desai, S. (2010). Role of information communication technologies in education. Proceedings of the 4th National Conference; INDIACom-2010, Computing For Nation Development, New Delhi.
2. Jeelani, S. & Murthy, M. V. R. (2013). ICT based learning in higher education. Challenges and Opportunities. University News, 51(36)
3. Pernia, E.E. (2008). Strategy Framework for Promoting ICT Literacy
4. <https://www.myclasboard.com/blog/need-importance-ict-education/>
5. <https://digitallearning.eleisonline.com/2017/11/ict-defining-the-role-of-future-education-in-india/>
6. www.google.co.in



An efficient synthesis of imidazolines and benzimidazoles using Lanthanum (III) nitrate hexahydrate

*V. B. NINGDALE¹, S. B. LOMATE¹, S. K. TUPE²

Dept. of Chemistry¹ and Physics²

Kalikadevi Art's, Commerce and Science College, Shirur (Ka.) Dist. Beed [M. S.]-India

*E-mail: vijay_orgchem@yahoo.co.in / 02442-259590

ABSTRACT

Imidazolines and Benzimidazoles have been efficiently synthesized in high yields by treatment of 1,2-diamine with aldehydes using catalytic amount of $\text{La}(\text{NO}_3)_3 \cdot \text{H}_2\text{O}$ under mild reaction conditions. The key advantages of this protocol are short reaction time, high to excellent yields, simple work up, inexpensive catalyst and simple separation of pure product.

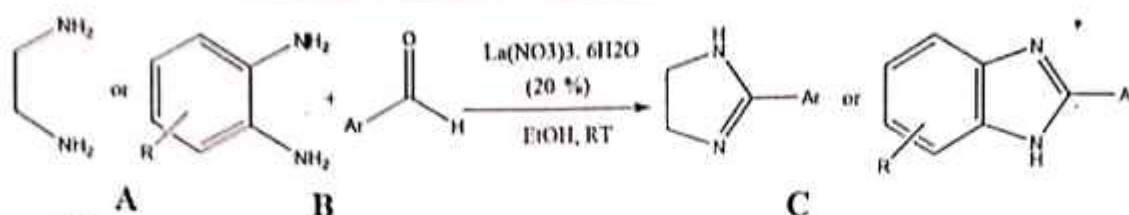
KEYWORDS: Aldehydes; imidazolines; benzimidazoles; Lanthanum (III) nitrate hexahydrate.

INTRODUCTION

The development of simple, efficient and general synthetic method for biological active compounds from readily available catalyst is one of the major challenges in organic synthesis.

The importance of imidazolines and benzimidazoles units arises, because they are found in many biologically active compounds.¹⁻² Imidazolines are biologically active pharmacophore and synthetic intermediates in medicinal chemistry.³⁻⁵ They are also used as chiral catalysts,⁶ chiral auxiliaries⁷ and ligands for asymmetric catalysis.⁸⁻⁹ As a continuation of our interest in the synthesis of imidazolines due to its broad spectrum of biological activities including antihyperglycemic,¹⁰⁻¹¹ antiinflammatory¹²⁻¹³ antihypertensive,¹⁴⁻¹⁵ anticancer¹⁶ and antihypercholesterolemic¹⁷ agents. In addition, the benzimidazole moiety shown excellent biological activity like antiulcers, antihypertensives, antivirals, antifungals, anticancers, antihistaminics, antibacterial, antitubercular, antiasthmatic, antidiabetic and antiprotozoal.¹⁸⁻²⁶ Recently, several methods have been developed, for the synthesis of benzimidazoles in presence of various catalyst such as sulfur/ultrasonic,²⁷ homogeneous Lewis acids,²⁸ $\text{I}_2 / \text{KI} / \text{K}_2\text{CO}_3$, H_2O_2 ,²⁹ pyridinium-p-toluenesulfonate,³⁰ ionic liquids,³¹ polyaniline-sulfate,³² (bromodimethyl)sulfonium bromide³³, Zeolite³⁴ and LaCl_3 .³⁵ However, all of the synthetic protocols reported so far suffer from disadvantages such as, use of organic solvents,^{28,30-32} harsh reaction conditions,²⁹⁻³³ excess temperature,²⁹ prolonged reaction times,³⁰⁻³² use of expensive reagents.²⁸⁻³¹ Therefore, there is a strong demand for a highly efficient and environmentally benign method.

Lanthanum (III) nitrate have recently attracted much attention in organic transformations due to its high acidity, thermal stability, low toxicity, low cost and good stability. Furthermore, current literature reveals that Lanthanum (III) nitrate has been utilized as an effective catalyst in the synthesis of 4-(3H)-quinazolinones under solvent-free conditions, chiral tetrahydroquinolino pyranose derivatives, chemoselective deprotection of acetonides, chemoselective protection of amines as N-benzyloxycarbonyl derivatives, acetylation of alcohols, phenols and amines with acetic anhydride and synthesis of α -amino nitriles.⁴⁵⁻⁵⁰



Scheme 1: Synthesis of imidazolines and benzimidazoles (A, B → Reactants and C → Product)

EXPERIMENTAL

Materials and Apparatus

The chemicals and solvents were purchased from commercial suppliers (Merck, S.D. fine and Spectrochem) and they were used without purification prior to use. Melting points were recorded by open tube capillary method and are uncorrected. The progress of the reaction and the purity of the compounds were monitored by thin layer chromatography (TLC), using analytical silica gel plates (Merck 60 F250). ^1H NMR and ^{13}C NMR spectra were recorded on 400 and 100 MHz, respectively. NMR spectra were obtained in $\text{DMSO}-d_6$ solutions and are reported as parts per million (ppm) downfield from tetramethylsilane (TMS) as internal standard and the coupling constants (J) are expressed in Hertz (Hz).

GENERAL PROCEDURE FOR THE SYNTHESIS OF IMIDAZOLINES / BENZIMIDAZOLINES

$\text{La}(\text{NO}_3)_3 \cdot 6\text{H}_2\text{O}$ (15 mol%) was added to a stirred solution of the mixture of substituted 1,2 diamine (1.1 mmol), aldehyde (1 mmol) in ethanol (5 mL) and the mixture was stirred at room temperature for appropriate time (Table 2). The progress of the reaction was monitored by thin layer chromatography (TLC) (Hexane: Ethyl acetate). After the reaction was completed, the pure products were isolated by filtration. The solid product was purified by recrystallization from ethanol.

Selected spectral data of compounds are given below.

2-(4-Bromophenyl)imidazoline: IR (KBr, cm^{-1}): Solid; 243–245°C v 3187 (NH), 2961 and 2941 (CH), 1608; ^1H NMR ($\text{DMSO}-d_6$, 400 MHz): δ 7.81–7.70 (m, 4H), 4.31 (br, 1H), 3.85 (s, 4H).

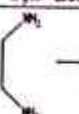
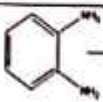
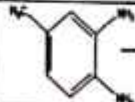
2-(p-Tolyl)-1H-benzimidazole: Solid; mp 264–266°C ^1H NMR ($\text{DMSO}-d_6$, 400 MHz) δ 12.83 (s, 1H), 8.08 (d, $J=7.8\text{Hz}$, 2H), 7.59 (s, 2H), 7.37 (d, $J=7.8\text{Hz}$, 2H), 7.21–7.19 (m, 2H), 2.39 (s, 3H).

RESULT AND DISCUSSION

To explore the use of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate as a catalyst, a reaction of benzaldehyde B and 1, 2 diamine A was conducted as a standard model reaction for the preparation of imidazolines and benzimidazoles (Scheme 1). The reaction in the absence of catalyst did not give any desired product. To determine the exact amount of the catalyst, we investigated the model reaction using different concentrations of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate (Table 1). During this study, we observed that 15 mol% Lanthanum (III) nitrate hexahydrate was proved to be an efficient catalyst to conduct the reaction smoothly. With these optimized reaction conditions, effect of different solvents such as methanol, dichloromethane, acetonitrile, THF, ethanol, aqueous ethanol and water was investigated. Among the tested solvents, ethanol was found to be superior over the other tested solvents in terms of both yield and reaction time for this transformation. Encouraged by this result, in order to build the generality of the reaction, various aromatic aldehydes, possessing electron-donating and electron-withdrawing groups were converted to 2-arylbenzothiazole derivatives in good to excellent yields. All the results are summarized in Table 1. In order to understand the efficiency and greenness of the method, we compared our results on the synthesis of imidazolines and benzimidazoles with the well known data from the literature. Many of the previously reported methodologies suffer from one or more disadvantages such

as requirement of excess amount of catalyst, high temperature, ultrasound irradiation, prolonged reaction time, and use of volatile and toxic organic solvents. Thus, the present method avoids the disadvantages of the previously reported methodologies.

Table 1: Synthesis of imidazolines and benzimidazoles

Entry	1,2-diamines	Aldehyde	Product (a-i)	Yield %	mp (°C)
1		R-C ₆ H ₄ -CHO	a 4-NO ₂ ; b 4-CH ₃ ; c 4-Br	96 93 91	228-231 179-181 243-245
2		R-C ₆ H ₄ -CHO	d 4-CH ₃ ; e H; f 4-OCH ₃	94 89 97	274-276 293-295 222-225
3		R-C ₆ H ₄ -CHO	g H; h 4-NO ₂ ; i 3-F	95 97 96	235-236 240-242 174-176

CONCLUSION

In summary, we have developed a facile, efficient and green method for the synthesis of imidazolines and benzimidazoles through condensation of aromatic aldehydes with 1,2 diamine in the presence of Lanthanum (III) nitrate hexahydrate under mild reaction conditions. Compare with the previously reported methodologies, the present protocol features simple work up, environmentally benign, high yields and use of catalytic amount of a cheap catalyst.

ACKNOWLEDGEMENT

Authors wish to thanks Principal, Kalikadevi ACS College, Shirur (Ka.) Dist. Beed for providing necessary laboratory facilities.

REFERENCES

- [1] Preston, P. N., *Chem. Rev.* 1974, 74, 279-314
- [2] Rondu, F.; Bihan, G. L.; Tounian, A. P.; Wang, X.; Lidy, S.; Touboul, E.; Lamouri, A.; Dive, G. J. H.; Pfeiffer, B.; Renard, P.; Guardiola-Lemaitre, B.; Manechez, D.; Penicaud, L.; Ktorza, A.; Godfroid, J.J., *J. Med. Chem.* 1997, 40, 3793-3803.
- [3] Hayashi, T.; Kishi, E.; Soloshonok, V. A.; Uozumi, Y. *Tetrahedron Lett.* 1996, 37, 4969-4972;
- [4] Jung, M. E.; Huang, A., *Org. Lett.* 2000, 2, 2659-2661;
- [5] Lin, Y. R.; Zhou, X. T.; Dai, L.X.; Sun, J., *J. Org. Chem.* 1997, 62, 1799-1803.
- [6] Isobe, T.; Fukuda, K.; Araki, Y.; Ishikawa, T., *Chem. Commun.* 2001, 243-244.
- [7] Langlois, Y.; Dalko, P. I., *J. Org. Chem.* 1998, 63, 8107-8117.
- [8] Menges, F.; Neuburger, M.; Pfaltz, A., *Org. Lett.* 2002, 4, 4713-4716;
- [9] Boland, N. A.; Casey, M.; Hynes, S. J.; Matthews, J. W.; Muller-Bunz, H.; Wilkes, P., *Org. Biomol. Chem.* 2004, 2, 1995-2002.
- [10] Doyle, M. E.; Egan, J. M., *Pharmacol. Rev.* 2003, 55, 105-131
- [11] Meidute-Abaraviciene, S.; Mosen, H.; Lundquist, I.; Salehi, A., *Acta Physiol.* 2009, 195, 375-383.

- [12] Ueno, M.; Imaizumi, K.; Sugita, T.; Takata, I.; Takeshita, M., *Int. J. Immunopharmacology*.1995, 17,597-603;
- [13] Kahlon, D. K.; Lansdell, T. A.; Fisk, J. S.; Tepe, J. J., *Bioorg. Med. Chem.* 2009, 17, 3093-3103.
- [14] Touzeau, F.; Arraylt, A.; Guillaumet, G.; Scalbert, E.; Pfeiffer, B.; Rettori, M. C.; Renard, P.; Merour, J. Y., *J. Med. Chem.* 2003,46 , 1962-1979;
- [15] Masajtis-Zagajewska, A.; Majer, J.; Nowicki, M., *Hypertens. Res.* 2010, 33, 348-353.
- [16] Sun, M.; Wu, X. Chen, J.; Cai, J.; Cao, M.; Ji, M., *Eur. J. Med. Chem.* 2010,45, 2299-2306.
- [17] Li, H.Y.; Drummond, S.; DeLucca, I.; Boswell, G. A., *Tetrahedron*, 1996, 52, 11153-11162.
- [18] Scott, L. J.; Dunn, C. J.; Mallarkey, G.; Sharpe, M. Esomeprazole, *Drugs* 2002, 62, 1503.
- [19] Spasov, A. A.; Yozhitsa, I. N.; Bugaeva, L. I.; Anisimova, V. A. , *Pharm. Chem. J.*, 1999,33, 232.
- [20] Kim, J. S.; Gatto, B.; Yu, C.; Liu, A.; Liu, L. F.; LaVoie, E. J., *J. Med. Chem.* 1996,39, 992.
- [21] Navarrete-Vázquez, G.; Rojano-Vilchis, M. M.; Yépez-Mulia, L.; Meléndez, V.; Gerena, L.;Hernández-Campos, A.; Castillo, R.; Hernández-Luis, F., *Eur. J. Med. Chem.* 2006, 41,135-141.
- [22] Mirkhani, V.; Moghadam, M.; Tangestaninejad, S.; Kargar, H.,*Tetrahedron Lett.*2006,47, 2129.
- [23] Curini, M.; Epifano, F.; Montanari, F.; Rosati, O.; Taccone, S. *Synlett* 2004, 1832.
- [24] Gogoi, P.; Konwar, D. *Tetrahedron Lett.* 2006 , 47, 79.
- [25] Hornberger, K. R.; Adjabeng, G. M.; Dickson, H. D.; Davis-Ward, R. G., *Tetrahedron Lett.* 2006, 47, 5359.
- [26] Nadaf, R. N.; Siddiqui, S. A.; Daniel, T.; Lahoti, R. J.; Srinivasan, K. V., *J. Mol. Catal. A: Chem.* 2004, 214, 155.
- [27] Srinivas, U.; Srinivas, C.; Narender, P.; Rao, V. J.; Palaniappan, S., *Catal. Commun.*2007, 8, 107.
- [28] Das, B.; Holla, H.; Srinivas, Y.,*Tetrahedron Lett.* 2007, 48, 61.
- [29] Hegedüüs, A.; Hell, Z.; Potor, A., *Synth Commun.* 2006, 36, 3625-3630.
- [30] Yekkirala V.; Sudhagani R. K.; Panuganti L.; *Org. and Med. Chemistry Lett.*, 2013,3:7



Dielectric Relaxation Study of Atarax and Propanol Binary Mixture Using Time Domain Reflectometry Technique

Dongare A. K.¹, Tupe S. K.², Sayyad S. B.³, Kumbharkhane A. C.⁴, Khirade P. W.⁵

¹Department of Physics, Vasantdada Patil College, Patoda.

²Department of Physics, Kalikadevi College, Shirur(K).

³Department of Physics, Milliyya Arts, Science & Management Science College, Beed.

⁴Department of Physics, S. R. T. M. University, Nanded.

⁵Department of Physics, Dr. B. A. M. University, Aurangabad.

Abstract

The dielectric relaxation study for atarax and propanol binary mixture has been carried out using the time domain reflectometry (T.D.R.) technique at temperature 283K, 288K, 293K and 298K and at different concentration. In the frequency range of 10MHz to 50 GHz. The dielectric parameter viz. static permittivity relaxation time has been determined using Debye model. Kirkwood correlation factor, excess permittivity, excess inverse relaxation time and thermodynamic parameters have been obtained from the complex permittivity spectra. The dielectric parameter shows change with temperature and concentration. The results obtained are used to interpret the nature and kind of solute-solvent interaction.

Key words: permittivity, relaxation time, excess properties, time domain reflectometry.

Introduction

The dielectric relaxation study is one of the ways to obtain information of solute solvent interaction in the binary solution. The chemicals used in the present work were psychopharmaceutical drug. Atarax is a benzodiazepine derivative. Chemically, atarax is 7-chloro-1, 3-dihydro-1-methyl-5-phenyl-2H-1, 4-benzodiazepin-2-one. It is a colorless crystalline compound. Atarax is indicated for the management of anxiety disorders or for the short term relief of the symptoms of anxiety. Anxiety or tension associated with the stress of everyday life usually does not require treatment with an anxiolytic. Atarax is a useful adjunct for the relief of skeletal muscle spasm due to reflex spasms to local pathology.^[1]

Atarax even though considered to be a safer drug, has high chance of drug abuse and act as a potent central nervous system depressant when taken along with other drugs resulting in stupor, coma and death. Paraquat poisoning has high mortality even in small quantity due to multi organ dysfunction syndrome. Surveillance of misuse should be undertaken in the current use. Effective mental health treatment, which often includes pharmacologic therapy.^[2]

Propanol is a primary alcohol with the formula $\text{CH}_3\text{CH}_2\text{CH}_2\text{OH}$ ($\text{C}_3\text{H}_8\text{O}$). This colorless liquid is also known as propan-1-ol, 1-propyl alcohol, *n*-propyl alcohol, and *n*-propanol. It is formed naturally in small amounts during many fermentation processes and used as a solvent in the pharmaceutical industry [3]

Experimental

A. Chemical and sample preparation

The chemical used in the present work is atarax and propanol, are of spectroscopic grade, obtained commercially with 99% purity and used without further purification. The solutions were prepared at six different compositions in steps of 20 % by volume. These volume fractions are converted to mole fractions for further calculations. Using this volume percentage the weight fraction is calculated^[4] as

$$X_A = \frac{V_A \rho_A}{[V_A \rho_A + (V_B \rho_B)]} \quad (1)$$

where, V_A and V_B are the volume and ρ_A and ρ_B is the density of liquid A (atarax) and B (propanol) respectively.

B. T.D.R. specification, Time domain reflectometry set up and data acquisition.

The Tektronix DSA 8300 sampling oscilloscope sampling main frame with the dual channel sampling module 80E10B has been used for time domain reflectometry. The sampling module provides 12ps incident and 15ps reflected rise time pulse. The coaxial cable used to feed pulse has 50 Ohm impedance, inner diameter of 0.28mm and outer diameter of 1.19mm. Sampling oscilloscope monitors changes in pulse after reflection from end of line. Reflected pulse without sample $R_1(t)$ and with sample $R_2(t)$ were recorded in time window of 5 ns and digitized in 2000 points. To minimize the signal to noise ratio the signal reflected is obtained from 512 samples after an optimum average of 100 times for each record. The subtraction $[p(t) = R_1(t) - R_2(t)]$ and addition $[q(t) = R_1(t) + R_2(t)]$ of these pulses are done in oscilloscope memory. These subtracted and added pulses are transferred to PC through compact disc for further analysis.^[5]

C. Data analysis



The time dependent data were processed to obtain complex reflection coefficient spectra, $\rho^*(\omega)$ over the frequency range from 10 MHz to 50 GHz using Fourier transformation^[6,7] as

$$\rho^*(\omega) = \left[\frac{c}{j\omega d} \right] \left[\frac{p(\omega)}{q(\omega)} \right] \quad (2)$$

Where, $p(\omega)$ and $q(\omega)$ are Fourier transforms of $[R_1(t) - R_2(t)]$ and $[R_1(t) + R_2(t)]$, respectively. C is the velocity of light, ω is angular frequency and d is the effective pin length and $j = \text{root } (-1)$. The complex permittivity spectra^[8] $\epsilon^*(\omega)$ were obtained from reflection coefficient spectra $\rho^*(\omega)$ by applying a bilinear calibration method. The experimental values of $\epsilon^*(\omega)$ are fitted by Debye equation^[9].

$$\epsilon^*(\omega) = \epsilon_\infty + \frac{\epsilon_0 - \epsilon_\infty}{1 + j\omega\tau} \quad (3)$$

where, ϵ_0 , ϵ_∞ and τ as fitting parameters. The value of ϵ_∞ was kept to be constant as the fitting parameters are not sensitive to ϵ_∞ . A non-linear least squares fit method^[10,11] used to determine the values of dielectric parameters.

Result and Discussion

A. Permittivity and Relaxation Time

Table: 1. Temperature dependent dielectric parameters for binary mixture of Atarax + Propanol.

Mole Fraction of Propanol	283 K	288 K	293 K	298 K
	ϵ_s			
0	63.4	63.55	62.58	61.44
0.5765	41.52	41.77	41.69	42.36
0.7840	37.58	37.37	39.87	41.89
0.8909	36.37	32.86	34.91	33.36
0.9561	28.93	28.13	27.61	26.24
1	25.71	24.39	24.41	23.82
	τ (ps)			
0	105	105.2	105.4	105.5
0.5765	86.14	86.18	81.63	81.77
0.7840	107.1	91.18	86.05	86.2
0.8909	122.6	98.9	92.51	92.43
0.9561	143.3	104.5	97.65	97.64
1	175.2	157	142.7	142.5

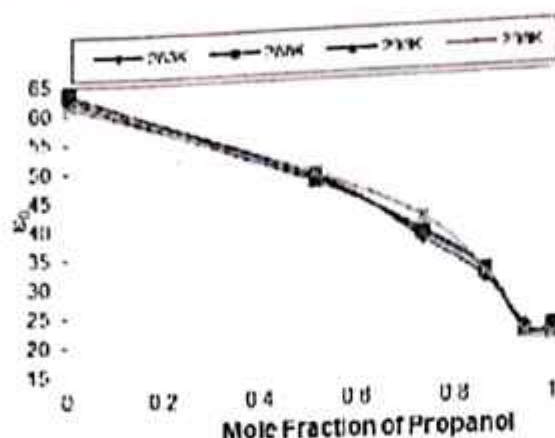


Fig. 1. Variation of static dielectric constant (ϵ_0) as a function of mole fraction of Propanol, at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

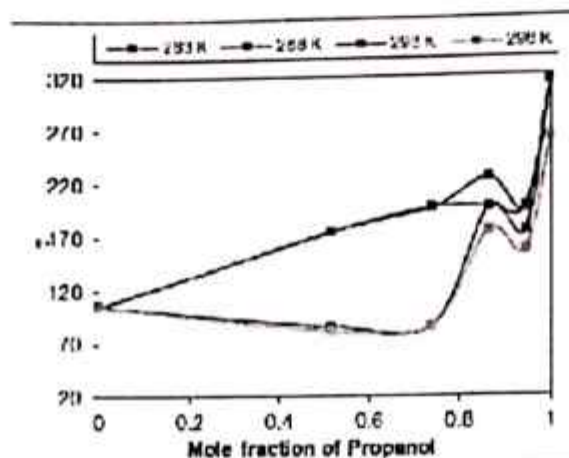


Fig. 2. Variation of relaxation time (τ) as a function of mole fraction of Propanol, at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

The static permittivity (ϵ_0) and relaxation time (τ) for the binary mixture obtained by fitting experimental data with the Debye equation at four different temperatures are shown in figs. 1 and 2 respectively. In this study, the variation in the static permittivity and relaxation time with atarax of propanol are shown. It shows linear variation in the solution with change in mole fraction. The mole fraction of propanol increases, static permittivity decreases. This suggests that the intermolecular association is taking place in this region.

B. Excess Permittivity and Excess Inverse Relaxation Time

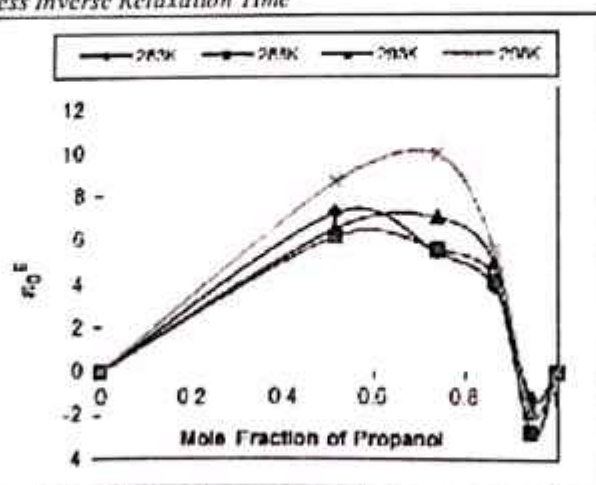


Fig. 3. Variation of excess permittivity (ϵ^E) as a function of mole fraction (x_2) of Propanol at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

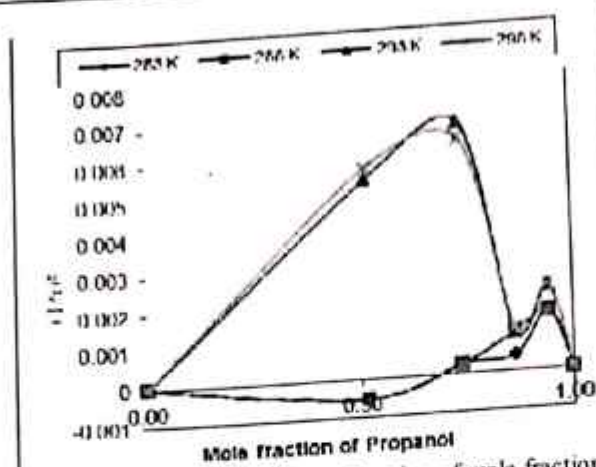


Fig.4. Variation of excess inverse relaxation time $(1/\tau)^E$, as a function of mole fraction (x_2) of Propanol at temperatures 283, 288, 293 and 298K.

The variation of excess permittivity (ϵ_0^E) and excess inverse relaxation time $(1/\tau)^E$ with the mole fraction of propanol with atarax at different temperature is shown in figs. 3 and 4. The excess permittivity, values are positive and decreasing for concentrations up to 60% and at 80% of propanol it shows negative at all temperature. This indicates parallel alignment of dipole in the system and formation of monomer, which increases total number of dipoles up to 60%. At 80% of propanol for all temperature studied, indicates that the molecules of mixture may form multimers structures in such a way that the effective dipoles get reduced. This is due to the opposite alignment (antiparallel) of the dipoles in the mixture.

The behavior in $(1/\tau)^E$ is quite different as can be seen from figure (4) the values of $(1/\tau)^E$ are positive except 20% at 283 and 288K.

Conclusion

The values of static permittivity (ϵ_0) decreases, with increasing concentration of propanol, it shows linear variation in dielectric constant. The values of relaxation time (τ) changes change in mole fraction of propanol. The excess permittivity (ϵ_0^E), values are positive for all concentrations of propanol in atarax at all temperature except at 80% of Propanol. This indicates parallel alignment of dipole in the system and formation of monomer up to 60%, which increases total number of dipoles and changes to multimer at 80% of propanol. The values of $(1/\tau)^E$ are positive, except 20% at 283 and 288K.

Acknowledgement

The authors wish to acknowledge the Department of Physics Dr.B.A.M.University Aurangabad and Department of Physics S.R.T.M.University Nanded.

References

- 1) <https://en.wikipedia.org/wiki/Atarax>
- 2) Peranantham S, Manigandan G, Tamolselvi V, Shanmugam K. International Journal of Medical Toxicology and Forensic Medicine 2015;5(2):98-101.
- 3) <https://en.wikipedia.org/wiki/1-Propanol>
- 4) P.B.Undre, S.N.Helanbe, S.B. Jagdale, P.W.Khirade and S.C. Mehrotra. Pramana J. Physics. 68. 851 (2007).
- 5) Manual T.D.R. Tektronix DSA8300.
- 6) C.E.Shannon, Proc. Inst. Radio Eng. 37, 10(1949).
- 7) H.A. Samulan. Proc. IRE, 39, 175 (1951).
- 8) S. Mashimo, S. Kuwabara, S. Yoghara, and K. Higasi, J. Chem. Phy. 90, 3292(1989).
- 9) P.Debye. Polar Molecules, Chemical Catalog. Co. New York. (1929).
- 10) P.R.Bevington. Data Reduction and Error Analysis for the Physical Sciences, McGraw Hill, New York(1969).
- 11) <http://shodhganga.inflibnet.ac.in/jspui/handle/10603/89385>

RNI-Title Code- MAHMUL03507

ISSN-2456-2025

QUARTERLY INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL FOR ALL SUBJECT

KESONA REPORT

Quarterly-Vol.-I

Issue-I

Rs.100/-

Special Issue on Role of ICT in Higher Education for Quality Improvement

Consultancy Services for
Capacity Building for National
Capital Region Planning Board

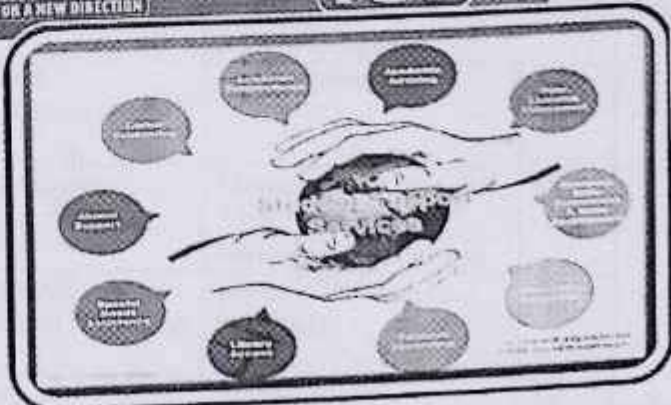


ADB



VTOS ICT for
Employment and
Further and
Higher Education

INNOVATE
CONNECT
TRANSFORM
ICT FOR A NEW DIRECTION



Editor-Dr. Deepa Bharatbhushan Kshirsagar
Mrs. K.S.K. College, Beed - 431 122.

		Abdul Aziz	
36	Impact of Information and Communication Technology (ICT) on Student Performance in Higher Education Policy	Madanrao M. Patil	126
37	Usage of Information and Communication Technology (ICT) as a change agent for Higher education in India	Shankar P. Phulwale	130
38	ICT Based Teaching Verses Traditional Teaching Methods	Panchshila N. Ghumbre	133
39	ICT for Quality of Higher Education	G.W. Shrimangale Mr. S.R. Raut	135
40	Importance of ICT in Higher Education	J. M. Bhandari R. G. Vidhate R. B. Kavade S. V. Kshirsagar K. M. Jadhav	139
41	Role of Information and Communication Technology (ICT) to Make Teaching Learning Innovative in Higher Education	N.P. Shete	142
42	Use of ICT in Higher Education for Life Science	Shelke A.N. Talekar S.M. S.V. Kshirsagar	145
43	Impact of psychological factors on performance of sports persons	Kale U.M.	148
44	Opportunities and Challenges for Using ICT in Higher Education	Tupe Sanjay K.	151
45	Evolution of ICT Use in Indian Banking Domain	N.P. Shete	154
46	Impact of ICT on Indian Education System	Dhammpal Ghumbre	159
47	ICT- A Modern Tool for Effective Teaching-Learning Process	Sangita Shinde, N. D. Chaudhari, B. R. Sharma, K. M. Jadhav	163
48	Role of ICTs in Pedagogy for Quality Teaching Learning	H.U. Uike	168
49	Role of Information and Communication Technology (ICT) in Higher Education for Quality Improvement	Sonone Jyoti D. Sabale Pooja M. Joshi Shital S.	173
50	कबड्डी खेळामधील नेतृत्वगुण विकासाच्या समस्या: मराठवाड्याच्या संदर्भात अभ्यास	भागचंद सानप	176
51	मराठवाडा प्रदेशातील खो-खो या सांघीक खेळाची गुणवत्ता: वर्तमान संदर्भात अभ्यास	राजेश क्षीरसागर	185

IMPACT OF ICT ON INDIAN EDUCATION SYSTEM**Mr. Dhammpal N. Ghumbre**

Assistant Professor

Kalikadevi College Shirur (Ka.) Dist. Beed

Introduction:-

Quality of education primarily depends on the efficiency & effectiveness of teaching learning process. The existing system of teacher education programme is conventional and unresponsive to the recent social, economical, Political and technological changes. Particularly the challenges posed by information and communication Technologies globalization and growing rate of knowledge obsolescence. Even now the night people are not entering the teaching profession.

Professionalism involves its own compulsion and pressure, it needs a change in attitudes and value system of the teachers. They have to earn social sanction from the community by improving the quality of their work.

Teachers are the torch bearers in creating social cohesion, national integration and a learning society. They not only disseminate knowledge but also create and generate new knowledge. They are responsible for acculturating the role of education. The greatest need of the 21st century in the context of education is enlightened and empowered teachers.

According to the critics, professional education of teachers is of short duration and of low standard as compared to the sophisticated professions. It is thought that commitment to the profession is lacking among most of the teachers and the teaching profession as a whole is not founded on specialization and mastery of education as a discipline.

Many enter teaching as the last resort having failed to secure chances in other Preferred fields. Teaching is a God given opportunity but most people who enter the Area. Do not think and act accordingly. This is really a pity and things have to change.

Corruption increasing political interference, criminalization, Erosion of control centers in the society, Absence of academic leadership are potent constraints emerging from external environment. But, there are internal constraints too, that stand in the way of qualitative improvement of teacher education, these are:-

- Existence of Teacher education departments under the control and in the campuses of affiliated colleges or universities.
- Teacher training college or department without its own practicing or model school.
- Poor quality of trainees who, by and large, do not have requisite entering behaviours, nor motivation to learn the art of teaching.
- Poor quality teacher educators who, by and large, do not possess relevant knowledge, attitudes and skills

Strategy for change:-

NPE 1986 stated, "The existing system of teacher education needs to be overhauled or revamped."

Quality of education primarily depends on the efficiency & effectiveness of teaching learning process. The existing system of teacher education programme is conventional and unresponsive to the recent social, economical, Political and technological changes. Particularly the challenges posed by information and communication Technologies globalization and growing rate of knowledge obsolescence. Even now the night people are not entering the teaching profession.

Professionalism involves its own compulsion and pressure, it needs a change in attitudes and value system of the teachers. They have to earn social sanction from the community by improving the quality of their work.

Introduction Electronic Resources

The ability to use library resources (print and non-print) effectively is increasingly becoming recognized as an integral part of undergraduate study and a great concern of library practitioners the world over. The emergence of electronic resources has drastically revamped the status of all the libraries and information centers across the world during the last decade. There has been a rapid urge of the user community to get more and more information online. The development of the information communication technologies (ICT), the rapid rise of electronic databases, and modern e-book technologies have altogether changed the entire scenario of informatics. The users' attitude to information is gradually shifting from the printed documents to electronic resources and thus, it has been their prerogative to know the details of the availability and organization of e-resources like online journals and databases, electronic theses and dissertations (ETDs), government publications, online newspapers, etc. in the information centers. Therefore, it is the time for the information professionals in India to study the different key dimensions of electronic resources and to successfully channel them into the inquisitive minds of users by identifying and addressing some of the issues relating to the use of e-resources. This article deals with different types of e-resources available, including freely available open access materials and their impact for the educational use.

Digital India

Digital India was launched by Prime Minister of India Narendra Modi on 1 July 2015 with an objective of connecting rural areas with high-speed Internet networks and improving digital literacy. The vision of Digital India programme is inclusive growth in areas of electronic services, products, manufacturing and job opportunities etc. and it is centered on three key areas – Digital Infrastructure as a Utility to Every Citizen, Governance & Services on Demand and Digital Empowerment of Citizens.

The Government of India entity Bharat Broadband Network Limited which executes the National Optical Fibre Network project will be the custodian of Digital India (DI) project. BBNL had ordered United Telecoms Limited to connect 250,000 villages through GPON to ensure FTTH based broadband. This will provide the first basic setup to achieve towards Digital India and is expected to be completed by 2017.

The government is planning to create 28,000 seats of BPOs in various states and set up at least one Common Service Centre in each of the gram panchayats in the state.

The 2016 Union budget of India announced 11 technology initiatives including the use data analytics to nab tax evaders, creating a substantial opportunity for IT companies to build out the systems that will be required. Digital Literacy mission will cover six crore rural households. It is planned to connect 550 farmer markets in the country through the use of technology.

connect rural areas with high-speed internet networks. Digital India has three core components. These include:

- The creation of digital infrastructure
- Delivering services digitally
- Digital literacy

Hands on Trainings

The e-resource orientation programs at colleges received overwhelming response and as an extension to the orientation programs we are receiving regular requests from most of the colleges for hands on training to the faculty members for effective utilization of e-resources in teaching and research.

Stages of e-Governance

It is evident that e-Governance is intrinsically linked with the development of computer technology, networking of computers and communication systems. In developing countries,

such technologies and systems became available with a perceptible time lag as compared to developed nations. However, in the case of India, with the liberalization of the economy from the early 1990s onwards, there has been a convergence in the availability of cutting edge technologies and opportunities in the field of e-Governance. Generally speaking, the Indian experience demonstrates that the onset of e-Governance proceeded through the following phases:

(a) *Computerisation*: In the first phase, with the availability of personal computers, a large number of Government offices got equipped with computers. The use of computers began with word processing, quickly followed by data processing.

(b) *Networking*: In this phase, some units of a few government organizations got connected through a hub leading to sharing of information and flow of data between different government entities.

(c) *On-line presence*: With increasing internet connectivity, a need was felt for maintaining a presence on the web. This resulted in maintenance of websites by government departments and other entities. Generally, these web-pages/ web-sites contained information about the organizational structure, contact details, reports and publications, objectives and vision statements of the respective government entities.

(d) *On-line interactivity*: A natural consequence of on-line presence was opening up of communication channels between government entities and the citizens, civil society organizations etc. The main aim at this stage was to minimize the scope of personal interface with government entities by providing downloadable Forms, Instructions, Acts, Rules etc. In some cases, this has already led to on-line submission of Forms. Most citizen-government transactions have the potential of being put on e-Governance mode.

Conclusion

Study shows the use of e-resources is very common among the teachers and research scholars and majority of the teachers and research scholar are dependent on e-resources to get the desired and relevant information. But practical use of e-resources is not up-to the worth in comparison to investments made in acquiring these resources; secondly infrastructure and training programs should also be revised as per requirements. It is observed that the availability of e-resources is almost sufficient for all the existing disciplines but the infrastructure to use these resources is not adequate and can hinder the ability to meet the requirements of users. **Digital India – the new Umbrella initiative** In a bid to quicken the pace of technical integration and boost the e-Governance implementation and acceptance in the country, the new Modi Government has put its weight behind the Digital India initiative.

Reference

1. Anup D. (2011). Emergence of open educationalresources (OER) in India and its impact on lifelonglearning. *Library Hi Tech News*, 28(5), 10 – 15.
2. Ghosh, S.B. & Das, A.K. (2007). Open access andinstitutional repositories: a developing countryperspective – a case study of India. *IFLA Journal*, 33(3),229-50.
3. Graham, S.R. (2003). Historians and electronic resources:a citation analysis. *JAH*, 3(3), 18-24.
4. Holland, M.P. & Powell, C. K. (1995). A longitudinalsurvey of information-seeking and use habits of someengineers. *College and Research Libraries*, 56, 7-15.
5. Kurilovas, E. (2006). Virtual Learning Environments:Benefits and Potentials to Support Social ConstructivistPedagogies. In Proceedings of the 2nd International
6. Conference "Informatics in Secondary Schools:Evolution and Perspectives". Vilnius, Lithuania, 7–11November 2006. Selected papers, TEV, 2006, p. 166–175.
7. Lubans, J. (1971). Nonuse of an academic library. *CollegeResearch Libraries*, 32, 362-7.

8. Tenopir, C., Hitchcock, B. & Pillow, S.A. (2003). Use and users of electronic library resources: an overview and analysis of recent research studies,
9. Booth, P., & Henderson-Begg, S. (2006) A comparison between Flash and Second Life programmes as aids in the learning of basic laboratory procedures.
10. GRIFFITHS, L. & JAMES, M. (2005) 'Campus-wide Implementation of SMS Text Services within a Blackboard VLE', in *Proceedings of ALT-C 2005 – Exploring the Frontiers of e-learning – Borders, Outposts and Migration*, Manchester, UK.
11. MARKETT, C. , ARNEDILLO SÁNCHEZ, I . , WEBER, S. & TANGNEY, B. (2006) 'Using Short
12. Message Service to Encourage Interactivity in the Classroom', *Computers & Education* 46(3): 280–93.
13. Riordan, B. & Traxler, J. (2005) 'The Use of Targeted Bulk SMS Texting to Enhance Student Support, Inclusion and Retention', in *Proceedings of the IEEE*
14. Perspective – a case study of India. *IFLA Journal*, 33(3) 229-50.
15. Jump up to: Here's what you need to know about the Digital India initiative Mumbai Daily News and Analysis **Jump up** ^ Thomas, K (27 September 2015), Modi effect: Silicon Valley giants commit to Digital India, Business Line The Hindu
16. "Digital India to propel economy to its best era: Oracle", Moneycontrol.com, 8 October 2015
17. "TIMES NOW and ET NOW announce 2ND edition of Digital India Summit & Awards; on 22 March", The Economic Times, 19 February 2016
18. "Digital India campaign: Panchkula comes out on top among all districts of Haryana", The Indian Express, 26 December 2015

Internet Viewed

19. <http://go.worldbank.org/M1JHE0Z280>
20. http://portal.unesco.org/ci/en/ev.phpURL_ID=4404&URL_DO=DO_TOPIC&URL_SECTION=201.html
21. http://arc.gov.in/11threp/arc_11threport_ch2.pdf
22. www.clir.org/pubs/reports/pub120/sec4-5.html.
23. www.clir.org/pubs/reports/pub120/sec4-5.html.